भारतीय साहित्य के निर्माता

वाल्मीकि

मूल

आई. पाण्डुरंग राव

मैथिली अनुवाद

अशोक कुमार ठाकुर

MT
891.202 092 V
245 R

MT
891.202
092
V245R

साहित्य अकादेमी

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

38249

अस्तर पर छपल मूर्ति कलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य,जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्याक' रहल छथि। हुनका लोकनिक नीचाँमे बैसल एक लिपिक बैसला छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्धक' रहल छथि। भारतमे लेखन-कलाक सम्भवत: सबसँ प्राचीन ओ चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुन कोण्डा, द्वोसर सदी ई.
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

वाल्मीकि

मूल

आई. पाण्डुरंग राव

मैथिली अनुवाद

अशोक कुमार ठाकुर

साहित्य अकादेमी

Valmiki : Maithili translation by Ashok Kumar Thakur of I. Panduranga Rao's monograph on the ancient poet, Sahitya Akademi, New Delhi (2004), Rs. 25/-

Library IIAS, Shimla
MT 891.202 092 V 245 R
00117577

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 2004 ई.

MT
891.202 092
V245 R

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय :
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001
विक्रय विभाग : स्वाती, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली 110001

क्षेत्रीय कार्यालय :
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई 400 014
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथा तल, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता 700 053
सीआईटी कैम्पस, टी.टी.टी.आई. पोस्ट, तारामणि, चेन्नई 600 018
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मार्ग, बंगलौर 560 002

ISBN 81-260-1889-5

Indian Institute of Advanced Study
117577
16/12/04
SHIMLA

मूल्य : पच्चीस टाका

शब्द-संयोजक : सविता प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली

मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली 110032

विषय-सूची

		पृष्ठसंख्या
1.	महाकाव्य-दर्शन	7
2.	वाल्मीकिक मानव	14
3.	श्रीस्वरूपिणी मैथिली	35
4.	त्रिमूर्त्ति	56
5.	मानवीय स्पर्श	79
6.	कलात्मक कर-स्पर्श	90
7.	संदेश	103
	परिशिष्ट	108

1

महाकाव्य-दर्शन

आदिकविक रूपमे विश्व-विख्यात आ विश्ववंद्य वाल्मीकि भारतीय साहित्यक, विशेष रूपसँ संस्कृत साहित्यक पहिल कवि रहथि जे महाकाव्यक विराट चेतना आ भावनाकेँ आत्मसात् कयनिहार एकगोट एहन सुश्लोक अभिव्यंजनाक आविष्कार कयने रहथि जे जीव मात्रक प्रति करुणा आ मंगलभावसँ सराबोर प्रबुद्ध चेतनाक भावुक भाव केँ तरंगस्वर दऽ सकय। जीव आ जगतक बीच तादात्म्यरूप स्थापित कयनिहार एही मनोदशामे हुनक कालजयी काव्य-कृति 'रामायण' हुनक अंतस् सँ प्रस्फुटित भेल। ताहिसँ पूर्व देवर्षि नारदक मुँहसँ एकटा आदर्श मनुक्खक लक्षणक वर्णन सुनलाक बाद ओकरे आधारपर एकटा महाकाव्य प्रणयन करक हेतु ओ अपना मनमे पर्याप्त भूमिका बना लेने रहथि। वाल्मीकि स्वयं महान् ऋषि छलाह आ अपन दीर्घकालीन तपस्संपन्नताक बलेँ ओ लोकानुभव प्राप्त कयने रहथि, देवर्षिक आशीवदिँ समृद्ध बनबऽ चाहैत रहथि, जाहिसँ हुनक गम्भीर साधना सही परिप्रेक्ष्य प्राप्त कऽ सकय। जखन नारद हुनका बुझौलथिन जे समस्त मानवताक कल्याण करक हेतु आवश्यक सभ गुणसँ सम्पन्न एकटा आदर्श मनुक्ख ताही समयमे हुनके लोकनिक बीच विद्यमान छथि, तखन वाल्मीकि अपन स्वप्नक साकार पुरुषक गौरव-गाथाक गुणगान करक संकल्प कऽ लेलनि।

गुरुदेवक अनुग्रहसँ अपन अंतस् मे संचरित उदात्त भावलहरीपर मनन करैत वाल्मीकि अपन शिष्य भरद्वाजक संग तमसा नदीक तटपर टहलऽ लेल गेलाह। नदीक जल हुनक ध्यान आकृष्ट कयलक। नदीक प्रसन्न आ प्रशांत लहरिकेँ देखलापर महर्षिकेँ ओहि महामानवक परिपक्वता आ शालीनताकेँ प्रकट करऽबला गुण स्मरण होअऽ लगलनि, एहन सन बुझि पड़लनि जेना एन-मेन एहने सज्जनक मन जकाँ नदीक जल बहि रहल अछि। हुनके प्रतिच्छवि नदीक जलमे देखबामे अयलनि।

मुदा दोसरे क्षण हुनका एकटा हृदय-विदारक दृश्य सेहो देखबामे अयलनि। एकटा निठुर व्याध चिड़ैक जोड़ीमेसँ एकटाकेँ मारिकऽ नीचाँ सखा देने छल।

बिछुड़ल चिड़ै बिलखि रहल छल। मुनिकेँ अपन आँखिपर विश्वास नहि भऽ रहल छलनि। ओ कल्पनो ने कऽ सकैत रहथि जे एक दिस जतऽ सदय हृदय जकाँ प्रवाहित स्वच्छ जलधारा रहैक ओत्तहि दोसर दिस ओहन निर्दय निषाद सेहो भऽ सकैछ जे जीवनक प्राकृतिक आनन्दमे लीन सुध-बुध क्रौंच-मिथुनमेसँ एकटा केँ अकस्मात् आ अकारण मारि देलक आ.ताहिसँ ओकरो कोनो लाभ नहि भेटऽवला छलैक। तपस्वीक हृदय तपिकऽ छंद बनि गेल आ हुनक ओ शोकाकुल वाणी काव्य-जगतक हेतु युग-युग धरि एकटा संजीवनी शक्तिप्रदायिनी प्रभातीक स्वरलहरी बनि गेल। उद्गारक स्वर छल—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकवधीः काममोहितम्।।

(नहि, नहि निषाद, तोरा अनंतकाल धरि जीवनमे कोनो प्रतिष्ठा नहि भेटतौक, किएक तँ प्रणय-लीलामे तल्लीन क्रौंच पक्षीक जोड़ीमेसँ एकटाकेँ मारिकऽ खसा देलैँ।)

ऋषि कवि भऽ गेलाह। एहि सुन्दर छन्दक सुस्वर उच्चारण करैत काल तपस्वीकेँ अपनो आश्चर्य भेलनि। आश्चर्य! हुनक प्रखर भावनाकेँ व्यक्त करक हेतु ओतबे प्रशस्त पदयोजना स्वतः प्रस्तुत भऽ गेल, संगहि हुनक मन व्याकुल सेहो भऽ गेलनि जे ओ किएक मनक क्षणिक आवेगमे आबिकऽ अपन क्रोधकेँ काबूमे नहि राखि सकलाह। आत्मनिरीक्षणक क्षणमे हुनक अंतस् आश्चर्य प्रकट करैत अपनहिसँ पूछि रहल रहनि—

किमिदं व्याहृतं मया

(हम ई की भाखि देल?)

मुदा ओ अपना मनकेँ बुझा लेलनि जे स्वतः निःस्तृत ई अंतर्वाणी कोनो दैवी संकल्पनाक सूत्रपात कयनिहार अछि। हुनक कारयित्री प्रतिभाकेँ एहिसँ बल भेटलनि आ हुनका प्रेरणा भेटलनि जे अनायास प्राप्त एहि सुयोगक सदुपयोग हुनका करक चाहियनि। जहियासँ हुनका मनमे रामक गुण-वैभव आ हुनक गतिशील आ समन्वयशील व्यक्तित्व प्रतिष्ठित भेल, तहिएसँ एहि इतिवृत्तिकेँ लऽकऽ एकटा महाकाव्यक रचना करक जे प्रबल प्रेरणा भीतरे-भीतर काज कऽ रहल छल ओकरो साकार बनयबाक आब समय आबि गेल छल। हुनका एहि बातक आश्वासनो प्राप्त भेलनि अछि जे वाग्देवी सरस्वती एहि कार्यमे हुनका संग रहि आवश्यक पथप्रदर्शन करतीह, जाहिसँ सम्पूर्ण घटनाक्रमकेँ अपना अंतस्

मे परिकल्पित कऽ ओकरा महाकाव्यक गरिमा आ लोकमर्यादाक अनुरूप सहज आ सरल भाषामे प्रस्तुत कऽ सकथि। एहि तरहेँ अपन मानस पुरुषकेँ महाकाव्यक नायक बनयबाक हुनक महान् संकल्प सक्रिय होमऽ लागल। भारतीय साहित्यक आदिकाव्य रामायण, जे काल द्वारा निरंतर समादृत होइत रहल अछि, जनजीवनक इतिहासक एकटा एहन चिरस्मरणीय क्षणमे अवतरित भेल जखन महाकविक मेधा मानवताक निर्मिति आ अहिंसाक अनुपालन एहि दुनू आधारभूत मानवमूल्यकेँ मानवकल्याणकेँ ध्यानमे राखिकऽ उजागर करऽमे निमज्जित भेल।

दुःखक बात थिक जे विश्वविख्यात एहि प्रशस्त कविक जीवनीक संबंधमे साहित्य जगतकेँ कोनो विशेष जानकारी नहि छैक। कवि स्वयं अपना विषयमे अधिक नहि कहलनि अछि आ ने इतिहासे हुनक जीवनी लिखलक, एतऽ धरि जे हुनक जीवन कालक संबंधमे सेहो कोनो प्रामाणिक विवरण नहि देल गेल। काव्यक कथाक्रममे हुनक नाम मात्र दू बेर अबैत अछि आ प्रत्येक प्रसंगमे कवि अपन शालीनताक कारणे अत्यन्त कम वजैत छथि। जखन राम अपन पत्नी आ भाइक संग चित्रकूट जाइत काल मार्गमे ऋषिक आशीर्वाद प्राप्त करऽ हुनका आश्रममे जाइत छथि तँ वाल्मीकि सहज वात्सल्य आ प्रेमक संग हुनका लोकनिकेँ स्वागत करैत आ अत्यन्त आदर आ सम्मानक संग मात्र एक्के टा शब्द कहैत छथि—

आस्यताम् (बैसल जाय)

जखन राम हुनका आश्रममे पलभरि बिलमि जाइत छथि तँ ओ अपनाकेँ धन्य मानैत छथि।

एकटा दोसर प्रसंग, जखन वाल्मीकि रामायणक पात्रक रूपमे देखल जाइत छथि, उत्तरकांडमे अबैत अछि। लव आ कुशक मधुर कंठमे संपूर्ण रामायणक सस्वर गायन सुनलाक बाद राम वाल्मीकिकेँ अपन राजमहलमे आमंत्रित करैत छथि आ हुनकासँ अनुरोध करैत छथि जे ओ सीताकेँ अपना संग लऽ आबथि जाहिसँ ओ वरिष्ठ नागरिक आ महान् ऋषि लोकनिक बीच अपन पवित्रताकेँ प्रमाणित कऽ सकथि। वाल्मीकि एहि आमंत्रणकेँ स्वीकार करैत एकटा महत्त्वपूर्ण बात कहैत छथि जे अपन पतिदेवक अनन्य आराधिका होयबाक कारणेँ रामक सभ अपेक्षाकेँ ओ सहर्ष स्वीकार करतीह। अन्ततः राजभवनक पूजामण्डपमे वाल्मीकि अपना विषयमे जे कहैत छथि ओ हमरा लोकनिकेँ महर्षिक महत्ता बुझक हेतु अत्यन्त उपादेय सिद्ध होइत अछि। ओ कहैत छथि—

प्रचेतसोऽहं दसमः पुत्रो राघवनंदन।
न स्मराम्यनृतं वाक्यमिमौ तु तव पुत्रकौ।।
बहुवर्ष सहस्राणि तपश्चर्या मया कृता।
नोपाश्नीयां फलं तस्या दुष्टेयं यदि मैथिली।।
मनसा कर्मणा वाचा भूतपूर्वं न किल्विषम्।
तस्याहं फलमश्नामि अपापा यदि मैथिली।।

(हम प्रचेतसक दसम पुत्र छी, आ अहाँ रघुवंशक आनंदनंदन थिकहुँ। हमरा मुँहसँ कहियो कोनो असत्य वचन बहरायल हो, एहन हमरा मन नहि पड़ैत अछि। हम कहैत छी जे ई दुनू बालक अहाँक पुत्र छथि। हम हजारो वर्ष धरि गहन तपस्या कयल अछि। जौं मैथिलीमे कोनो दोष होनि तँ हम अपन सम्पूर्ण तपस्याक फलक त्याग कऽ देब। मन, कर्म अथवा वचनसँ हम आइ धरि कोनो पाप नहि कयलहुँ अछि, एहि विशुद्ध आचरणक फल हम तखनहि स्वीकार कऽ सकैत छी जौं मैथिली पापरहित होथि।)

एहि वाक्य सभसँ ज्ञात होइत अछि जे वाल्मीकि मुनिक तपस्या आ साधना कते गंभीर छलनि? आजीवन अपन अध्ययन आ मनन केर संबल बना ओ एकटा एहन आदर्श नर-नारीक चरित्रक प्रणयन कयलनि अछि जे मानव मात्रक हेतु अवगाहन, आकलन आ अनुसरणक आधार बनि गेल अछि। महाकविक ई उद्घोष एहि बातकेँ सेहो प्रमाणित करैत अछि जे राम तथा अन्य ऋषि-मुनि कविवरक वाक्यकेँ वेदवाक्य जकाँ स्वतः प्रमाणित मानिकऽ चलैत छथि। वास्तवमे हुनक तपस्येक ई आपात आ अमूल्य फल छल जे वैदिक स्वर हुनक लेखनीमे काव्यात्मक अभिव्यंजनाक रूप धारण कऽ रामायण सन अमर कृतिक जन्म देलक। वाल्मीकिक व्यक्तित्वक ई छवि हमरा लोकनिकेँ हुनके शब्दमे भेटैत अछि जे विनीत आ विन्यस्त स्वरमे उदात्तचेता रामकेँ संबोधित छनि, जनिकर 'अयने' रामायणक प्रणयनक प्रमुख प्रेरणा अछि।

मुदा परवर्ती रामकाव्य सभमे वाल्मीकिक जीवन-चरित्रक संबंधमे किछु भिन्न प्रकारक आख्यान भेटैत अछि। पुराणमे वाल्मीकिक प्रारंभिक जीवनक एकटा एहन विरूपित चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि जे रोचक आ आकर्षक होइतो तपस्याक मूर्त्त रूप वाल्मीकिकेँ सही ढंगे निरूपित नहि करैत अछि। ओ आराधनाक साकार रूप रहथि आ हुनक निष्ठा आ मनस्विताक एकमात्र लक्ष्य मानव छल, एकटा एहन मानव जे मात्र अपने हेतु नहि अपितु दोसराक हेतु जीवैत अछि आ अपनाकेँ

एहि विराट् विश्वक सामाजिक संस्कृतिक संग एकाकार कऽ लैत अछि। महाकविक जीवन-दर्शन, वैज्ञानिक चिंतन पद्धति, परिष्कृत सौन्दर्यबोध आ परिनिष्ठित काव्य कौशलसँ सम्पन्न एहि देवतुल्य मनीषीक संबंधमे ई कहब जे ओ अपन प्रारंभिक जीवनमे दस्यु रहथि आ बादमे सप्तर्षि लोकनि हुनका तपस्वीक रूपमे बदलि देलनि, सुनऽमे भलेँ उत्तेजक प्रतीत होइत अछि, मुदा एकर समर्थनमे कोनो ऐतिहासिक प्रमाण नहि भेटैत अछि। मुदा पद्मपुराण, स्कंदपुराण आ अध्यात्म रामायण सहित कते पुराण सभ एहि वृत्तांतकेँ प्रचलित कयलक आ आइ सामान्य जन-समाजमे वाल्मीकिक इएह रूप प्रतिष्ठित भऽ गेल अछि।

वाल्मीकि शब्दक वाच्यार्थ होइत अछि 'दिबड़ाक भीड़' जे ध्यान, समाधि आ तपस्याक द्योतक होइत अछि। कवि वाल्मीकि एहि तपस्याक परिणत रूप छथि। हुनक प्रबल प्रशंसक कालिदास अपन कृति 'मेघ संदेश'मे हुनक एहि विशिष्टता दिसि मार्मिक संकेत करैत यक्षसँ अपन संदेशवाहक मेघकेँ कहबैत छथि।

वाल्मीकाग्रात् प्रभवति धनुः खण्डमाखण्डलस्य।

(दिबड़ाक भीड़क अग्रभागसँ उठिकऽ पसरऽबला ओहि धनुषखंड दिसि अपन दृष्टि अवश्य देब जे आखण्डल अर्थात् इन्द्रक नाओळ अछि।)

स्पष्ट अछि, ई इन्द्रधनुष वाल्मीकिक काव्यदृष्टि आ महाकाव्य वैभवक आलंकारिक रूप थिक। इन्द्रधनुषक सतरंगी शोभामे कालिदास वाल्मीकि रामायणक सातो कांडक छविए देखलनि अछि।

पुराण सभक अपन-अपन पक्ष छैक आ ओकर समर्थन करक अपन ढंग छैक। राम नामक महिमाक वर्णन करब ओकर प्रमुख उद्देश्य छैक, जकर जप कयलासँ डाकू सेहो संत बनि सकैत अछि। ई सही तँ भऽ सकैछ, मुदा ताहूसँ महत्त्वपूर्ण बात अछि वाल्मीकिकेँ तपस्याक मूर्त्त रूपमे चिन्हब। वाल्मीकि रामायणक प्रथम श्लोके हुनका तपस्वीक रूपमे प्रतिपादित करैत अछि। तपस्या हुनक प्रधान लक्षण छनि जखन कि देवर्षि नारद अपन निरंतर लोकयात्रा आ नैष्ठिक स्वाध्यायक माध्यमे लोकज्ञताक अतिरिक्त गुण सेहो अर्जित कयने छथि।

मानव स्वभावक एही गहन अध्ययनकेँ एतऽ स्वाध्यायक संज्ञा देल गेल अछि आ एहीमे नारदकेँ वाणीक मर्मज्ञमे वरिष्ठ आ मौन साधनामे श्रेष्ठ सिद्ध कयल गेल अछि। तकरे बलपर ओ ओहि 'नर'केँ चिन्हि सकलाह जकर अभियान मानवताकेँ मंगलमय आ महिमान्वित बना सकैत अछि।

किछु गोटेक कहब छनि जे वाल्मीकि नामसँ दू-तीन व्यक्ति प्रचलित छथि।

एहिमेसँ के आदिकवि वाल्मीकि आ के आजुक 'रामायण'क रूपमे लोकप्रिय कृतिक प्रणेता रहथि ई औखन निश्चित नहि भेल अछि। मुदा सामान्य पाठकक हेतु एतबे बुझब पर्याप्त छैक जे वाल्मीकिक कृतिक रूपमे वर्त्तमानमे जे रामायण अछि ओएह आदिकवि वाल्मीकिक आदिकाव्य रामायण थिक, कारण जनसामान्यक लेल इएह काव्य आनंद आ आलोकक अक्षय स्रोतक काज करैत रहल अछि। सुधी जनकेँ एहीमे विवेकक वाणी सुनाइ पड़ैत छनि। समाजक हेतु इएह नीति-संहिता बनि मार्गदर्शन करैत रहल अछि, रचनाकर्मी आ विद्वान् लोकनिक हेतु ई काव्य साधनाक मेरुदंड प्रस्तुत करैत रहल अछि तथा साधक आ द्रष्टा लोकनिक हेतु ई ज्ञानक प्रकाश-पुंज बनल रहल अछि।

वाल्मीकिक जीवन-काल आ रामायणक रचना-कालक संबंधमे विभिन्न मत अछि। गत सय वर्षसँ देश-विदेशक विद्वान् लोकनिक ध्यान वाल्मीकिक काल-निर्धारण पर निरंतर आकृष्ट होइत रहल छनि आ एहिपर गंभीर चिंतन सेहो भेल अछि। डॉ. एच. जाकोवीक मत छनि जे वाल्मीकिक समय भगवान बुद्धसँ पूर्वक अछि आ एकरा ओ ईसापूर्व आठम शताब्दीसँ पहिने राखऽ चाहैत छथि। डब्ल्यू. स्केगेल एकरा ईसापूर्व एगारहम शताब्दी धरि लऽ जाइत छथि। एकर विपरीत ए. बैवर आ जी.टी. व्हीलर हिनका ईसाक पश्चात् मानैत छथि। भारतक पुरातत्त्व विभाग वाल्मीकि रामायणमे उल्लिखित अयोध्या, नंदिग्राम तथा अन्य स्थानक एम्हर जे उत्खनन-कार्य करौलक अछि ताहिसँ पता चलैत अछि जे ई सभ स्थान एक दोसरासँ मेल खाइत अछि आ एकर समय ईसापूर्व सातम शताब्दी थिक। लोकमान्य तिलक तथा अन्य भारतीय विद्वान् वाल्मीकिकेँ पश्चात्य विद्वान्लोकनिक कहल समयसँ बहुत पूर्वक मानैत छथि। वाल्मीकिक प्रामाणिक विद्वान् जी.एस. अतलेकर (1895-1987) एहि संबंधमे विद्वान् लोकनिक द्वारा प्रमाणीकृत सभ विचारक ध्यानपूर्वक अध्ययन कयलाक पश्चात् विश्वासक संग अपन स्पष्ट शब्दमे निष्कर्ष घोषित करैत कहैत छथि—वाल्मीकिक प्रामाणिक 'रामायण'क रचनाकाल ईसासँ पूर्व प्रथम सहस्राब्दीक बादक नहि भऽ सकैत अछि।

वाल्मीकिक समय जे हो, वास्तविकता ई अछि जे ओ अपन कालजयी कृति रामायणक रचनाक माध्यमे कालक सभ सीमाकेँ टपि गेल छथि। ईसासँ पूर्व पहिल शताब्दीक अश्वघोष अपन कृति बुद्धचरितमे वाल्मीकिक प्रथम काव्याभिव्यंजनाक प्रशंसात्मक उल्लेख करैत लिखैत छथि :—

वाल्मीकिरादौ च ससर्ज पद्यं जग्रंथ यन्न च्यवनोमहर्षिः।

एहिसँ पता चलैत अछि जे वाल्मीकि ने मात्र इसवी सनसँ पूर्वक छलाह अपितु हुनक प्रथम श्लोक 'मा निषाद्' परवर्ती कविगणमे सर्वाधिक लोकप्रियता अर्जित कऽ लेलक आ इहो स्पष्ट होइत अछि जे अन्य ऋषि लोकनि सेहो एहि प्रकारक अनुभूतिकेँ महाकाव्योचित अभिव्यक्ति नहि दऽ सकलाह। संभवतः एहि ऐतिहासिक घटनाक हेतु काल-देवता हुनके चयन कऽ लेने रहथिन आ हुनका एकरा हेतु स्वयं सृष्टिकर्त्ताक ई आशीर्वाद भेटलनि जे सत्य आ कर्मक गवेषणाक हेतु समर्पित रामक अयन (रामायण) केर ई कथा ता धरि संसारमे संचरित रहत जा धरि पहाड़मे स्थिरता आ नदीमे गतिशीलता बनल रहत, जाहिसँ ई वसुंधरा जीवाक आ जीवनक आनंद लेबऽयोग्य हो।

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद्रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।

2

वाल्मीकिक मानव

वाल्मीकिक आर्षदृष्टि जाहि मनुष्यक परिकल्पना कयने अछि ताहिमे आदर्श मानवता आ अंतरंग दिव्यताक प्रसन्न आ दुर्लभ संयोग दृष्टिगोचर होइत अछि। रामकेँ भगवान अथवा अवतारक रूपमे निरूपित करब हुनक आशय नहि छल। तत्त्वतः ओ एक एहन आदर्श मानवक खोजमे रहथि जे मर्यादाक मानक, श्रेष्ठताक प्रतिदर्श तथा सत्य आ धर्मक साकार रूप होअय। वाल्मीकि जाहि मानवक रूपकल्पनामे लागल रहथि, एनमेन ओहने आदर्श मानव अथवा 'नर'केर उदाहरण देवर्षि नारद प्रस्तुत करैत छथि। एहीमे नर वा मानव शब्द रेखांकित अछि। ओ नर मात्र मानव अछि आ सही अर्थमे मानव अछि।

वाल्मीकि अपन जिज्ञासा वा परिपृच्छामे सभसँ पहिल जाहि गुणक उल्लेख करैत छथि ओ अछि गुणवान्। एकर शाब्दिक अर्थ होइत अछि—नीक गुणसँ संपन्न। मुदा शब्दक व्युत्पत्तिक दृष्टिसँ देखल जाय तँ एकर अर्थ होइत अछि—जे अपनाकेँ गुणित करबामे अथवा अपने धरि सीमित नहि रहि अनेक वा संभव हो तँ सभक संग जोड़बाक स्वभाव, दोसर शब्दमे बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय जीवन-यापन करक लोकहितकारी प्रवृत्तिसँ संपन्न होथि।

दुनू मनीषी जाहि महामानवकेँ जानक आ चिन्हक सफल प्रयास कयलनि अछि, ओएह इक्ष्वाकुवंशक शिरोरत्न राम रहथि जनिक शारीरिक सौष्ठव, बौद्धिक चिद्विलास आ विश्वक कण-कणमे दिव्यत्वकेँ चिन्हक आध्यात्मिक चेतनाक मंजुल सामंजस्य छनि। अजेय पराक्रम, परादर्शी पर्यवेक्षण, ज्ञानक प्रमेय तथा अप्रमेय सभ शाखापर सम्पूर्ण अधिकार, संतुलित मनोवृत्ति, जीव मात्रपर दया, प्रतिपक्षीक प्रति सेहो सहिष्णुता, लोकमंगलक साधनाक हेतु अपन सुख-सुविधाक परवाहि बिनु कएने कोनो चुनौतीकेँ स्वीकार करक लेल तत्पर रहब आ गुरुजनक प्रति आदर ओ सत्कारक भावना किछु एहन गुण छैक जकरा सभकेँ नारद राममे देखलनि अछि।

दुनू ऋषिक आर्षदृष्टिक प्रमाण रामायणक नामकरणमे प्रकट होइत अछि।

रामक अयन रामायण थिक। रामायण मात्र रामक कथा वा हुनक जीवन-चरित नहि थिक। राम कोना चलैत छथि, कोना बजैत छथि, हुनक क्रिया-प्रतिक्रिया कोना होइत छनि, अपन सर-संबंधी, साधु-संत, मित्र आ शत्रुक प्रति हुनक व्यवहार केहन होइत छनि, पार्थिव, अपार्थिव, वाह्य-अभ्यंतर, दिव्य आ भव्य आदिकेँ ओ जाहि दृष्टिसँ देखैत छथि—ओहीसभक जीवंत चित्र रामायणमे भेटैत अछि। हुनक अयन मानव-मूल्यक गवेषणाक हेतु संपन्न अभियान थिक। ई एकटा एहन मानवता छैक जकरा देखि देवता सेहो विस्मित भऽ विचारऽ लगैत छथि जे मानव-हृदय केहन सुन्दर कलाकृति छैक! हुनका अपन मानवतापर गर्व होइत छनि आ मानवक रूपेमे अपन परिचिति बनौने रहैत छथि। सीताक अग्निपरीक्षाक तुरत बाद, राम अपनाकेँ दशरथनंदन राम आ अन्य कोनो मनुक्खे जकाँ सामान्य मनुक्ख घोषित करैत छथि। हुनक ई सहज सात्विक विनम्रता हुनका परिपूर्ण मानव बना दैत अछि।

वाल्मीकि अपन महाकाव्यमे अपन काव्य-नायक रामकेँ संसारमे सर्वश्रेष्ठ गुण सत्यक हेतु सर्वात्मना समर्पित सत्यसंघ राजा दशरथक वरद पुत्रक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। ध्यान देबाक बात अछि जे जाहि सर्गमे वाल्मीकि अपन नायकक शुभोदयक वर्णन करैत छथि, ओही सर्गमे ओ विश्वामित्रक प्रवेश सेहो करबैत छथि। ई एहि बातकेँ देखयबाक लेल कहल गेल अछि जे रामक जन्म मात्र माता–पिता आ अयोध्याक नागरिकक मनोरंजनक हेतु नहि भेलनि अछि, अपितु विशाल जन-समुदायकेँ अपना संग लऽ चलक आ ओकर दुःख-दर्दकेँ मेटाकऽ मानव मात्रक सेवा करबाक हेतु भेल छलनि। अपन आध्यात्मिक अंतश्चेतनाक बलपर व्यक्तिक वैयक्तिक विशिष्टताकेँ चिन्हबामे प्रवीण विश्वामित्र मारीच आ सुबाहु नामक राक्षससँ अपन यज्ञक रक्षा करक हेतु रामकेँ अपना संग लऽ जेबाक हेतु आयल छथि। मुदा ई बात जखन ओ राजा दशरथकेँ कहैत छथि तँ राजा अपन पुत्र-प्रेमक कारण अपन प्राणोसँ अधिक प्रिय रामकेँ एहि कठिन दायित्वक निर्वाह हेतु पठबऽ नहि चाहैत छथि, आ कहैत छथि हमर बेटा सोड़हो बरखक नहि अछि आ एते टा काज ओ नहि कऽ सकत। ई सुनि विश्वामित्र हुनका बुझबैत छथिन जे हुनक बेटा राम वास्तवमे महात्मा छथि आ सत्यनिष्ठा हुनक वास्तविक पराक्रम छनि। एहि संबंधमे राजपुरोहित वशिष्ठसँ सेहो परामर्श करक सुझाव दैत मुनिपुंगव कहैत छथि जे तपस्यामे निष्णात् वशिष्ठो जनैत छथि जे राम सत्व-संपन्न आ कारण-जन्मा पुरुष छथि जे देवताक अभीष्ट कार्यकेँ सम्पन्न करक हेतु जन्मल छथि। एहिपर वशिष्ठ राजाकेँ बुझबैत छथि जे विश्वामित्र अपना

हेतु कोनो सहायता माँगऽ नहि आयल छथि, अपितु हुनका, हुनकर पुत्रकेँ आ हुनका माध्यमे सौंसे संसारकेँ लाभ पहुँचाबऽ आयल छथि। वशिष्ठक ई बात सुनितहि राजा आश्वस्त भऽ विश्वामित्रक प्रस्तावकेँ स्वीकार करैत छथि। एत्तहिसँ इक्ष्वाकुवंशक कर्मनिष्ठ आ धर्मनिष्ठ राजकुमार रामक वास्तविक 'अयन'क आरंभ होइत अछि। रामक संग हुनक अनुज लक्ष्मणो जाइत छथि, किएक तँ निरंतर दुनू गोटा एक संग रहैत छथि। रामक बिना लक्ष्मण साँस नहि लऽ सकैत छथि आ लक्ष्मणक बिना रामकेँ निन्न तक नहि होइत छनि।

लक्ष्मणो लक्ष्मिसंपन्नो बहिः प्राण इवापरः।
न च तेन विना निद्रां लभते पुरुषोत्तमः।।

दुनू राजकुमार धनुर्विद्या ओ अस्त्र-विद्यामे पहिनेसँ निष्णात् छथि। तँहि नियत कार्यक निर्वाह करक अपन क्षमतापर हुनका लोकनिकेँ पूर्ण विश्वास छनि आ विश्वामित्र सन अस्त्रविद् आ तत्ववेत्ताक सान्निध्य आ मार्गदर्शनमे ओलोकनि आओरो अधिक आनंदक अनुभव करैत रहथि। अयोध्या नगरीक सीमा टपिते विश्वामित्र रामकेँ अपना लग बैसाय, वला आ अतिबला नामक दू टा विद्यामे दीक्षित कऽ दैत छथिन जकर प्रभावसँ हुनका दुनूकेँ पूर्ण रूपसँ अनुरक्षा आ प्रतिरक्षा भेटैत छनि। एकर बाद ताटका नामक राक्षसीक वध-कार्यमे रामकेँ नियोजित कयल जाइत अछि।

प्रारंभमे स्त्रीक वध करऽमे संकोच होवाक कारणे कने विलंब अवश्य होइत छनि, परन्तु कार्य-निष्पादनक औचित्यक संबंधमे समाधान कऽ लेलाक बाद मुनिक आदेशक पालन किछुए कालमे संपन्न भऽ जाइत अछि। अपन शिष्यक संभाव्य क्षमतापर प्रसन्न भऽ विश्वामित्र रामकेँ किछु अधिक शक्तिशाली अस्त्र सभसँ संपन्न बना दैत छथि। एहि तरहेँ यज्ञक रक्षा करक लेल पूर्ण रूपसँ क्षम दुनू राजकुमार छओ राति आश्रममे जागरण करैत छथि। राम एहि बातपर विशेष ध्यान दैत छथि जे आदंककारी राक्षस सभकेँ न्यायसम्मत आ संतुलित दण्ड देल जाय। सुबाहुक प्राण हरण कयल जाइत छैक आ मारीचकेँ जान बचाकऽ दूर समुद्रमे फेकि देल जाइत अछि। एहि तरहेँ राम अपन दायित्वक पालन अद्भुत रूपसँ संपन्न करैत छथि।

विश्वामित्र रामकेँ मात्र दस दिनक हेतु अपना संग अनने रहथिन आ से अवधि आब समाप्त भऽ गेल अछि। परन्तु विश्वामित्रक तपोवन 'सिद्धाश्रम'क निवासी लोकनि एकटा प्रस्ताव रखैत छथि जे दुनू राजकुमार मिथिला जाकऽ ओतऽ राजा जनक द्वारा संपन्न भऽ रहल एकटा विशेष यज्ञ सेहो देखथि। अपन पुत्रीक

हेतु योग्य वर प्राप्त करक हेतु राजा जनक ई यज्ञ कऽ रहल रहथि। कन्यासँ पाणिग्रहण करक हेतु भगवान शिव द्वारा प्रदत्त एकटा धनुप तोड़क क्षमता आवश्यक छैक। एहि प्रस्तावसँ राजकुमारक प्रवासक अवधि बढ़ि जाइत अछि। रोचक वात ई अछि जे राजकुमारकेँ मिथिला लऽ चलक प्रस्ताव आश्रमवासी लोकनिक दिससँ भेटल अछि। विश्वामित्र एहिमे अपना दिससँ किछु नहि कहलनि। मात्र मौन स्वीकृतिमे मूड़ी डोलौलनि। एहूसँ आश्चर्यक वात ई अछि जे दुनू राजकुमार मात्र गुरुजनक संकेतपर यात्रा करक हेतु तैयार भऽ जाइत छथि। स्वतःप्राप्त अवसरकेँ निर्लिप्त भावसँ ओही रूपमे स्वीकार करवामे दुनू राजकुमारक सहज उल्लासक प्रमाण भेटैत अछि। ओ दुनू गोटा अपना दिससँ कोनो विशेप उत्सुकता नहि प्रकट कयलनि। एहि प्रकारेँ ईश्वरक इच्छासँ जे किछु होइत छैक, ओकरा ओही रूपमे स्वीकार करक एहि प्रवृत्तिकेँ वाल्मीकि वहुधा 'यदृच्छा' कहैत छथि। जा धरि हम सही मार्गपर चलैत सही काज सही समयपर सही ढंगसँ करैत रहव ता धरि जे किछु होइत अछि, ओ हमरा हेतु आ सभक हेतु नीकक लेल होयत, एइह धारणा संस्कार-पुरुप रामक जीवन-दर्शनक मूल शक्ति प्रतीत होइत अछि।

प्रारंभमे मात्र दस दिन लेल विश्वामित्रक संग गेल राम पूरापूरी चौवीस दिन हुनका लोकनिक साहचर्यक आनंद प्राप्त करैत छथि। ध्यान देवाक वात थिक जे गायत्री मंत्रमे चौवीस टा अक्षर होइत छैक आ विश्वामित्र स्वयं गायत्री मंत्रक द्रष्टा छथि। चौवीसम दिन जखन रामक विवाह संपन्न होइत अछि तँ अगिला दिन प्रातःकालमे विश्वामित्र उत्तर पर्वतपर स्थित अपन निवास दिस प्रस्थान करैत छथि।

विश्वामित्रक संग रामक प्रवासक समयक सभसँ महत्त्वपूर्ण घटना थिक—अहल्याक शापमुक्ति, जे सीता आ रामक समागमसँ किछुए समय पूर्व घटल छल। एहि घटनाक महत्त्वक पता तखन चलैत अछि जखन राजा जनकक कुलपुरोहित आ अहल्याक पुत्र शतानंद मिथिलामे विश्वामित्रकेँ देखितँहि एहि संवंधमे जिज्ञासा प्रकट करैत छथि। विश्वामित्र अत्यंत संक्षिप्त आ सांकेतिक भापामे एकर समाधान करैत कहैत छथि—जे करक छल से कयल गेल। एहिसँ स्पष्ट अछि जे रामक एहि प्रवासक प्रत्येक घटना पूर्वहिसँ आयोजित छल आ विश्वामित्र रामक समग्र 'अयन'क एकटा सुनिश्चित कार्यक्रम वना लेने रहथि।

वाल्मीकिक अनुसार अहल्या पाथर नहि भेल रहथि। महर्पि गौतम अपन शापमे एतवे कहने रहथिन जे ओ अनिश्चित कालधरि, जा धरि रामक दर्शन

नहि हेतनि—अदृश्य पड़लि रहतीह। तँहि एहि शापक सम्पूर्ण अवधि हुनका हेतु तपस्याक समय छल आ ओ निराहार अगवे हवाक सेवन करैत धरतीपर छाउरक ढेरी जकाँ सूतलि पड़लि छलीह। श्रीरामक चरणक सातुर प्रतीक्षा कऽ रहलि रहथि। अंततः एकटा सुप्रभातक सुमधुर घड़ीमे रामक पदार्पण होइत अछि आ तुरन्त वासनाक भस्ममे दवल-पड़ल सौन्दर्यराशि अपन हेरायल शोभाकेँ पुनः प्राप्त करैत अछि आ मूल रूपमे फेरसँ प्रकट होइत अछि। ई सभटा रामक दर्शन मात्रसँ होइत अछि, कारण ओ प्रेमक मूर्त्त रूप छथि। जतऽ राम छथि, ओतऽ प्रेम अछि। ओतऽ वासना वा लालसाक हेतु कोनो स्थान नहि छैक। मात्र एहने व्यक्ति जनकक पावन तनया जानकीक योग्य वर भऽ सकैत छथि। एही प्रयोजनसँ वाल्मीकि अहल्या-प्रसंगकेँ सीता-रामक परिणयक पूर्वरंगक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। जानकी तथा दाशरथीक मिलन, धरती आ आकाशक, क्षमा आ प्रकाशक, सहन आ तपस्याक, सौन्दर्य तथा सत्यक समागम थिक।

सीता-रामक पाणिग्रहण संस्कार तथा पारस्परिक अनुरागक वर्णन वाल्मीकि अत्यंत संक्षिप्त, किन्तु सार्थक आ सारगर्भित शैलीमे करैत छथि। हुनका दुनूक हृदय-युगलक भाषाकेँ कविक आर्ष हृदय मर्यादित आ मार्मिक अभिव्यंजनामे रूपांतरित कऽ प्रस्तुत करैत अछि। एहि प्रसंगमे वाल्मीकि एक गोट महत्त्वपूर्ण बात कहैत छथि। हुनक कहव छनि जे रामक मनमे सीताक प्रति अपार प्रेम छनि आ हुनक हृदयक ओ अधिष्ठात्री थिकथि : मुदा एकर मुख्य कारण छैक जे हुनक पिता हुनका हेतु एहि कन्याक वरण कयलनि अछि।

रामायणक अयोध्याकांडमे रामक व्यक्तित्व एकटा गुणी पिताक योग्यतम पुत्रक रूपमे पूर्ण रूपसँ उभरि कऽ अवैत अछि। एहि कांडक आरंभ रामक दुर्लभ गुण सभक संकीर्तनसँ होइत अछि। राम मात्र एहि गुण सभक सहज अधिकारिए नहि, अपितु सतत अभ्यासी सेहो छथि। गुणगानक ई पुनरुक्ति परिवारमे आ राज्यमे हुनक लोकप्रियताकेँ उजागर करक हेतु भेल अछि। अत्यंत कम समयमे नयनाभिराम राम लोकाभिराम वनि जाइत छथि। परिवारमे जेठ-छोट सभक मन वहलवैत छथि, नागरिक लोकनिसँ ओ हृदयसँ भेट करैत छथि, सामाजिक उत्सव आ उल्लासमय पावनि-तिहारमे ओ ओकर सहभागी वनैत छथि, ककरो उकसौलापर ओ ककरोपर तमसाइत नहि छथि, पहिल भेटमे ओ लोककेँ अपन मित्र बना लैत छथि, आ हुनक मित्रोसभ ई अनुभव करैत छथि जे हुनको लोकनिकेँ एकगोट उत्तम मित्र भेटलनि अछि। दीन-दुखियाक मदति करक लेल ओ सदिखन तत्पर रहैत छथि, चाहे कियो एहन मदति माँगनि वा नहि, जतऽ कतहु कोनो संघर्ष

वा समरमे जाइत छथि, निरपवाद रूपेँ विजयी बनि घुरैत छथि। एहि विजय-यात्राक एकमात्र उद्देश्य लोक-कल्याण, शांति-स्थापना, सद्भावनाक संवर्धन तथा धनीक-ग़रीब दुनूकेँ समान रूपसँ सुख-समृद्धि भेटैत छैक।

रामक एहि गुण सभसँ प्रेरित जनता आ जननायक सभक मनमे ई इच्छा होइत छनि जे राज्यक भार स्वयं राम सम्हारथु। राजा दशरथक हेतु एहिसँ बढ़ि प्रसन्नताक बाते की भऽ सकैत छल जे हुनक जेठ आ सभ गुणमे श्रेष्ठ पुत्र हुनक उत्तराधिकारी बनथि। जखन ओ अपन राजप्रमुख लोकनिक समक्ष ई प्रस्ताव रखैत छथि तँ ओलोकनि हृदयसँ एकर स्वागत करैत छथि। राजतिलक केर दिन तत्काल निश्चित भऽ जाइत अछि। ई विचार रामक जन्मदिन आ हुनक जन्मनक्षत्रक दिन होइत अछि आ अगिला दिन राज्याभिषेकक हेतु निर्धारित कयल जाइत अछि।

एहिपर रामक प्रतिक्रिया देखबायोग्य अछि। जखन हुनक पिता हुनका सोझाँ मे ई प्रस्ताव रखैत छथि, तँ ओ कनियो उत्सुक वा उत्तेजित नहि होइत छथि जेहन हुनक स्वभाव अछि। मुदा पिताक प्रति आदर आ सम्मानक कारणे हुनकर ओ पैर छूबिकऽ कर्तव्य भावनासँ प्रस्ताव स्वीकार करैत छथि। अपन मातासँ सेहो ई समाचार सुनबैत काल एही मनोवृत्तिक परिचय दैत हुनका कहैत छथि जे पिताजी हुनका प्रजा-पालनक दायित्व (प्रजापालनकर्मणि) सौंपलथिन अछि। जहाँ धरि पद-प्रतिष्ठाक भावनाक संबंध छैक, ओ एकदम एहिसँ असंसक्त आनंदक अनुभव करैत छथि। जँ एहन कोनो भावना होइ, तथापि ओ अपन माता, पत्नी आ भाइ लोकनिक हितमे एकर स्वागत करैत छथि। अगिला दिन प्रातःकाल जखन स्थिति एकदम विपरीत रूप धारण करैत अछि आ हुनका सिंहासनपर बैसक स्थानपर वनवासक हेतु प्रस्थान करबाक लेल कहल जाइत छनि, तथापि ओ व्यग्र नहि बूझि पड़ैत छथि आ अपन सतमाइक वचनकेँ पिताक वचन समान सम्मान दैत स्वीकार करैत छथि। घटना-क्रमक ई आमूल परिवर्तन सम्पूर्ण परिवार आ राज्यकेँ विचलित कऽ दैत अछि। मुदा राम भाग्यक चुनौतीकेँ अत्यन्त शालीनता, गरिमा आ उच्चतर जीवनमूल्यक प्रति निष्ठाक संग स्वीकार करैत छथि। ओ अपन माता कैकयीसँ कहैत छथि जे ओ तत्काल वन जयबाक हेतु तैयार छथि आ वस्तुतः पिताकेँ प्रसन्न राखक हेतु ओ सब किछु करक लेल तैयार छथि। कैकयीक कठोर व्यवहारसँ अत्यंत व्याकुल भऽकऽ दशरथक इच्छा छनि जे भरत जा मामक ओतऽसँ घूरिकऽ अबैत छथि ता राम थम्हि जाथि। ई बात कैकेयीकेँ नीक नहि लगलनि, हुनका चिन्ता होमऽ लगलनि जे कतहु विलंबसँ हुनक योजनाकेँ विफल ने बना देल जाइक।

एहि अवसरपर राम अपन सतमायकेँ आश्वस्त करक लेल अत्यंत रोमांचक बात कहैत छथि। ओ कहैत छथि जे अर्थ आ अधिकारमे हुनका कनियो आसक्ति नहि छनि, अपितु वास्तविकता ई अछि जे हुनकर संपूर्ण दृष्टि व्यापक लोकभावना दिस छनि। ओकरा क्रियान्वित करबाक लेल हुनकर मन लालायित छनि। वनवासी ऋषि-मुनि लोकनिक साहचर्यमे रहि उत्तम धर्मक पालन करब हुनका अभीष्ट छनि। ओ कहैत छथि :

नाहमर्थपरो देवि लोकमावस्तुमुत्सहे।
विद्धिं मामृषिभिस्तुल्यं विमलं धर्ममाश्रितम्।।

राम ई शब्द मात्र कैकेयी टाकेँ सम्बोधित कऽ नहि कहैत छथि, अपितु सौंसे संसारकेँ कहैत छथि, एहने सन लगैत अछि। अपन वचनक आरंभिक शब्द 'नाह'पर विशेष बल दैत ओ कहैत छथि, हमर कार्य मात्र 'अहम्' धरि सीमित नहि अछि, अपितु समस्त लोक हमर घर थिक। ई उद्‌गार वाल्मीकिक नायककेँ अयोध्याक राजकुमारक स्तरसँ ऊपर उठाकऽ जनकेँ जनार्दनक भूमिकामे ठाढ़ कऽ दैत अछि। ओ विश्व-मानव छथि आ विश्व एही मानवक अछि। जखन राम कैकेयीसँ कहैत छथि जे हुनक छोट सन संकेतपर ओ वनवास सहर्ष स्वीकार कऽ सकैत छथि, एतनी टा बात लेल पितार्जीक औपचारिक आदेशक कोनो आवश्यकता नहि छल, तखनहि रामक उदारता उदात्त स्वरमे मुखरित होइत अछि। एहि शब्दकेँ कहि राम कैकेयी तथा दशरथक चरणपर नतमस्तक भऽ विदा हेबाक आदेश लैत छथि, फेर अपन माता कौशल्यासँ विदा होयबाक आज्ञा लेबऽ जाइत छथि। बाटमे हुनकर राज्याभिषेकक महोत्सवक सोल्लास प्रतीक्षा करैत नागरिकक अभिवादन स्वीकार करैत काल हुनक मुखाकृतिपर कनियो एहि बातक आभास नहि भेटैत अछि जे सम्पूर्ण योजना बदलि गेल छैक।

माता कौशल्या आ भाइ लक्ष्मण गतिविधिक एहन अप्रत्याशित व्यतिक्रमकेँ देखि विक्षुब्ध भऽ जाइत छथि। लक्ष्मण राजशासनक विरुद्ध विद्रोह धरि करबाक बात सोचि लैत छथि, ओ जोरदार शब्दमे कहैत छथि—राम सिंहासनक वैध उत्तराधिकारी छथि आ हुनका संग जे घोर अन्याय भऽ रहल अछि, ओकर डटिकऽ मुकाबिला करक चाही। मुदा स्थितप्रज्ञ राम अपन निर्णयपर डटल रहैत छथि आ दुनू गोटाकेँ बुझबैत छथि जे पिताजीक विवशताकेँ सही ढंगसँ बुझक चाही आ राजपरिवारमे ककरो भावनाकेँ बिनु ठेस लगौने निर्वासनक हृदयसँ स्वागत करक चाही। राजपरिवार आ राज्यमे औचित्य आ मर्यादाक कोनो तरहेँ अवहेलना नहि होइ आ जीवनक आधारभूत मूल्य-सत्य आ धर्म सुस्थिर बनल रहैक, एही उद्देश्यसँ

राम एतेटा निर्णय करैत छथि। ई सही अछि जे कैकेयी सत्य आ धर्म दुनूक बीच जटिल संघर्ष उत्पन्न कऽ देलनि, मुदा राम तत्काल अपन मनकेँ एकटा महान् त्यागक हेतु तैयार कऽ लेलनि, जाहिसँ सम्पूर्ण समस्याक समाधान भऽ गेल। इएह छलैक ओहि क्षणक माँग आ अपेक्षा।

उदारमना रामक ई दृढ़ निश्चय पल भरिमे सम्पूर्ण राज्यकेँ शोकाकुल कऽ देलक आ सम्पूर्ण अयोध्या रामक संग जयबाक हेतु तैयार भऽ गेल। बहुत बुझौलोपर आ मना कयलोपर सीता आ लक्ष्मण रामकेँ छोड़ि घरमे रहब स्वीकार नहि करैत छथि। रामकेँ एकसर वन जाय देबाक बात ओ सोचियो तक नहि सकैत छथि। अंततः रामकेँ हुनका दुनू गोटाकेँ अपना संग लऽ जाय पड़ैत छनि। गुरुदेव वसिष्ठ मुक्त कंठसँ घोषित करैत छथि जे सम्पूर्ण नगरी हिनका तीनू गोटाक संग वन चलत, किएक तँ रामक बिना राष्ट्रक बात सोचबो संभव नहि छैक। हुनक दृष्टिमे राष्ट्र ओत्तहि छैक जतऽ राम छथि, से ओ वन होइक वा नगर होइक। याज्ञिक आ दार्शनिक समाज तमसा नदीक तट धरि रामक संग चलैत अछि, जतऽ राम रातिमे विश्राम करक हेतु रहि जाइत छथि। सुमंत्रक रथक घोड़ा गंगाक तटपर रामकेँ छोड़ि घुरि अयबाक हेतु तैयार नहि अछि। घरमे माता-पिताक दयनीय दशा सहनशीलताक सभ सीमाकेँ टपि जाइत अछि। दशरथक दृष्टि रामक संगहि चल जाइत अछि आ फेर घुरिकऽ नहि अबैत अछि। ई सभ घटना महर्षि वाल्मीकिक महाकाव्य-दर्शनकेँ उद्‌घाटित करैत अछि जे अपन काव्य-नायककेँ आदर्श मानवक सभ गुणक मूर्त्तरूप बनाकऽ ई साबित कयलनि अछि जे हुनक मानवता दिव्यत्व सँ बढ़िकऽ अछि।

चित्रकूटक दृश्य एहि महामानवकेँ आओर उदात्त भाव-भूमिपर प्रतिष्ठित करैत अछि, जाहिठाम भाव-संतुलन आ स्थितप्रज्ञता हुनक मानवताकेँ महिमान्वित बनबैत अछि। मानव-मनक कुशल शब्द-शिल्पी वाल्मीकि राम आ भरत दुनूक चरित्रकेँ एते समतुल्य बनबैत छथि जे ई कहब कठिन होइत छैक जे के किनकासँ कोन रूपमे श्रेष्ठ छथि। दुनू भाइ धर्मक पक्षधर बनिकऽ सत्य प्रतिष्ठाक समर्थन करैत छथि। दुनू गोटे अपन-अपन ढंगसँ एहि बातक आग्रह करैत छथि जे कुल-मर्यादा आ लोकहितक अवहेलनाक कारणे अभीष्ट आचरणमे जे अतिक्रमण भेल अछि, ओकरा सन्मतिसँ परिमार्जित कयल जाय। मुदा दुनू गोटामेसँ कियो कोनो सम्मत निष्कर्ष धरि नहि पहुँचैत छथि, आ ने दुनू गोटा एक दोसरासँ असहमते होअऽ चाहैत छथि। अंततः राम एकटा एहन समीकरणक अविष्कार करैत छथि जाहिसँ सत्य आ धर्म दुनूक पालन सम्भव भऽ जाइत अछि। हुनक

117577

कथन छनि "चलू, हम दुनू गोटा राज्यक दू टा फराक-फराक क्षेत्रक कार्यभार सम्हारि ली। हम अयोध्यासँ बाहर नाना तरहक मृग-मृगेन्द्रक पालन करैत विशाल वनभूमिक राजाधिराज बनब आ अहाँ अयोध्याक नरेश बनि मानवमूल्यक संवर्द्धन करैत मानव जातिक कल्याण करू।" मुदा भरतक मन एहिसँ संतुष्ट नहि होइत छनि। ओ अपन भाइसँ निवेदन करैत छथि जे चौदह वर्ष धरि जा राम वनवासक आज्ञाक पालन कऽ अयोध्या पुनः नहि घुरि अबैत छथि, ता ओ मात्र ओकर न्यासीक रूपमे राज-काज सम्हारैत रहताह। श्री रामक श्रीचरणसँ पवित्र बनल स्वर्ण पादुकाकेँ ओ अपना संग अयोध्या लऽ जाइत छथि आ ओकरे राजसिंहासनपर प्रतिष्ठित कऽ अपन सभ शासनकार्य ओही पादुकाक दिससँ संचालन करैत छथि। एहि प्रकारेँ दुनू भाइ स्वामित्वक भावनासँ हँटि अपन-अपन नियत कार्य मात्र दायित्व भावनासँ संपन्न करक हेतु सहमत भऽ समस्याक समाधान करैत छथि। इएह चित्रकूटक शिखर-सम्मेलनक सभसँ नमहर उपलब्धि छैक, जकर निर्वाह महामेधावी वाल्मीकि अत्यंत कुशलतासँ करैत छथि।

रामक अयनक तेसर चरण विराध प्रसंगसँ शुरू होइत अछि। सीता, राम आ लक्ष्मण तीनू गोटाकेँ देखिकऽ विराध विस्मय आ चुनौतीक स्वरमे हुनका लोकनिकेँ कहैत छनि—ई तापस वेष आ संगमे ई परम सुन्दरी? जखन राम अपन स्थिति बुझबऽ लगैत छथि तँ बिच्चेमे विराध सीताकेँ उठाकऽ विदा भऽ जाइत अछि आ दुनू राजकुमारकेँ अपन प्राण बचाकऽ भागि जयबाक लेल कहैत अछि। मुदा जखने ओकरापर अस्त्रक प्रयोग होइत छैक तँ ओ सीताकेँ नीचाँमे राखि दुनू भाइकेँ अपन बाँहिपर बैसा पड़ाय लगैत अछि। लक्ष्मण ओहि राक्षसक आदंकसँ किछु क्षुब्ध होइत छथि तँ राम मुस्कियाकऽ हुनका बुझा दैत छथिन, घबरयबाक कोनो बात नहि छैक, एकरा अपना मने चलऽ दियौक। एकदम अनजान नव प्रदेशमे बाट देखेबाक लेल हमरा लोकनिकेँ एकर आभार मानक चाही। विराधक अपनाओल बाटकेँ अपना हेतु हितकारी बुझि जीवनक विषमताक प्रति रामक समदर्शिताक परिचायक अछि। मुदा जखन सीता उद्विग्न भऽ राक्षससँ राजकुमार लोकनिकेँ छोड़क आग्रह करैत छथि तँ दुनू भाइ राक्षसक दुनू बाँहि काटि ओकरा आगू बढ़ऽसँ रोकिं लैत छथि। तखन जाकऽ पता चलैत छनि जे बेचारा ई राक्षस पहिने गन्धर्व छल आ शापग्रस्त भऽकऽ राक्षस बनि गेल। अयोध्याक दुनू राजकुमारक ओ प्रतीक्षा कऽ रहल छल जाहिसँ ओ शापमुक्त भऽ सकत। अभिप्रेत महामानवक सोद्देश्य अभियानक आरम्भ एही घटनासँ होइत अछि, जकर पाछाँ दैवी प्रेरणा आ एक टा व्यवस्थित योजना छैक। आश्चर्यक

बात ई अछि जे शापमुक्त भेलापर पूर्वक देहकेँ अंतिम संस्कार होयबासँ पहिने विराध रामकेँ हुनका आगूक मार्ग-दर्शन करबैत अछि आ कहैत छनि जे शरभंग नामक महर्षि हुनक प्रतीक्षा कऽ रहल छथिन आ दंडक-वनमे हुनक विजय-यात्राकेँ सार्थक बनयबामे यथेष्ट योग देबाक हेतु उत्सुको छथिन।

एहन लगैत अछि जे दंडकवनमे रामक यात्राक प्रत्येक चरण कोनो दैवी योजनासँ पूर्वनियोजित छल, किएक तँ तपोभूमि दंडककेँ राक्षसक आदंकसँ मुक्त करब हुनक अभीष्ट छल। विराधक घटनाक बाद राम दंडक वनक साधु-संत लोकनिसँ भेट कऽ ध्यानसँ हुनका लोकनिक करुण गाथा सुनैत छथिन आ आश्वासन दैत छथिन जे सम्पूर्ण इलाकामे शांतिक वातावरण पुनः स्थापित कयल जायत। शरभंग आ सुतीक्ष्ण नामक दू गोट ऋषिक मार्गदर्शनमे राम पूरे दस वर्षक अवधिमे सम्पूर्ण दण्डक वनक सर्वेक्षण करैत छथि। तकर बाद अगस्त्य मुनिसँ भेट भेलापर हुनका लोकनिकेँ गोदावरीक तटपर पंचवटी नामक स्थानपर किछु दिन रहक परामर्श देल जाइत छनि। एहि अवधिमे राम विंध्याचलक उत्तरी भागकेँ असुरक आदंकसँ मुक्त कऽ देलनि अछि। आब वास्तविक संकटक सामना करक समय लग आबि गेल अछि। महर्षि अगस्त्यकेँ एकर पूर्ण अनुमान छलनि। रामकेँ तहिँ ओ विश्वकर्मा द्वारा विष्णुक हेतु बनाओल गेल दिव्य धनुष आ ब्रह्मदत्त नामक एकटा अमोघ वाण सेहो दैत छथिन। एकर अतिरिक्त महर्षि एकटा खड्ग सेहो रामकेँ भेट करैत छथि आ हुनका विचार दैत छथिन जे एहि सभ हथियारक सार्थक आ सशक्त उपयोग कऽ जनस्थानमे निर्भीक बनि आदंक पसारनिहार राक्षस सभ सँ ओहि प्रदेशकेँ मुक्त करथि आ महर्षि लोकनिक आश्रम सभकेँ पुनर्वासित करथि। अगस्त्य मुनि रामकेँ एकटा आओरो महत्त्वपूर्ण आ मार्मिक परामर्श दैत कहैत छथिन जे वनवासक समय सीता अपन मनसँ जे कामना व्यक्त करथि, तकर पूर्त्ति अवश्य होयबाक चाही, किएक तँ राजभवनक सुलभ सुख-सुविधाक त्याग कऽ अपन इच्छासँ रामक संग वनवास अपनौलनि अछि। महर्षि रामकेँ एहि बातक आश्वासनो दैत छथिन जे अपन धर्मपरायणता आ सत्यनिष्ठाक बलेँ अपन कर्तव्य कर्ममे अवश्य सफलता प्राप्त करताह। एहि बात सभसँ बुझि पड़ैत अछि जे महर्षि अगस्त्य अपन प्रखर दूरदर्शितासँ भावी घटनाक कते स्पष्ट अनुमान लगा लेलनि अछि आ तदनुसार कुशल कार्ययोजना तैयार कऽ लक्ष्य-सिद्धिकेँ सुनिश्चित कऽ लेलनि अछि। एहि प्रकारेँ अयोध्याक राजकुमार सत्यद्रष्टा अगस्त्यसँ प्रेरणा आ सामर्थ्यक संचय कऽ देव-कार्यक नैष्ठिक निर्वाहक रूपमे पंचवटी दिस अग्रसर होइत छथि।

पंचवटीक प्रवास हेमंत ऋतुक शोभासँ आरंभ होइत अछि। लक्ष्मणक बातसँ पता चलैत अछि जे रामक हेतु ई मनोनुकूल ऋतु छनि। इक्ष्वाकु वंशक पुरान मित्र जटायु सीता, राम आ लक्ष्मणसँ भेट कऽ हुनका लोकनिक सेवा आ हुनका लोकनिक अनुपस्थितिमे सीताक रक्षा करक अपन इच्छा व्यक्त करैत छथि। मनोरम गोदावरीक पावन तटपर लक्ष्मण द्वारा निर्मित छोट सन, मुदा मनोहर पर्णशाला तीनू निवासीकेँ अयोध्याक आमोद-प्रमोदक स्मरण करवैत अछि। संगहि भरतक त्यागमय जीवनक ओ सभ कल्पना करऽ लगैत छथि, जे रामकेँ वनवाससँ घुरि अयबा धरि मात्र हुनक प्रतिनिधिक रूपमे राज-काज सम्हारैत तपस्वीक जीवन व्यतीत करबाक निश्चय कयलनि अछि। हुनका लोकनिक दिनचर्याक आरंभ गोदावरीमे स्नानक संग होइत छल आ तकर बाद पर्णशालामे बैसि कने कालक लेल रामक स्फूर्तिदायक गप्प-सप्पक आनंदमे होइत छल। रामक रमणीय वाणी सुनि गोदावरीक तरंग सेहो पुलकित भऽ जाइत अछि। सौंसे प्रकृति कोनो अगोचर सत्ताक द्वारा परिकल्पित भौतिक आ आध्यात्मिक संगमक छवि प्रस्तुत करैत अछि।

एक दिन भिनसरे शिव पार्वती आ नंदी जकाँ बैसल राम सीता आ लक्ष्मणक बीच अकस्मात सुपनेखा नामक असुरांगना कतहुसँ आबि जाइत अछि। ई विचित्र स्त्रीगण बेधड़क आश्रममे चल जाइत अछि आ तुरंत राम अथवा लक्ष्मण आ जँ संभव हो तँ दुनूक हृदय जीतक आ आवश्यक पड़ैक तँ अपन मार्गसँ सीताकेँ हँटयबाक अभद्र आ कुत्सित प्रयास करैत अछि। ई घटना सम्पूर्ण दृश्यकेँ दूषित कऽ दैत अछि आ एहिसँ एकटा नव परिस्थिति उत्पन्न भऽ जाइत अछि, जाहिसँ एकटा भीषण युद्ध ठाढ़ भऽ जाइत अछि। राम आरंभमे विनोदसँ काज लैत छथि, मुदा जखन ओ स्त्री सीतापर आक्रमण कऽ हुनका खयबाक हेतु तत्पर होइत अछि, तखनहि रामक संकेतपर लक्ष्मण ओकर नाक-कान काटि दैत छथिन। तुरन्ते ओ कनैत-बिलखैत अपन भाइ खर लग जाकऽ ओकरा सभटा खेड़हा कहैत छैक। कनेको काल नहि बितैत छैक की घमासान लड़ाइ शुरू भऽ जाइत अछि। राम एकसरे चौदह हजार राक्षसकेँ अपन शर-वर्षासँ मारि दैत छथिन। अंततः खर, दूषण आ त्रिशिर नामक तीन गोट प्रमुख राक्षस सेहो मारल जाइत अछि। ई सम्पूर्ण काण्ड कनेके कालमे खतम भऽ जाइत अछि। आ अंतरिक्षक सभ देवता रामक असाधारण समर-कौशलक सराहना करैत छथि। लक्ष्मण मंद हासक मुद्रामे रामक अभिनंदन करैत छथि आ सीता प्रगाढ़ आलिंगनसँ सम्मानित करैत छथिन।

मुदा ई मात्र अभिनन्दनक अवसर नहि थिक, अपितु ई तँ एकटा प्रारम्भ

थिक। कएहूसँ नमहर चुनौती रामकेँ स्वीकार करबाक छनि, जकर फल राक्षस सभकेँ भोगऽ पड़तैक। रावणक संरक्षणमे जनस्थानमे स्थित असुर-शिविर पलभरिमे नष्ट भऽ गेल अछि। एहि सम्पूर्ण कांडक सूत्रधारिणी सुपनेखा रावणकेँ सेहो रणभूमिमे लऽ अनैत अछि। अपन बहिन सुपनेखा आ सेनानी अकंपन (जनस्थानमे बचल मात्र दू गोटे) सँ घटनाक पूर्ण विवरण सुनलाक बाद रावण रामकेँ सही जबाब देबाक निर्णय करैत अछि। मुदा एहि लेल ओ टेढ़-मेढ़ बाट धरैत अछि, सोझे जाकऽ रामक सामना करक साहस नहि जुटबैत अछि। अंततः ओ सीताकेँ अशोकवाटिकामे बंदी बनाकऽ राखऽमे सफल भऽ जाइत अछि, मुदा ओ ई बात बुझि नहि पबैत अछि जे एहिसँ ओ अपन राज, अपन परिवार आ स्वयं अपन प्राणक सर्वनाशकेँ आमंत्रित कयलक अछि।

एहि विषम परिस्थितिमे राम जाहि धैर्यक संग अपन भूमिकाक निर्वाह कयलनि अछि ताहिसँ हुनक व्यक्तित्वक अंतरंग भाव-तरंगिणीक पता चलैत अछि, जकर विशद चित्रण चरित्र-शिल्पी प्राचेतस प्रस्तुत करैत छथि। जखनहि सीता स्वर्णमृगकेँ सजीव वा कमसँ कम ओकर छालकेँ पयबाक अपन उत्कट कामना व्यक्त करैत छथि तँ रामकेँ लक्ष्मण सतर्क करैत स्पष्ट कहि दैत छथिन जे ई हरिण वास्तवमे सोनाक हरिण नहि थिक, अपितु आसुरी मायासँ कल्पित हरिण थिक आ एहन मायाजालसँ हमरा लोकनिकेँ सचेत रहबाक चाही। राम सेहो एहि रहस्यकेँ नीक जकाँ जनैत छथि, मुदा अगस्त्यक आदेशानुसार हुनका जानकीक सभ मनोकामनाकेँ पूरा करबाक छनि। हुनका हेतु कुशाग्रबुद्धि लक्ष्मणक चेतौनीक अपेक्षा महर्षिक वचन वेशी महत्त्वक अछि। विपक्षी सभक द्वारा देल चेतौनीकेँ ओ धैर्यपूर्वक स्वागत करैत छथि आ हुनका पूर्ण विश्वास छनि जे एहिसँ वास्तविकता स्वतः प्रकट भऽ जायत आ सभटा मायाजाल स्वतः समूल नष्ट भऽ जायत। सीता सन परम साध्वीकेँ प्रलोभन देनिहार मायामृगकेँ देखिकऽ ओ नक्षत्र मंडलमे एहि सम्पूर्ण तंत्रकेँ नियंत्रित कयनिहार तारामृगकेँ कल्पनाक आँखिसँ देखि लैत छथि। पर्णशाला छोड़ि जयबासँ पहिने ओ लक्ष्मणकेँ सचेत करैत छथि जे चारू भर शंकाक वातावरण व्याप्त अछि आ तँहि हुनका विशेष रूपसँ सचेत रहबाक छनि। एतऽ लक्ष्मणक संग-संग रामायणक प्रत्येक पाठककेँ चकित करऽबला बात ई अछि जे सीताक सात्विक मन एहि क्षणिक कामनाक वशमे कोना आबि गेल? संगहि राम सन स्थितप्रज्ञ ई बात नीक जकाँ बुझैत जे एहि भ्रमक परिणाम अत्यंत भयानक भऽ सकैत अछि, एहि खतराकेँ उठेबाक हेतु कोना तत्पर भऽ गेलाह? एकर उत्तर रामक आर्जव स्वभाव अछि। ओ गुरुजनक आदर

करबाक हेतु, अपन आत्मीय संबंधीक सात्विक कामनाक पूर्त्ति हेतु आ सत्य धर्मक पताका ऊँच राखक हेतु जीवनमे विषमसँ विषम परिणामक सामना करक हेतु सदैव प्रस्तुत रहैत छथि। हुनका ईश्वरक इच्छा, जकरा वाल्मीकि यदृच्छा कहैत छथि, पर प्रबल विश्वास छनि जे जीवनक सभ प्रमुख घटनाक पाछू काज करैत अछि। रामक अभियान मे ई सभसँ नमहर जटिल परीक्षाक समय अछि आ ओ साहस, दृढ़ता आ स्थिरताक संग एकर स्वागत करैत छथि।

तथापि, जखन एकर भयावह परिणाम सोझाँ अबैत अछि तँ हिमालय सन धीर-वीर राम अकस्मात् एकटा साधारण लोक जकाँ अपन स्त्रीक वियोगमे कानऽ विलखऽ लगैत छथि आ सोझाँमे जे पहाड़, पक्षी, नदी आ फूल, लता भेटैत छनि तकरासँ शोकातुर भऽ आतुरतासँ पूछऽ लगैत छथि जे हमर जानकीक पता तोरा छौ तँ हमरा कहि दे। जखन बाटमे शोणितसँ लथपथ जटायुकेँ देखैत छथि, तँ हुनका ओकरोपर संदेह होइ छनि जे कतहु इहो तँ ने विश्वासघात कयलक अछि, मुदा जहिना पता चलैत छनि जे इएह निष्ठावान पक्षी अपन प्राणक बलि दऽकऽ सीताकेँ बचयबाक प्रयास कयलक तँ ओ ओहि पक्षीक दाह-संस्कार अत्यंत श्रद्धापूर्वक करैत छथि जे ओ अपन पिताक सेहो नहि कऽ सकल रहथि। अपन प्रिय पत्नीक खोजमे जाइत-जाइत अपन भाइक कान्हपर माथ राखि हिचुकि-हिचुकि कानऽ लगैत छथि। अपन अदृष्टपर अपने दया होइत छनि। घर-परिवारसँ दूर, राज्यसँ च्युत आ पत्नीसँ वियुक्त तँ भइए गेलाह अछि, मुदा हुनकर पत्नी आ प्रतिष्ठाक रक्षा करऽमे अपन प्राण देमऽबला एहि उदार पक्षीक ओ रक्षो नहि कऽ सकलाह। रामक चरित्रक एहि मर्मस्पर्शी मानवताक पाछू हुनक स्रष्टाक करुणाकलित हृदय मुखरित होइत अछि। एहने मानवकेँ वाल्मीकि अपन पाठकक समक्ष प्रस्तुत करऽ चाहैत रहथि, जाहिसँ ओ हमरा लोकनिक हृदयमे बसि जाय आ हमरा लोकनिक दुःख-क्लेशमे संगी आ सखा बनि सान्त्वना दऽ सकय।

दंडक वनमे रामक विजय-यात्राक सभसँ पैघ विशेषता ई अछि जे हुनक विरोधी सेहो अंततः हुनक हितकारी सिद्ध होइत छथि। दंडक वनमे प्रवेश करितहि विराध रामकेँ आगूक बाट देखबैत शरभंग सन महात्माक भेट करक परामर्श दैत छनि आ कहैत छनि जे सब हुनक प्रतीक्षा कऽ रहल छथिन। अरण्यकाण्डक अंतमे एही प्रकारेँ कबंध रामकेँ विचार दैत छनि जे ओ किष्किंधा जाकऽ ओतऽ वानर राज सुग्रीवसँ मैत्री करथि, किएक तँ हुनको रामक सहायताक आवश्यकता छनि, जहिना रामकेँ हुनकर। रामक स्पृहणीय अभियान एही तरहेँ एकटा सुनिश्चित योजनानुसार सुस्थिर गतिसँ आगू बढ़ऽ लगैत अछि आ अपेक्षित लक्ष्यक सिद्धिमे

विरोधी आ हितैषी, वनवासी आ महात्मा, दानव आ देवता, नर आ वानर समान रूपसँ सहायक सिद्ध होइत अछि। घोर शत्रुकेँ परम हितैषीक रूपमे अप्रत्याशित रूपसँ परिवर्तित होइत देखि अपने रामकेँ सेहो आश्चर्य होइत छनि। रामक शर-स्पर्शसँ अपन प्राण सहर्ष समर्पण कयनिहार कबंध परलोकक यात्राक समय रामकेँ आशीर्वाद दैत छनि जे इएह अहाँक अयनक मंगलमय मार्ग थिक (एष राम शिवः पथा)। रामक विनयक ई पराकाष्ठा थिक, जाहिमे दिव्यता आ भव्यताक सह-अस्तित्व छैक।

किष्किंधामे जाकऽ रामक विनम्रता आ मानवता अधिक सात्विक बनि जाइत अछि, जखन ओ सुग्रीवसँ मैत्रीक अभ्यर्थना करैत छथि। हुनका बुझल छनि जे जते हुनका सुग्रीवक आवश्यकता छनि ताहिसँ बेशी सुग्रीवकेँ हुनक आवश्यकता छैक। परन्तु हुनक तात्कालिक चिन्ता महत्ताक नाप-जोख नहि छनि, अपितु अपन अग्रज वालिक निष्ठुर व्यवहारक कारणे राज्य आ परिवारक सुखसँ वंचित सुग्रीवकेँ पुनर्वासित करब छनि। एतऽ वालिकेँ रावणक मित्र होयब मात्र प्रासंगिक छैक। एक गोट अनुभवी राजनयिकक रूपमे राम सुग्रीवकेँ ई विश्वास दिआबऽ चाहैत छथि जे ओ सुग्रीवक काज पहिने करताह आ आगूक काज सभटा हुनकहि सुविधापर निर्भर रहत। राम सन महान् व्यक्तिक ई उदात्त आ उदार स्वभाव सुग्रीवक मनोबल बढ़यबामे सहायक होइत अछि। राजनीतिक दल-बलकेँ सभ समस्या संवाद मात्रसँ समाप्त भऽ जाइत अछि। एहि प्रसंगमे हनुमानक भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण छनि। समयक गतिक संग ओ रामक अधिक आत्मीय बनि जाइत छथि। प्रथम भेटमे राम हनुमानकेँ मात्र कनेके कालमे देखिकऽ आ हुनक सुन्दर वचन सुनिकऽ हुनकर जन्मजात दिव्यता आ दिव्य वर्चस्वितकेँ बूझि जाइत छथि। वालिकेँ बुझऽमे सेहो रामकेँ विलम्ब नहि लगैत छनि आ बिना ओकरा देखने तय कऽ लैत छथि जे ओकरा संग केहन व्यवहार करबाक चाही। गाछक झुरमुटक पाछू ठाढ़ भऽकऽ राम वालिकेँ तीरसँ मारि खसबैत छथि तँ वालि द्वारा रामक सदाचारपर लांछना लगाओल जाइत अछि। मुदा राम ई काज कायरतासँ नहि करैत छथि, अपितु अपन शिकारकेँ जेना मारक चाही तहिना मारैत छथि आ ओकरा बुझा सेहो दैत छथिन जे ओकरा ओना किएक मारलथिन। असलमे ओ तीर सेहो ओहिना मारलनि जाहिसँ ओकर जान तुरंत नहि चलि जाइक। रावणपर जेना तीर चलौलनि तेना वालिपर नहि। रामक बात विस्तारसँ सुनि अपन दोष बुझऽ आ रामकेँ सही मानक हेतु वालिकेँ पर्याप्त समय देल गेल छल। अपन पत्नी आ बेटाक बात सुनि रामक सोझेमे ओकरा लोकनिक रक्षाक दायित्व

सुग्रीवकेँ सौंपक लेल यथेष्ट समय भेटल छलैक। संतुलित निर्णय तथा योजनाबद्ध कार्य-निर्वहन द्वारा राम किष्किंधाक शासन-व्यवस्थामे शांतिपूर्वक न्यायक स्थापना कयलनि। सुग्रीवकेँ हुनक अग्रज वालिक स्थानपर सिंहासनपर प्रतिष्ठित कयलाक बादो राम हुनका चारि मासक समय देने रहथिन, जाहिसँ एहि अवधिमे ओ आवश्यक विश्राम पाबि रामकेँ देल गेल वचनक अनुसार सीताक अन्वेषण-कार्य आरंभ कऽ सकथि। चातुर्मास्याक ई पूरा समय राम अपन भाइ लक्ष्मणक संग प्रस्रवण पर्वतपर प्राकृतिक परिमलक सेवन करैत वितौलनि।

मुदा, निश्चित अवधि वितियो गेलापर जखन सुग्रीवक ओतऽसँ कोनो समाचार नहि भेटलनि तखन राम सुग्रीव लग लक्ष्मणकेँ पठाकऽ हुनका एहि वातक स्मरण दिअबैत दथिन जे ओ अपन मित्रकेँ देल गेल वचनकेँ मोन पाड़थि आ ओकर पालन नहि करक जे दुष्परिणाम भऽ सकैत छैक तकरो प्रति सतर्क रहथि। अपन सुखद निद्राक दुःखद परिणामक संबंधमे हुनका हल्लुक मुदा तीव्र चेतावनी दैत राम अपन संदेश-वाक्य सेहो पठबैत छथि जे जाही मार्गसँ वालि परलोक सिधारलक, ओ मार्ग एते संकीर्ण नहि छैक जाहिमे आन ककरो लेल स्थान नहि होइक आ तँहि सुग्रीवकेँ अपन वचनक पालन कऽ ओहि मार्गपर नहि जयबाक चाहियनि। ई एक्केटा वाक्य सौंसे किष्किंधाकेँ सतर्क आ सचेत कऽ दैत अछि। कनेके कालमे करोड़ो वानर योद्धा सुग्रीवक आपातकालीन सूचनापर किष्किंधामे एकत्रित भऽ जाइत अछि। सुग्रीव ओहि सभ सेनाकेँ रामक सोझाँ उपस्थित कऽ ओकरा सभकेँ यथोचित आदेश देबाक हुनकासँ अनुरोध करैत छथि। राम प्रिय स्वरमे सुग्रीवकेँ बुझबैत छथि जे आदेश देबाक कार्य शासकक होइत छैक, शासककेँ ई भार मित्रपर नहि सौंपक चाही। एहिसँ पता चलैत अछि जे राजमर्यादा आ प्रशासनिक प्रक्रियाक प्रति रामक मनमे कतेक निष्ठा, शिष्टता आ विनम्रता छनि।

यद्यपि असंख्य वानर चारू दिशामे सीताक अन्वेषण कार्यमे पठाओल गेल अछि, तथापि रामक अंतःकरण निश्चित रूपसँ जनैत छनि जे कार्यसिद्धि किनका माध्यमे संभावित अछि। तँहि ओ हनुमानकेँ अपना लग बजाकऽ हुनका चिन्हासीक रूपमे अपन नाम लिखल स्वर्णमुद्रिका दऽकऽ कहैत छथि जे एहि औंठीकेँ देखिकऽ सीताकेँ हुनकापर विश्वास हेतनि, चाहे ओ कत्तहु होथु। हनुमानपर रामक विश्वासक प्रमाण एहि घटनासँ भेटैत अछि। वानररत्न हनुमानकेँ आशीर्वाद देबाकाल राम कहैत छथि जे हमरा तँ तोरेपर भरोस अछि आ हमर भविष्य तोरेपर निर्भर अछि, किएक तँ तोहर शारीरिक, मानसिक आ आध्यात्मिक क्षमताक कोनो सीमा नहि

अछि। एहि वात सभसँ पता चलैत अछि जे राम वास्तवमे एकटा महात्मा छथि आ हुनक महत्ताक अनुरूपे हुनक उदारता छनि।

सीताक खोजमे वानर सेनाक विभिन्न दिशामे प्रस्थान कयलाक बाद राम आ लक्ष्मण ओकरा सभक घुरि अयबाक प्रतीक्षा करैत रहैत छथि। सुन्दरकांड मे लंकाक प्रत्येक घटनामे रामक नाम कोनो-ने-कोनो रूपमे अनिवार्य रूपसँ अबितँहि अछि, भले ओ प्रत्यक्ष रूपमे कत्तहु देखल नहि जाथि। लगभग सभ पात्रक विचारमे आ व्यवहारमे रामक चर्चा कतेको प्रकारसँ होइत अछि। हनुमानक हेतु राम प्रेरणाक अक्षय स्रोत सिद्ध होइत छथि, मैथिलीक हेतु तँ रामक नामे हृदयक स्पंदन छनि, रावणक हेतु दिन-राति ओकरा मनकेँ विक्षुब्ध कयनिहार रामक नामेटा अछि। अशोक वनमे सीताक रखबारि कयनिहारि बूढ़ि आ ज्ञानी राक्षसी त्रिजटा भोरुकबामे रामक सपना देखैत अछि। अपना संग रखबारि कयनिहारि सभकेँ कहैत अछि जे जल्दी राम लंका औताह आ रावणक संहार करताह, विभीषणकेँ लंकाक सभ वृत्तांत रामकेँ सुनबैत छथिन आ राम हुनका अपन आलिंगनसँ पुरस्कृत करैत छथिन, संगहि सात्विक विनम्रता आ कृतज्ञताक स्वरमे कहैत छथिन जे आब हमरा लग एकर अतिरिक्त तोरा देबाक हेतु किछु नहि अछि। अपन पतिसँ मिलनक हेतु आतुर सीता हनुमानक हाथे चिन्हासीक रूपमे जे चूड़ामणि पठौने छथिन, से देखि रामक आँखिमे नोर डबडबा जाइत छनि।

कोमल मानवीयता आ सदय हृदयक संगहि राम मूलतः कर्मठ व्यक्ति छथि—निरंतर गतिशील आ कृतसंकल्प। ओ हनुमानसँ पूछिकऽ लंका आ लंकेश्वरक सामरिक शक्ति तथा समर तंत्रक प्रमुख केन्द्र सभ आ ओकर रहस्य सभकेँ बुझि लैत छथि आ रावणक विरुद्ध युद्धक तैयारी करबामे कनियो विलंब नहि होअऽ दैत छथि। दुनू भाइ समुद्र दिसि प्रस्थान करैत काल मार्गमे आकाशमे तरेगन सभकेँ आ धरतीक प्राकृतिक सुषमाक ध्यानसँ निरीक्षण करैत छथि तँ हुनका लोकनिकेँ विश्वास भऽ जाइत छनि जे ऊपर आ नीचाँ सम्पूर्ण वातावरण अनुकूल छनि, किएक तँ सत्य आ धर्म हुनका लोकनिक पक्षमे छनि। मुदा रामक महानता एहि बातमे निहित अछि जे ओ लंकेशक दुष्कर्मक हेतु निरपराध लंकावासी सभक सर्वनाश करक हेतु अपन मनकेँ तैयार नहि कऽ पबैत छथि। अंततः ओ अपना मनकेँ बुझबैत छथि जे मनुक्खक सच्चरित्रता आ गरिमामे लोकनिष्ठा बनाकऽ राखऽमे एहि प्रकारक डेग उठायब आवश्यक भऽ गेल छैक। अपन एहि धारणाकेँ ओ मनहि मन समर्थन करऽ लगैत छथि। हुनक प्रमुख लक्ष्य अपन पत्नीकेँ फेरसँ प्राप्त करबे टा नहि, अपितु संसारक सोझाँ एहि बातकेँ सिद्ध करब छनि जे

सत्यक विजय अवश्यंभावी छैक आ अधर्मक पतन भऽ कऽ रहत। खूब सोचि-विचारिकऽ ओ युद्धक समय आ युद्धमे विजय प्राप्त कयलाक उपरान्तो सदैव एही भावनाकेँ लऽ कऽ आगू बढ़ैत छथि। सत्य, धर्म आ शांतिक स्थापनाक हेतु राम जे अभियान चलबैत छथि, ताहिमे हुनका सभसँ नमहर व्यवधान सागरकेँ पार करक छनि। पहिने ओ समुद्रदेवतासँ मार्ग प्रस्तुत करक हेतु निवेदन करैत छथि। मुदा जखन ई प्रार्थना कारगर नहि होइत अछि तँ ओ समुद्रकेँ धमकी दऽकऽ अपन मार्ग अपने बना लैत छथि। अपन एकटा सेनानी नलक अप्राकृतिक शक्तिक बलेँ सागरमे एकटा अद्‌भुत सेतु बना लैत छथि। हुनक प्रबल इच्छा अपन पूर्त्तिक मार्ग अपने ताकि लैत अछि।

विभीषण रावणक पक्ष छोड़ि रामक शरणमे आबि जाइत अछि। ईहो रामक अभियानक सफलतामे सहायक सिद्ध होइत अछि। मात्र हनुमानकेँ छोड़ि शेष सभ वानर-प्रमुख रामकेँ विचार दैत छनि जे विभीषणकेँ स्वीकार करब संकट अराधव थिक। ओकर प्रवेश संदेहास्पद भऽ सकैत अछि। मुदा राम वानर-प्रमुख सभक विचारकेँ एकदम्मे नकारि नहि दैत छथि आ ने हनुमानजीक बात स्वीकारे कऽ लैत छथि। एकटा कुशल राजनीतिज्ञ जकाँ राम अपन संतुलित आ सुचिंतित विचार व्यक्त करैत छथि जे कोनो प्राणी जँ हमरा ई कहैत अछि जे 'हम अहाँक छी' आ हमरा शरणमे अबैत अछि तँ ओकरा न्याय आ सुरक्षा देब हमर परम व्रत थिक। ओ एक डेग आओरो बढ़िकऽ कहैत छथि जे जँ रावणो हमरा शरणमे आबि जाय तँ ओकरो हम स्वागत करब। रामक हेतु कथनी करनी थिक। ओ तत्कालहिँ लक्ष्मणकेँ कहि विभीषणकेँ लंकेशक रूपमे राज्याभिषेक करैत छथि। विभीषणकेँ एहि सम्मानक योग्य बनबैत अछि ओकर धर्म-परायणता, ओ धर्मात्मा अछि, तँहि लंकाक ऐश्वर्यक ओ सहज अधिकारी अछि। राम अपने धर्मक साकार रूप छथि, तँहि ने ओ धर्मात्माकेँ एहन सम्मान प्रदान करैत छथि।

रावणक संग रामक पहिल मुठभेड़मे हुनक समर-नीतिक अन्दाज भऽ जाइत अछि। रामक प्रथम वाण जहिना रावणकेँ स्पर्श करैत छैक, ओ एकदम विह्‌वल भऽ जाइत अछि आ मर्माहत अनुभव करैत अछि आ ओकर धनुष ओकरा हाथ सँ अपने ससरि जाइत छैक। इन्द्रक वज्रायुधसँ सेहो ओ एते विचलित नहि भेल छल। ओ एकदम निस्तेज आ निष्प्राण भऽ गेल। एहि दयनीय हालतमे रावणकेँ देखि राम मंद हास करैत ओकरा विचार दैत छथिन जे आइ भरि तोँ अपन घरमे जाकऽ आराम कर आ जँ इच्छा होउक तँ काल्हि फेर अपन बलक प्रदर्शन करिहेँ। तकर बाद जाधरि सम्पूर्ण राक्षसी सेना इन्द्रजित समेत

पराजित नहि भऽ गेल ता धरि रावण अपने युद्धभूमिमे अयबाक साहस नहि जुटा सकल।

राम अपन पराजय सेहो एही रूपमे स्वीकार करैत छथि। जखन सुग्रीव पहिल बेर रावणकेँ देखिते हठात् ओकरापर आक्रमण कऽ दैत छथि आ हुनक कोनो तरहेँ सुरक्षित घुरलापर राम हुनका चेतवैत छथिन जे हुनका अपनापर पूर्ण नियंत्रण राखक चाहियनि। हुनका ओ बुझबैत छथिन जे साहस आ संयम समयक माँग थिक, आबऽबला समय विनाशकारी अछि। ओ अंगदकेँ रावणक दरबारमे पठाकऽ स्पष्ट आ शिष्ट शब्दमे एकटा संतुलित संदेश पठबैत छथि। रामक संदेश अंगद ओहिना रावणकेँ जाकऽ सुना दैत छथि आ सलाह दैत छथिन जे तोँ सादर मैथिलीकेँ हुनक पति रामकेँ घुरा दहुन आ अपनाकेँ समर्पित कऽ दे अन्यथा सर्वनाशक हेतु तैयार भऽ अपन छोट भाइ विभीषणकेँ उत्तराधिकारी बनऽ दे। एहि बातक वास्तवमे रावण लग कोनो उत्तर नहि छल। आक्रोश, छल-कपटसँ ओ अपन भाषामे एकर जवाब देबाक चेष्टा करैत अछि। एहि षड्यंत्रमे ओ अपन पुत्र इंद्रजितकेँ नियोजित करैत अछि। मुदा राम आ लक्ष्मण धर्मक मार्गपर डटल रहैत छथि आ सोझ चालिसँ अपन अभियान चलबैत छथि। जखन इन्द्रजित हुनका नागपाशमे वान्हि दैत अछि तँ ओ गरुड़क सहायतासँ ताहिसँ मुक्त होइत छथि। जखन रावण लक्ष्मणपर शक्तिक प्रयोग करैत अछि आ हुनका मूर्छित कऽ दैत अछि तँ राम निराश नहि होइत छथि, अपन मित्र सभपर हुनक परिचर्याक भार सोंपि तत्काले रावणकेँ एकर जवाब देबऽ विदा भऽ जाइत छथि। रावणकेँ तेहन उत्तर भेटलैक जे ओ ता धरि रणभूमिमे नहि अबैत अछि जा धरि एकदम एकसर नहि भऽ गेल अछि। एहि संकट कालमे रामकेँ सभसँ पैघ सहायता हनुमानसँ भेटैत छनि। हनुमान निश्चित अवधिमे संजीवनी बूटी आनिकऽ लक्ष्मणक प्राणक रक्षा करैत छथि, राम हुनक एहन साहसपूर्ण काज हेतु भूरि-भूरि प्रशंसा करैत छथि। इंद्रजित जखन माया-सीताक वध कऽ राम आ हनुमानकेँ विश्वास करबैत अछि जे वास्तवमे सीताक वध कऽ देल गेल अछि तँ विभीषण शोकग्रस्त रामकेँ धैर्य दैत बुझबैत छथिन जे ई आसुरी माया थिक।

अंतिम युद्धमे सेहो रावणक वध करऽमे रामकेँ खूब मोश्किल होइत छनि, कारणं ओ देवता जकाँ अजर अमर आ अजेय बुझि पड़ैत अछि। अपन आन्तरिक दिव्य शक्ति तथा आदर्श आचरण आ सत्यनिष्ठासँ अर्जित तपोबलसँ अन्ततः राम रावणक जीवनक लीला अन्त करैत छथि आ संगहि विभीषणसँ कहैत छथि जे ओकर पार्थिव शरीरक दाहसंस्कार करथि। विभीषण अपन अत्याचारी आ पापी

भाइक संस्कार करऽमे संकोच करैत छथि तँ राम हुनका बुझबैत छथिन जे मृत्युक संगहि सभ शत्रुता खतम भऽ जाइत छैक। आसुरी शक्तिकेँ समाप्त करवे एहि ऐतिहासिक युद्धक एकमात्र प्रयोजन छल आ ताहिमे राम सफलता प्राप्त कयलनि। हुनक विजय असत् पर सत्क विजय छल। ई कोनो वैयक्तिक विजय नहि छल, अपितु समस्त मानवताक कल्याणक हेतु सम्पन्न विजय छल।

सीताक अग्निपरीक्षाकेँ सेहो एही व्यापक परिप्रेक्ष्यमे बुझक थिक। एहि प्रसंग मे राम सीताक पतिक रूपे टामे व्यवहार नहि करैत छथि, अपितु जगत्पति बनिकऽ अपन सार्वभौम दृष्टि आ सामुदायिक दायित्वक परिचय दैत छथि। युद्धमे विजयी होइते अपन पत्नीसँ भेट कऽ सांत्वना देबाक हेतु आतुर भऽ लंकामे प्रवेश नहि करैत छथि। लंकामे विभीषणक राज्यकेँ प्रतिष्ठित करब हुनक पहिल काज अछि। राज्य जखन वास्तविक उत्तराधिकारीक अधीन सनाथ भऽ जाइत अछि तखनहि ओ हनुमानसँ कहैत छथि जे विभीषणक अनुमति लऽ सीताक लग जाथि आ हुनका वर्तमान परिस्थितिसँ अवगत कराबथि। जानकी अपन प्राणेश्वरक प्रसन्न मुखमंडल देखक चिर संचित लालसामे बैसलि छथि, ई समाचार अशोक वनसँ जखने हनुमान अनैत छथि तँ राम सौंसे संसारकेँ सजग नयनसँ देखऽ लगैत छथि आ चिंतनशील मुद्रामे विभीषणसँ कहैत छथि जे सीताकेँ हुनका सोझाँमे उपस्थित करथि जाहिसँ सभ लोक हुनका सार्वजनिक स्थानपर देखि सकथि। अपन पत्नीकेँ एक वर्षक वियोगक पश्चात् ओ सार्वजनिक रूपसँ देखऽ चाहैत छथि। एहिसँ पता चलैत अछि जे हुनकर दृष्टिमे ई विषय सार्वभौम रूप धारण कऽ लेने छल। हुनक तीक्ष्ण दृष्टिसँ ई बात एकदम स्पष्ट होअऽ लगैत अछि। एहि सभ मान्यताक अछैतो, एते नमहर अवधिक वियोगक उपरान्त पत्नीसँ भेट भेलापर कठोर वचनसँ संबोधित करब कोनो दृष्टिसँ उचित नहि बुझि पड़ैत अछि। ओ बेचारी साध्वी गंभीर वेदनासँ व्यथित भऽ अपन देह अग्निदेवताकेँ समर्पित करक निश्चय करैत छथि, किएक तँ हुनकर प्रियतम पतिकेँ हुनकामे कोनो रुचि नहि छनि। रामक ई विचित्र व्यवहार जे अकस्मात् अमानवीय आयाम धारण करैत अछि, दैवी हस्तक्षेपसँ प्रकृतिस्थ भऽ जाइत अछि। आदिकविक आदर्श मानवमे जे अमानुषिक लक्षण देखऽमे अबैत अछि ओ मात्र हुनक लोकोत्तर प्रकृतिक द्योतक थिक जे देवता लोकनिकेँ सेहो चकित कऽ दैत अछि। मैथिलीक पवित्रताकेँ प्रमाणित करैत अग्निदेवता हुनका स्वीकार करक आदेश रामकेँ दैत छथिन, आओर राम दैवी निर्णयकेँ शिरोधार्य मानि अपन सहचरीकेँ सांत्वना प्रदान करैत हुनकासँ क्षमा सेहो मँगैत छथि।

वाल्मीकिक अध्येता एहि प्रसंगमे मैथिलीक कटु वचनकेँ अवश्य स्मरण करताह जे ओ लक्ष्मणकेँ संबोधित कय कहने रहथिन। प्रसंग ई छल जे सीता आ लक्ष्मणक नाम लऽ लऽ सहायताक हेतु रामक स्वरमे आर्तनाद सुनि (वास्तवमे मायावी मारीचक स्वर) सीता व्याकुल भऽ गेलीह आ लक्ष्मणकेँ तुरंत रामक लग जाकऽ हुनक रक्षा करक हेतु कहैत छथि। लक्ष्मण जखन सीताकेँ वास्तविकता बुझा हुनका एकसर छोड़ि जायब स्वीकार नहि करैत छथिन तँ सीता हुनक सदाशयता आ सच्चरित्रतापर संदेह प्रकट करैत छथिन आ कठोर वचन कहि दैत छथिन। लक्ष्मण ताहि कठोर शब्दकेँ सहि नहि सकलाह आ रामक आज्ञाक विरुद्ध सीताकेँ एकसरि छोड़ि चल जाइत छथि। संभवतः राम चाहैत छथि जे सीता अपन एहि घोर अपराधकेँ स्मरण करथि। वास्तवमे सीता सेहो ई अनुभव करिते हेतीह जे राम जे किछु कयलनि अछि ताहिसँ न्याय भेल छैक, सैह छल तात्कालिक न्यायक माँग।

ई सभटा भऽ गेलाक बाद राम पुष्पक विमानमे सीताकेँ अपना लग बैसाकऽ हुनकर वियोगमे बीतल बात सभ खूब प्रेमसँ सुनबैत छथिन, जाहिसँ हुनक हृदयमे लागल चोटपर ममताक मलहम लागय। विमानसँ नीचाँ विभिन्न स्थानकेँ देखैत-देखबैत जखन ओ सभ किष्किंधा धरि आबि जाइत छथि तँ सीता कहैत छथिन जे तारा आ रूमाकेँ सेहो संग कऽ लेल जाय, जाहिसँ राज्याभिषेकक शोभा बढ़त। राम हुनक ई प्रस्ताव तुरंत स्वीकार करैत छथि। बूझि पड़ैत अछि जे अयोध्या पहुँचक हेतु रामकेँ शीघ्रता नहि छनि, कारण वनवासक अवधि पूर्ण होयबामे औखन चारि दिन बाँकी छैक। तँहि ओ भरद्वाज मुनिक आश्रममे रहि जाइत छथि आ हनुमानक द्वारा भरतकेँ अपन आगमनक सूचना पठा दैत छथिन।

भरतकेँ सेहो एहि आकस्मिक शुभ समाचारसँ होअऽबला मानसिक आवेगकेँ सम्हारऽमे सुविधा हेबाक संभावना छनि। नान्हि टा बात सभपर सेहो राम कते सजग आ सावधान छथि, तकर पता तखन चलैत अछि जखन नन्दिग्राम पहुँचितँहि पुष्पक विमान ओकर स्वामी कुबेरकेँ पठा दैत छथि। रावण एहि विमानकेँ हुनकासँ छीनि लेने छल।

सीताक वनवास सेहो एकटा एहन घटना अछि, जाहिसँ रामक खूब आलोचना होइत छनि। सत्य बात मुदा ई थिक जे रामक आचरणक औचित्यपर विचार करबा काल व्यापक दृष्टि राखऽ पड़ैत छैक। स्वभावेँ मानवीय गुणसँ सम्पन्न होइतो ई लोकोत्तर मानव कखनो-कखनो सत्य, धर्म, न्याय, प्रतिष्ठा, गरिमा, शालीनता आ मान-मर्यादा सन आधारभूत मानव मूल्यक संरक्षण आ संवर्धनक हेतु मानवीय

चेतनाक सभ स्तरसँ ऊपर उठि एकटा उदात्त भाव-भूमिपर पहुँचि जाइत छथि। थोड़ लोक एहि भूमिकाक भाषाकेँ बूझि पबैत छथि। जानकी एहि भाषाकेँ अधिकांश अपन स्वामी रामसँ आ शेषांश बादमे अपन अभिभावक वाल्मीकिक वात्सल्य आ मार्गदर्शनमे सिखलनि। ओ अपन काव्यनायक आ नायिकाकेँ एही कूट भाषामे वार्तालाप करौलनि अछि आ सैह थिक हुनक महाकाव्य रामायणक आंतरिक भाषा। ई थिक हृदयक भाषा आ सुहृद् व्यक्तिए एकरा बुझि सकैत अछि। वाल्मीकि बालकांडक अंतमे हृदय-हृदयक बीच होअऽवला हार्दिक वार्तालाप दिस मार्मिक संकेत करैत कहैत छथि—

'अंतर्गतमपि व्यक्तं आख्याति हृदयं हृदा'

एक दोसराक प्रति हुनका दुनू गोटाक मनमे जे स्नेह छनि, ओ अव्यक्त रहितहुँ तखने सस्वर प्रकट होइत अछि जखन हुनका लोकनिक हृदय किछु कहऽ चाहैत अछि।

महाकवि अपन काव्य तथा काव्य-नायककेँ जाहि कमनीय कला-कल्पनासँ रूपान्वित कयलनि अछि, ताहीसँ दुनू अमरत्व प्राप्त कयलनि अछि। ई अमरत्व लौकिक तथा आध्यात्मिक दुनू अर्थमे सार्थक छैक। इएह कारण छैक जे सत्यकेँ अपन पराक्रम आ धर्मकेँ अपन स्वरूप बनाकऽ चलनिहार राम एहि पार्थिव जगतक सभ सज्जनक हृदयमे जा धरि नदीमे गति रहत आ पहाड़ टिकल रहत ताधरि स्थायी निवास बनौने रहताह।

3

श्रीस्वरूपिणी मैथिली

सीताक चरित्रकेँ एक आदर्श नारीक प्रतिमानक रूपमे चित्रित करऽमे वाल्मीकिक रसात्मक दृष्टि आ काव्यात्मक अभिव्यंजना पराकाष्ठापर पहुँचि जाइत अछि। मर्यादाक मानक रेखा, परिमार्जित सरलताक प्रतीक, शोभा आ वैभवक प्रतिमूर्त्ति, नैतिक आचार संहिताक नैष्ठिक अनुयायिनी, परा-प्रीतिक आपवादिक मूर्तिरूपिणी तथा साहस आ अनुकंपाक अपूर्व संधात्री एहि साध्वीक गुण-संपदा हुनका राम सन प्रशस्त पुरुषक उपयुक्त अर्द्धांगिनी बना देलक आ कतहु ओ रामोसँ आगू बढ़ि जाइत छथि।

सभसँ पहिने महर्षि वाल्मीकिकेँ देवर्षि नारद एहि परमांगनाक परिचय करबैत कहने छलथिन जे ई उत्तम नारी आ सर्वोत्तम वधू स्त्रीक समस्त गुणसँ सम्पन्न छथि, तेँ विश्वक विख्यात स्त्रीगण लोकनिमे ओ अग्रगण्य छथि। रामक हेतु ओ प्राणमे समाहित परम प्रेमरूपा प्रणयिनी छथि। बालकांडक अंतमे जखन ओ रामक जीवनसंगिनी बनि राजभवनमे प्रवेश करैत छथि तँ वाल्मीकि हुनका श्रीस्वरूपिणी कहि हुनकर मांत्रिक व्यक्तित्व दिसि मार्मिक संकेत करैत छथि। नारद सेहो हुनका देवमायासँ निर्मित नारी कहैत छथि। एकर कारण जे एहि पांचभौतिक जगतमे एहन हस्ती भऽ सकैत अछि, एहि बातपर ककरो विश्वास तक नहि हेतैक। हुनक जीवनक सभसँ पैघ सम्पत्ति हुनकर मूक सहनशीलता थिक। ओ जते जीवनमे त्याग कयलनि, ताहि हेतु कोनो प्रकारक प्रतिफल वा मान्यताक ओ अपेक्षा नहि कयलनि, खाहे ओ त्याग ओ अपन परिवारक कल्याणक हेतु कयने होथि वा विशाल समाजक हेतुएँ।

हुनका मनमे लेशमात्र द्वेषक भावना ककरो हेतु नहि छनि, अपितु जे सभ हुनकापर कुदृष्टि रखैत छनि, तकरो सभकेँ दया कऽ क्षमा कऽ दैत छथिन। जे हुनका हानि पहुँचौलक, तकरा सभकेँ ओ कहियो हानि नहि कयलनि। जाहि बातकेँ ओ उचित बुझैत छथि, ओकरा कार्यरूप देबामे ओ सदिखन दृढ़संकल्प रहैत छथि। एहिसँ जँ हुनका हानि होइत छनि, तकरो ओ परवाहि नहि करैत

छथि। हुनक सम्पूर्ण जीवन जटिल समस्या सभसँ आ परीक्षेमे बीतल, ई परीक्षा सभ कखनो कखनो एते दुस्तर भेल जे हुनके सनि साध्वी एहन कसौटीपर सही उतरि सकैत छथि। सभ हुनकर सराहना करैत छनि, किछु गोटे हृदयसँ आ किछु गोटे विवश भऽकऽ। सुपनेखा सेहो मनहि मन हुनक अपूर्व सौन्दर्यक प्रशंसा करैत अछि। अपन भाइ रावणसँ ओ कहैत अछि जे तीनू लोकमे सौन्दर्यमे ओकर समता कयनिहारि स्त्री नहि अछि। रावण सेहो हुनका सर्वलोक-मनोहारिणी कहिकऽ संबोधित करैत अछि। हुनक पतिभक्ति आ अटल निष्ठाक प्रति ओकरा मनमे अत्यंत आदर-भाव छैक। मंदोदरी यद्यपि कुल-मर्यादा, सौन्दर्य आ दाक्षिण्यमे अपनाकेँ सीतासँ अधिक वा समान मानैत छथि, मुदा रावणक संहारक बाद सीताक प्रशंसा करैत ओ कहैत छथि जे मैथिली श्रीदेवी आ भू-देवीक प्रतिमूर्त्ति छथि, रोहिणी आ अरुंधतीसँ सेहो अधिक पवित्र आ तेजस्विनी छथि। इहो विधिक विडंबने कही जे परम सौन्दर्यक राशि, धर्म-परायण आ सत्य-निष्ठासँ सम्पन्न एहि परम साध्वीकेँ जीवन भरि घोर यातना सहऽ पड़लनि। अन्तमे माय धरतीक गर्भमे शरण लेबऽ पड़लनि। राम आ सीताक एहि समन्वित अयनमे दुनू लोकोत्तर पात्र आजीवन संसारक सर्वोत्तम श्रेयक अमर प्रतीक बनल रहलाह। दशरथ आ कौशल्याकेँ सांत्वना दैत सुमंत्र ठीके कहैत छथिन जे लोककल्याणक भावनासँ स्वयं करुणामय जीवन व्यतीत कयनिहारि युगल राम आ सीताक सम्बन्धमे चिन्ता नहि करथि, कारण हुनक जीवन अनंतकाल धरि मानव जातिक हेतु एकटा उदात्त आदर्श बनल रहत आ हुनक कथा युग-युग धरि लोकस्मृतिमे प्रतिष्ठित रहत।

वाल्मीकि रामायणमे सीता आ रामक विवाह आन तीन भाइक विवाहक संग-संग अत्यंत सरल, निराडंबर, मुदा वेदसम्मत विधिसँ सम्पन्न होइत अछि। परवर्ती रामकाव्य सभमे जे वैभवपूर्ण वर्णन प्राप्त होइत छैक, ओ वाल्मीकिमे नहि छैक। विवाहक वर्णन पूरा मात्र चालिस श्लोकमे संक्षिप्त सर्गमे समा जाइत अछि। एहूमे मात्र आधा भाग विवाहक वास्तविक वर्णनक लेल पर्याप्त भऽ जाइत छैक। नव दंपतिक पारस्परिक प्रणय-भाव अथवा वार्तालापक कोनो झलक पाठककेँ नहि भेटैत छैक। बालकांडक आखिरमे हुनका दुनूक हृदय-संगमक मार्मिक वर्णन हृदयक भाषामे प्रस्तुत कयल गेल अछि, जकरा हृदयज्ञ बुझि सकैत छथि।

रामायणमे श्रीस्वरूपिणी सीताक बोल पहिल बेर पाठककेँ सुनबाक अवसर तखन भेटैत छैक, जखन प्रस्तावित राजतिलकक दिन भोरे-भोर कैकेयी आ दशरथक आदेशपर रामकेँ मंगलकामनाक संग बिदा करैत ओ किछु कहैत छथि। जाहि परिवेशसँ सुमंत्र ई संदेश लऽकऽ अबैत छथि, ताहिसँ कोनो बुद्धिशाली

व्यक्ति अनुमान लगा सकैत अछि जे वास्तवमे बात किछु चिन्ताजनक छैक आ सूक्ष्मग्राही राम ओहि बातकेँ सांकेतिक भाषामे सीतासँ कहि सेहो दैत छथि। सीताक समयज्ञता तुरंत एहि आशयकेँ बुझि लैत अछि आ ओकरे अनुसार अपन पतिक सुरक्षा आ अभ्युदयक लेल समस्त देवी-देवतासँ आशीर्वाद मंगैत छथि। ओ अपन पतिकेँ बिदा करक हेतु द्वारि तक जाइत छथि। जानकीक मृदु-मधुर, संस्कार-संपन्न, सांकेतिक आ संतुलित वाणी पहिल बेर सुनऽबला पाठक लोकनिकेँ बादमे ज्ञात होयतनि जे अनसूया हिनका मधुरभाषिणी किएक कहलथिन। स्वयं राम हुनका कल्याणतरवादिनी कहि बेर-बेर किएक स्मरण करैत रहथि आ हनुमान किएक हुनका 'अदीन-भाषिणी' मानलनि।

ओही दिन कनेके कालक बाद दोसर प्रसंगमे ओ रामसँ गप्प करैत छथि। प्रस्तावित राजतिलक प्रव्रजनक रूप धारण कऽ लैत अछि। रामकेँ ओही दिन साँझ धरि वनवासक लेल प्रस्थान करक छनि। एहि लेल ओ अपन माता कौशल्याक आशीर्वाद सेहो प्राप्त कऽ लेलनि अछि, मुदा ई समाचार सीताकेँ कहऽमे राम सकुचा रहल छथि। अप्रसन्न आ आक्लांत शरीरे ओ सीता लग जाइत छथि। हुनक उदास मुँह देखिते सभ किछु बुझनिहारि सूक्ष्मग्राहिणी अस्पष्ट आतुरतासँ विस्मयक स्वरमे पुछैत छथि "की भऽ गेल अहाँकेँ प्रभु!" (किमिदानीमिदं प्रभो)। राम बड़ संकोच भावे आस्ते-आस्ते दारुण समाचार सुनबैत छथिन। कहैत छथिन, चौदह वर्ष धरि ओ पिताक आदेशक पालन करैत वनवास करताह आ सीताकेँ एहि अवधिमे सासु-ससुरक सेवा करैत घरमे रहक छनि। एहिपर सीता सभ किछु अपना मनकेँ बुझाकऽ रामसँ कहैत छथि जे अहाँक सोझाँ जे चुनौती अछि ओकरा हम अहाँसँ पूर्वहि स्वीकार कऽ लेल अछि। वनवासक समय हम अहाँक संग रहब। सुख-दुःखमे अहाँक सहभागिनी बनि अहाँक सेवा करब, जाहिसँ अहाँक मार्ग निष्कंटक आ स्वच्छ बनल रहय। जखन राम सीताकेँ अपना संग लऽ चलक लेल तैयार नहि छथि आ वनवासमे होअऽबला मोश्किल सभक बढ़ा-चढ़ाकऽ वर्णन करऽ लागल छथि तँ सीता मुस्कुराकऽ कहैत छथिन "हमर धीरज आ निश्चयात्मिकतापर अहाँकेँ विश्वास किएक नहि भऽ रहल अछि?" एहूपर रामक मन बदलल नहि देखि और साहस बटोरि कहैत छथिन "अयोध्याक राजकुमारकेँ ई कायरता शोभा नहि दैत छनि।" फेर ओ उपहासक स्वरमे कहैत छथि जे हुनक पिता राजा जनककेँ एहि बातक पता नहि छलनि जे हुनक जमाता मात्र आकारमे पुरुष छथिन, पौरुष आ पराक्रममे नहि। ई सुनि राम मौन भऽ जाइत छथि, हुनका संग लऽ वन जयबाक हेतु तैयार भऽ जाइत छथि। एहि प्रकारेँ जानकी अपन

पतिक संग वन जयबाक अधिकार साग्रह प्राप्त करैत छथि। इहो जे कैकेयीक वर-याचनामे हुनका जायब शामिल नहि छल। अपन पति रामक संग एहि गंभीर बातपर वार्ता करऽकाल सीता भावात्मक संतुलन, शालीनता आ राजपरिवारक गरिमाक अनुरूप उदात्त औचित्यक अद्‌भुत निर्वाह करैत छथि। रामो हुनक शिष्टता आ स्पष्टवादिताक सराहना करैत छथि, एहिमे हुनक पारिवारिक परिवेशक प्रतिष्ठा स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि। हुनका एहि बातक गौरव होइत छनि जे हुनका जीवनसंगिनीक रूपमे एहन उदात्त स्त्रीरत्न भेटलथिन। जखन राम वन-जीवनक विभीषिका आ संकटपूर्ण स्थिति सभक विस्तारसँ वर्णन करऽ लगैत छथि तँ सीता एकगोट अद्‌भुत बात कहैत छथिन। ओ कहैत छथिन "जखन समस्त भयक स्रोत आ समाधान संगहि अछि तँ भय कोन बातक?" रामकेँ ई देखि सुखद आश्चर्य होइत छनि जे अपन तर्कक अंतिम प्रहारमे सीताक आँखिसँ नोर खसऽ लगैत छनि। मुदा ओहि नोरमे कत्तहु भयक आभास तक नहि अछि। तँहि तँ ओ अश्रुकण चुप्पेचाप हुनक हृदयमे पहुँचि ओहिमे महिमामय मनस्विताक मंगल ज्योति जगबैत अछि।

जखन कैकेयी सीताकेँ रामक संग वल्कल वसन पहिरक लेल बाध्य करैत छथिन तँ वसिष्ठ हस्तक्षेप कऽ कैकेयीसँ आक्रोशे भरल स्वरमे कहैत छथि जे तोँ अपन मर्यादाक अतिक्रमण कऽ रहल छैं आ फेर रामक सोझेमे कहैत छथि जे रामक वनवासक अवधिमे हुनक प्रतिनिधिक रूपमे सीता देशक शासन करतीह। वल्कल वसन देखि आ वसिष्ठक जोशपूर्ण वचन सुनि सीता टुकुर-टुकुर ताकऽ लगैत छथि। अंततः वल्कल पहिरि पतिक संग ओ वनवासक लेल प्रस्थान करैत छथि। इहो अद्‌भुत जे राजा दशरथ द्वारा आशीर्वाद सहित देल गेल अमूल्य वस्त्र आ आभूषण ओ साभार स्वीकार कयलनि। जखन माता कौशल्या विदाकालमे उपदेश रूपमे हुनका कहलथिन जे वनवासक समय ओ रामक सादर सेवा करथि, ताहिपर ओ बड़ सात्विक विनम्रतासँ कहैत छथि जे राम सन उत्तम पतिक जीवन-सहचरीक रूपमे अपन दायित्वनिर्वाहक आवश्यक शिक्षा हुनका अपन माताक घरमे देल गेल छनि। ई बात जखन हुनका मुँहसँ बहराइत अछि तँ ओहि वाणीक शालीनताकेँ देखि ओतऽ उपस्थित सभक आँखिमे नोर भरि जाइत छनि।

गंगा नदीपार उतरऽकाल लोकपावनीसँ बद्धांजलि अनुरोध करैत छथि जे वनवासक अवधि ओ विधिवत् सम्पन्न करबथु, जाहिसँ हुनक पति अपन व्रतचर्या मे सुयश उत्तीर्ण होथि। रामपत्नीक एहि अंजलिबद्ध प्रार्थनाकेँ शब्द-शिल्पी वाल्मीकि 'सीतांजलि'क संज्ञा देलनि अछि।

ऋषि भरद्वाज अपन वात्सल्यमय आशीर्वादसँ सीताकेँ अनुगृहीत करैत छथि, मुदा दुनू राजकुमारसँ कहैत छथि जे ओलोकनि सीताक सभ इच्छाक पूर्ति करथि, कारण ओ अपन पतिक सेवाक लेल अपन इच्छासँ वनवास स्वीकार कयलनि अछि। महर्षि अगस्त्य सेहो सीताक त्याग-भावनाक प्रशंसा कयलनि अछि, किएक तँ संकटक समय जानि-बूझिकऽ सभ तरहक संकट उठाबक लेल तैयार भऽ ओ पतिसेवाक ई मार्ग धयलनि अछि। पावन तपस्विनी अनसूयाक अमोघ आशीर्वाद हुनका प्राप्त होइत छनि। एहिपर रामकेँ कने ईर्ष्या होइत छनि। वाल्मीकि सीता आ अनसूयामे तते तादात्म्य स्थापित करैत छथि जे ओ सीताकेँ अनसूया नामे अभिहित करैत कहैत छथि जे एक अनसूयासँ (अनसूयानसूयया) दोसर अनसूया वार्ता कऽ रहलि छथि। आशय मात्र एतबे जे एक जन्मसँ अनसूया छथि आ दोसर (सीता) संस्कारसँ। साध्वी अनसूयाक कहलापर जखन सीता अपन विवाहक सभ वृत्तांत अनसूयाकेँ सुनबैत छथिन तँ वृद्ध तापसीकेँ परम आनंदक अनुभव होइत छनि। परिणयक ई संक्षिप्त परिचय ऋषिपत्नीकेँ एते श्रुति-मधुर आ हृदयंगम लगैत छनि जे ओ बाह्य प्रकृतिमे सेहो ओहि मधुर क्षण सभक प्रतिबिंब देखैत छथि। वृद्ध तापस अत्रि अनसूया तरुण तापस लोकनिकेँ मधुर शब्द सभसँ आ मधुरतर भावनाक संग दंडक वनक लेल विदा कयलथिन।

जेना पहिने लोक सोचने छल जे वन-जीवन सीता-राम आ लक्ष्मणक सोझाँ मे कतेको चुनौती ठाढ़ करत, से सभ ठाढ़ भेल। परन्तु विकटसँ विकट परिस्थिति सभमे सेहो सीता अपन मानसिक संतुलन नहि हेरौलनि। प्रथम मुकाबिला विराधक संग होइत अछि, जे सीताकेँ अपन कोरामे उठाकऽ पड़ाय लगैत अछि। जखन दुनू राजकुमार ओकरापर तीर चलबऽ लगैत छथि तँ ओ सीताकेँ धरतीपर उतारि दुनू भाइकेँ बाँहिपर उठा दौड़ऽ लगैत अछि। एहन विकट परिस्थितिमे सीता अपना हेतु चिंतित नहि भऽ राक्षससँ अनुरोध करैत छथि जे हुनका दुनू गोटेकेँ छोड़ि हुनका लऽ जाइन। एहि भयंकर मनःस्थितिमे हुनका लोकनिकेँ छोड़ि हुनका अपना लऽ जाइन, से कहक हेतु ओहि राक्षसकेँ नमस्कार कयलनि अछि आ 'राक्षसोत्तम' कहि सम्बोधित करक लेल (माँ हरोत्सृज काकुत्स्थौ नमस्ते राक्षसोत्तम) एकगोट युवतीमे एते साहस आ विश्वास भऽ सकैत अछि एकर कल्पनो करब कठिन। पहिल उदंतमे जानकी जाहि धैर्य आ स्थैर्यक परिचय देलनि अछि सैह आगू जाकऽ उपस्थित होअऽबला अधिक विद्राविक उपद्रवो सभक लेल तैयार करैत बुझि पड़ैत अछि। एक दिसि ओ राम आ लक्ष्मणपर तँ दोसर दिसि वन्य मृग सभपर आ राक्षस सभपर हुनक सतर्क दृष्टि रहैत अछि। एहि सभ तरहेँ साधु-संत

आ क्रूर राक्षस सभसँ आवासित ओहि दुर्गम प्रदेशमे रामक प्रयोजनमूलक अभियानकेँ सार्थक बनयबामे रामपत्नी महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैत छथि।

दंडक वनक राक्षस सभसँ पीड़ित ऋषि-मुनि लोकनि जखन राम लग आबि अपन करुण कथा सुनबैत छथि तँ राम हुनका लोकनिकेँ तत्काल आश्वासन दैत छथिन जे आदंकवादी असुर समाजक अत्याचारसँ हुनका लोकनिक सम्पूर्ण रक्षाक व्यवस्था कयल जायत। एही लक्ष्यक सिद्धिक हेतु ओ दंडक वनक सर्वेक्षण करैत छथि, जाहिसँ हुनका लोकनिकेँ आततायी सभसँ मुक्त कऽ शांति स्थापित कयल जा सकय। एहि अवसरपर सीता रामसँ ई जिज्ञासा प्रकट करैत छथि जे निरपराधीकेँ दण्ड देब अपराध नहि अछि की? एक तरहेँ ई प्रश्न रामक निर्णयकेँ देल गेल चुनौती छल, मुदा मृदुभाषिणी सीता शिष्ट भाषामे रामसँ स्पष्टीकरण मँगैत छथि। राम सीताक विवेकशील प्रश्नक प्रशंसा करैत छथि। अपन निर्णयक समर्थन करैत कहैत छथि जे विधि आ न्यायक संरक्षकक ई कर्त्तव्य छैक जे ओ अत्याचारीक आदंकसँ पवित्र जीवन बितौनिहार लोक सभक रक्षा करथि। चाहे ओ लोकनि एहि तरहक सहायता नहियो माँगथि। रामक अभिमत छनि जे जँ एहि कार्यकेँ सम्पन्न ओ कऽ सकताह, तखनहि हुनक वनवास सार्थक सिद्ध होयतनि।

राम, सीता आ लक्ष्मणक यात्राकेँ आगू वढ़बऽमे पंचवटी प्रमुख भूमिकाक निर्वाह करैत अछि। विधिक विडंबना किछु एहन छल जे सीता एहि घटनाक्रमक केन्द्रबिन्दु बनि जाइत छथि। पंचवटीमे सुपनेखाक आकस्मिक प्रवेशक प्रमुख आकर्षण रामक सौन्दर्य छल, मुदा बादक परिस्थिति सभ सीतोकेँ एहिमे घसीटि लेलकनि। सूर्पणखा मात्र रामक हृदय जीतक लेल सीताकेँ रामक हेतु अयोग्य सिद्ध करक प्रयास कयलक आ एही संदर्भमे सीताक सौन्दर्यक आलोचना सेहो कयलक। मुदा आश्चर्यक बात ई थिक जे परिहासप्रिय राम मात्र मनोरंजनक लेल ओहि महिलाकेँ भटकौलनि आ एकर बहुत भारी मूल्य हुनका चुकाबऽ पड़लनि। राजकुमार लोकनिक विनोदप्रियताकेँ वास्तविक बुझक क्षमताहीन सुपनेखा सीताकेँ अपन मार्गक अवरोध मानि हुनकापर टूटि पड़ल। मुदा एहि सम्पूर्ण प्रकरणमे सीता कखनो अपन मुँह नहि खोललनि। अंततोगत्वा एकरे परिणाम स्वरूप हुनक अपहरण रावण द्वारा भेल। वास्तवमे पंचवटीमे जे किछु घटित भेल से सभ अवैध, अहेतुक आ अनैतिक छल। मुदा विडंबना ई अछि जे दोसरक चूक आ असावधानीक कारण सुधंग साध्वी सीताकेँ नियतिक आखेट बनऽ पड़लनि। सीतासँ जँ कोनो चूक भेल तऽ ओ छल मात्र स्वर्ण-मृगक त्वचाक प्रति

अपन मनोकामना व्यक्त करब। तकर बाद मायावी मारीचक आर्तनाद सुनि लक्ष्मणकेँ तुरन्त राम लग जा हुनकर रक्षा करक लेल बेर-बेर औचित्यक सभ सीमाक अतिक्रमण कऽ बाध्य करब। यद्यपि ओ ई सभ सतर्कता आ सद्भावनासँ कयलनि, तथापि ई हुनकर बहुत नमहर चूक छलनि। हुनकहि जकाँ राम आ लक्ष्मण सेहो विवेकसँ काज नहि लऽ सकलाह। यद्यपि तीनू अपन-अपन विचार, वाणी आ आचरणमे असाधारण प्रज्ञा आ संतुलित रहनिहार छथि, तथापि नियतिक निरवरोध मार्गकेँ कियो रोकि नहि सकल। रावणकेँ एहि अनुचित कार्यकेँ करऽसँ रोकक मारीचक सभटा सत्प्रयास निरर्थक भऽ गेलैक आ जटायुक साहसपूर्ण संघर्ष सेहो सफल नहि भऽ सकल। जे होनी रहैक से भऽकऽ रहलैक। अंतमे एकर फल भोगऽ पड़लनि सहज सरल जानकीकेँ।

जनकनंदिनी अपन चूक ताधरि नहि बुझि सकलीह जाधरि रावण साधु वेशमे हुनक आश्रममे पहुँचि अपन वास्तविक स्वरूप आ दुष्ट आशय प्रकट नहि कयलक। यद्यपि अपन चूक बुझऽमे हुनका देरी भेलनि, तथापि जे विकट स्थिति हुनका सोझाँमे आबि गेलनि, तकरा ओ आत्माभिमान, साहस आ शालीनताक संग सामना कयलनि। सोझाँमे जे जेहन देखबामे अबैत अछि, तकरा ओ ताही रूपमे स्वीकार करैत छथि। साधुवेषमे आयल रावणकेँ ओ साधु बुझि साधुक संग जेहन व्यवहार करक चाही ओहने कयलनि। ओ तऽ साधु सन लगैत छल। ओ अतिथि-सत्कार स्वरूप ओकरा फल-जल आदि अर्पित कयलनि। इहो कहलथिन हमर पति कने कालमे अबैत छथि, अहाँ कने काल प्रतीक्षा करू। रावणक सदाशयतापर पूर्ण विश्वास कऽ ओकर प्रश्न सभक उत्तरमे अपना दऽ पूर्ण विवरण दऽ देलनि। मुदा जहिना ओकर धूर्तरूप प्रकट भेल, ओ ओकर मिसियो भरि परवाहि नहि कयलनि। निर्भीकतासँ ओकर कदाचारक खंडन कयलनि आ ओकरा धमकी दैत कहलथिन जे जँ ओ रामसँ शत्रुता मोल लैत अछि तँ ओकर प्राणक संकट अवश्यंभावी छैक आ ओ रामसँ बचि नहि सकैत अछि, से ओ कत्तहु जाकऽ नुकाय। रावणक मनोकामनाकेँ साफ-साफ ठोकरा अपन पतिक असाधारण व्यक्तित्व आ पराक्रमक विस्तारसँ वर्णन करैत छथि। अंततः अपनाकेँ रावणक पाशमे असहाय दशामे पाबि ओ त्राहि-त्राहि कहि जोरसँ चिकरैत छथि। एहन निःसहाय अवस्थामे जखन हुनका जटायु देखलथिन तँ ओहि पक्षीराजक साहस आ त्यागक ओ सराहना कयलनि। मुदा हुनका पश्चात्ताप भेलनि जे जटायु अपन प्राणक बिनु परवाहि कयनहि हुनक रक्षार्थ एतेटा युद्ध कयलनि आ प्राणोत्सर्ग कऽ देलनि। हुनक आन्तरिक इच्छा छलनि रामकेँ ई सम्पूर्ण वृत्तांत सुनयबाक लेल ताधरि

जीवित रहथि। बाटमे एकगोट पर्वतशिखरपर किछु वानरकेँ देखि ओ अपन किछु गहना ओतऽ खसा देलनि, जाहिसँ रामकेँ बादोमे हुनक पता लगयबामे सहायता भेटनि। आखिरमे ओ अशोकवनमे रावणक बंदी बनि गेलीह। एत्तहिसँ असली अर्थमे अपन प्रियदायिता, परम सुन्दरी सौगुण्य राशि तथा स्वार्थरहित प्रेम आ निर्भय त्यागक प्रतिमूर्त्ति सीताक खोजमे रामक संघर्षपूर्ण यात्रा अथवा अन्वेषण-अभियान आरंभ होइत अछि।

सौन्दर्यक खोजमे सम्पन्न ई अभियान, जे वास्तवमे रामायणक प्रमुख चरितार्थ थिक, सत्यसँ सौन्दर्यक क्षणिक वियोगसँ आरम्भ भऽ जीवनक एहि शक्ति सभवे चिरंतन संयोग साक्षात्कारमे सुखद संयोग आ समावर्तन पबैत छैक। एहि संयोगक समर्थ संधायकक रूपमे वाल्मीकि हनुमानकेँ प्रस्तुत करैत छथि। ई अभियान राम ओ लक्ष्मणकेँ पंचवटीसँ किष्किंधा पहुँचा दैत अछि। ई स्मरणीय थिक जे पंचवटीमे अपन आवास बनयबाक परामर्श रामकेँ महर्षि अगस्त्य देने रहथिन। किष्किंधा जाय सुग्रीवसँ मित्रता करक परामर्श कबंध देने रहनि। ई सूचना कबंधेसँ भेटल रहनि जे सुग्रीवकेँ रामक सहायताक आवश्यकता छनि, तँहि ओ रामक सहायता अवश्य करताह।

यद्यपि मुख्य रूपसँ सुग्रीवसँ मित्रता करक हेतु राम किष्किंधा पहुँचल रहथि, तथापि सुग्रीवक जिम्मा जे काज देल गेलनि, ओकरा संपन्न करऽमे हनुमान अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैत छथि। सीताक पता लगायब, हुनका चिन्हब आ हुनका सांत्वना देबेक टा नहि, अपितु हुनक कुशल-मंगल आ सुरक्षाक समाचार फेर राम धरि पहुँचयबाक काज ओ करैत छथि। एहि तरहेँ सीता-रामकेँ सुखद समागमक मार्ग प्रशस्त कऽ दैत छथि। एहि कार्य-निर्वहनक माध्यमसँ ओ सीता आ राम दुनूक निकट अबैत छथि, हुनक प्रशंसा, आत्मीयता आ आशीर्वादक पात्र बनैत छथि। करोड़ो वानर-वीरगणकेँ जे भार देल गेल छनि, ओहि सभकेँ ओ एकसरे सम्हारि लैत छथि। राति भरि अतिसावधानी आ कर्मठताक संग एकगोट अज्ञात प्रदेशमे सीताकेँ तकलाक बाद जखन अशोक वनमे देवीक दर्शन होइत छनि तँ अपनाकेँ अत्यन्त आश्वस्त, सम्मानित आ धन्य बुझैत छथि। सभ दृष्टिसँ श्रीस्वरूपिणी देवीक प्रसन्न रमणीय आकृतिकेँ देखि हुनका बुझि पड़लनि जे सभ सद्गुणक साकार रूप रामक आकृतिसँ एहि देवीक आकृति एकदम मेल खा रहल अछि, तँ हुनको आश्चर्यक ठेकान नहि रहलनि। मने-मन बेर-बेर विचारलोपर हुनक विश्लेषणात्मक बुद्धि ई नहि जानि सकल जे पति-पत्नीक आकृतिमे एते साम्य कोना घटित भऽ गेल? हुनका लोकनिक शारीरिक सादृश्य

देखि हुनका बुझि पड़लनि जे हुनका लोकनिक मन सेहो एही तरहेँ मिलैत-जुलैत होयतनि। गाछपर पात सभमे नुकाइत-नुकाइत जखन ओ देवी सीताकेँ निकटसँ देखबाक प्रयास करैत छथि तँ हुनक आँखि अपन प्रियतम रामक अगोचर मुदा सुसमाहित मुखाकृतिपर पूर्णरूपसँ केन्द्रित देखबामे अबैत छल। हुनक नयनक अयनमे हनुमान मात्र रामकेँ देखलथिन। तँहि वाल्मीकि सीताकेँ 'रामेक्षणी' (मात्र रामपर संलग्न नयनवाली) कहैत छथि। हुनक मुख-मंडल पूर्ण चंद्रक समान चारूकात सँ अन्हारकेँ हटौनिहार ज्योत्स्ना-वितानसँ सुशोभित अछि। ओ श्रद्धाक प्रतिमा आ आशाक आभाक रूपमे दृष्टिगोचर होइत छथि। मुदा विधिक विडंवनासँ अवगत आ प्रतिहत प्रतीत होइत अछि। तीनू लोककेँ आलोकित करऽबला हुनक सौन्दर्य, ऐश्वर्य, पवित्रता आ सहज सात्विकताक लेल लाख प्रयत्न कयलोपर हनुमानकेँ कोनो प्रतिमान नहि भेटैत छनि। हुनक उज्ज्वल नयनमे समदर्शिताक एक सुन्दर समीकरण पाबि हनुमान चकित भऽ जाइत छथि। हुनकर मन तुरन्ते राम लग पहुँचि जाइत अछि। अपितु कहक चाही जे अपन ई सभटा अनुभूति ओहीकाल रामकेँ कहक हेतु मनहि मन तत्काल ओ राम लऽग पहुँचि गेलाह।

जखन हनुमान एहि प्रकारेँ एकदम सोझेमे दृष्टिगोचर भेनिहारिक परम रमणीयतामे तल्लीन भऽ रहल छथि, तखने रावण अशोक वनमे प्रवेश करैत अछि आ सीताकेँ एहि बात हेतु मनेबाक प्रयास करैत अछि जे ओ ओकरा अपन स्वामीक रूपमे स्वीकार करथिन आ ओकर पट्टमहिषी बनथिन। एहिसँ कपीश्वर कुपित होइत छथि आ शांतचित्त भऽ देखैत छथि जे ई उत्तम साध्वी एहि कुत्सित प्रलोभनक समुचित उत्तर कोन प्रकारेँ देमऽबाली छथि। ओ देखैत छथि जे जानकी रावणक प्रस्तावकेँ तृण-समान बुझि ठोकरा दैत छथि। ओ धिक्कारि कहैत छथि, तोँ अपन व्यवहार ठीक कर। सीता पहिल बेर रावणकेँ साधुवेषमे देखने रहथि, तँहि ओ रावणकेँ सलाह दैत छथि जे भले गलतीसँ ओ जे सही रूप धारण कयने छल, तकर मर्यादा राखय। ओ ओकरा सचेत कऽ दैत छथि जे जँ ओ अत्याचार वा अनुनय-विनय करक प्रयास करैत अछि तँ ओकर सम्पूर्ण राज्य नष्ट भऽ जेतैक आ ओ अपनो नहि बँचि सकत। रामक दुर्दम्य पराक्रमक सोझाँमे कनेको काल टिकि नहि सकत। ओ स्पष्ट शब्दमे ओकरा कहैत छथि जे अपन आ अपन राज्यकेँ सर्वनाशसँ बचयबाक एक्केटा उपाय इएह छैक जे ओ रामक चरणमे अपनाकेँ समर्पित कऽ हुनक पत्नीकेँ ससम्मान घुरा देनि। मुदा रावण एहि चुनौतीपर बिल्कुल ध्यान नहि दऽ उनटे सीतेकेँ चुनौती दैत अछि जे जँ

दू मानक भांतर ओ ओकर बात नहि माननलि तँ ओकर भनसीया हुनकर मासुकेँ रान्हि ओकरा हेतु परसि देत। सीता पराङ्मुख भऽ ओकर उपेक्षा करैत छथि।

आब हनुमानकेँ विश्वास होइत छनि जे अशोक वनमे शिंशपावृक्षक तर वैसलि ई भद्र महिला वास्तवमे ओएह सती साध्वी छथि, जनिका प्राप्त करक हेतु राम धरती आ आकाश एक करक हेतु उद्यत छथि। रामक पतिपरायणा पत्नीमे हनुमानकेँ जे वास्तविक सौन्दर्य देखना गेल रहनि ओ इएह थिक आ इएह सौन्दर्य हुनक शारीरिक सौन्दर्यकेँ वेशी सुन्दर बना देलक अछि।

आब हनुमान सीताक समीप जा हुनकासँ वार्ता करक साहस बटोरि रहल छथि, जाहिसँ किष्किंधा घुरिकऽ रामकेँ हुनक सही पता दऽ सकथि। सीताक दृष्टि एखनधरि हनुमानपर नहि पड़लनि, तैं ओ हुनका अपना दिस आकृष्ट करक लेल रामकथाक संकीर्तन आरंभ कऽ दैत छथि—विशेषकऽ किष्किंधामे रामक प्रवेश आ वानर वीर लोकनिक संग हुनक परिचय आदि परवर्ती घटनाक्रमपर प्रकाश दैत। जखन रामक मधुर मनोहर नाम उच्चारण कयनिहार वानरक दिस सीताक दृष्टि प्रसारित होइत अछि तँ हनुमानकेँ नीचाँ उतरिकऽ देवीकेँ अपन परिचय देबाक साहस भेटि जाइत छनि। अपन परिचय आ हुनकर ओतऽ धरि पहुँचऽमे अपन सदाशयक सम्बन्धमे सेहो सीताकेँ आश्वस्त कयलाक बाद हनुमान हुनका रामक देल मुद्रिका दैत छथि। दुनू गोटाक बीचक संवाद आस्ते-आस्ते पारस्परिक रुचिक अनेकानेक विषय सभपर आत्मीयतासँ ओत-प्रोत वार्तालापक रूप धारण कऽ लैत अछि। परम साध्वी सीताक विश्वासकेँ पूर्णरूपसँ प्राप्त कयलाक बाद हनुमान हुनका सोझाँ एकगोट प्रस्ताव रखैत छथि जे हुनक समस्त दुःख आ वेदनाकेँ अचिरकालमे दूर करक हेतु हुनका कान्हपर बैसा तत्काल राम लऽग पहुँचा सकैत छथि। मुदा सीता एहि प्रस्तावकेँ स्वीकार नहि करैत छथि। एकरा हेतु ओ कतेको कारण कहैत छथि। प्रमुख कारण ई अछि जे अपन पत्नीक अपहर्ता ओतऽसँ प्रच्छन्न रूपसँ अपना लग बजा लेब रामक प्रतिष्ठाक अनुरूप नहि अछि। ओ स्पष्ट शब्दमे अपन अभिमत व्यक्त करैत कहैत छथि जे रामकेँ रावणसँ युद्ध कऽकऽ ओकरापर विजय प्राप्त करक छनि आ तकर बादे सगर्व आ सयश अपन पत्नीकेँ अयोध्या लऽ जेबाक छनि। आब हनुमानकेँ पूर्णरूपसँ विश्वास भऽ गेलनि जे ने की भौतिक आ बौद्धिक दृष्टिसँ, अपितु आध्यात्मिक चेतनाक दृष्टिसँ सेहो ई साध्वी राम सन उदात्त व्यक्तिक सहचरी बनवाक योग्यता रखैत छथि। जानकी आ हनुमानक बीच आदर्श तथा चिंतनसँ संबंधित जे विचार-विनिमय भेलनि

अछि, ताहिसँ हनुमानकेँ अनुमान होइत छनि जे सीताक तात्विक आ सात्विक स्तर कते उदात्त छनि। हुनक हृदय-कुहरक बीच विराजमान एही अलौकिक आ अंतरंग सौन्दर्यकेँ उद्‌भासित करबे कवि-मनीषीक काव्यार्थ छल, जे सुन्दरकाण्डकेँ सार्थक बना दैत अछि।

प्रायः कहल जाइत अछि जे सुन्दरकांडक प्रत्येक घटना, प्रत्येक गतिविधि, प्रत्येक शव्द आ प्रत्येक विचार सुन्दर छैक आ ओहिमे एहन कोनो बात नहि अछि जे सुन्दर नहि कहल जा सकय। एहि सुन्दर काव्य-खंडक सुन्दरतम सार तत्त्व परमांगना आ वरवर्णिनीक रूपमे दर्शन देनिहारि जानकीक सर्वतोमुख सौन्दर्य छैक। मात्र 'हँ' कहऽसँ उपलब्ध होअऽबला अपार लौकिक वैभवकेँ तृणवत् बुझि ठोकराकऽ जीवनक शाश्वत सुख आ आंतरिक सुषमाकेँ समृद्ध बनौनिहार आधारभूत सिद्धान्त सभपर निःस्वार्थ आ निर्भीक मनोवृत्तिक संग डटल रहक हेतु परमाणु ऊर्जासँ अधिक ऊर्जस्वित आत्म-तेजक अजस्र धाराक संप्रसारण अपेक्षित होइत अछि, जकरा विषाद-नंदिनी वैदेहीक रूपमे वाल्मीकि अपन सुन्दरकाण्डक सुन्दरतम कलाखण्डमे प्रस्तुत कयलनि अछि।

हनुमानक दिव्य तेजकेँ चिन्हऽमे मैथिलीकेँ अधिक काल नहि लगलनि। पर्याप्त समय धरि हुनकासँ वार्ता कयलाक बाद हुनकापर पूरा विश्वास भऽ जाइत छनि। आ ओ किछु एहन अंतरंग बात कहलथिन जे हुनका आ रामकेँ छोड़ि आर ककरो बुझल नहि छलैक। एहि प्रकारक व्यक्तिगत प्रसंगक वर्णन ओ एही लेल हनुमानसँ करैत छथि जाहिसँ राम ई सभ सुनि आश्वस्त भऽ जाथि जे ठीके हनुमानजी सीतासँ भेट कऽकऽ आबि रहल छथि। जखन हनुमान रामक अभिज्ञानक रूपमे देखयबाक हेतु कोनो आधार-वस्तुक चाह करैत छथि तँ सीता तत्काल अपन माथक चूड़ामणि दैत छथिन। हनुमानक प्रति हुनका मनमे एते आत्मीयता स्थापित भऽ जाइत छनि जे ओ हुनका विदा नहि करऽ चाहैत छथि। मुदा हुनका इहो बुझल छनि जे जते जल्दी हनुमान राम लग पहुँचताह, ओतबे जल्दी राम रावणक संहार कऽ हुनक दुःख दूर करथिन। तैं ओ अपन मनकेँ मना अंततः हनुमानकेँ किछु कालक हेतु विदा करैत छथि।

हनुमान गुप्तचरक रूपमे लंका छोड़िकऽ नहि जाइत छथि। ओ अपन आगमनसँ सभ नागरिक आ रावणोकेँ अवगत करा दैत छथि। ओ रावणकेँ सलाह दैत छथि जे ओ रामसँ क्षमा माँगि हुनक पत्नीकेँ घुरा देनि, अन्यथा अपन राज्यक सर्वनाशक लेल तैयार भऽ जाय। जखन रावण ई आदेश दैत अछि जे हनुमानक नाङरिमे आगि लगा सौंसे लंका घुमा दे तँ हनुमान एहि अवसरक लाभ उठा

सौंसे लंका डाहि दैत छथि। एहि अगुताइमे हुनका संदेह होइत छनि जे कत्तहु एहि अगिलग्गीमे सीता तँ ने जरि गेलीह। मुदा तुरन्ते किछु पुरजन अपनामे एहि बातक चर्चा करैत छथि जे सौंसे लंका जरि गेल आ सीता सुरक्षित छथि, तखने हनुमानकेँ अनुभव होइत छनि जे सीताकेँ आगि जरा नहि सकैत छनि, कारण ओ अग्निक समान पवित्र छथि (न नशिष्यति कल्याणी नाग्निरऽनौ प्रवर्तते)। वास्तवमे सीता सेहो एहिना रावणक आदेशक बात सुनि हनुमानक सुरक्षाक सम्बन्धमे चिन्तित भऽ जाइत छथि आ तुरन्ते अग्नि देवतासँ हाथ जोड़ि अनुरोध करैत छथि जे रामक ओतऽसँ शांतिदूत बनिकऽ आयल हनुमानक हेतु ओ शीतल बनि जाथु। वाल्मीकिक शब्दमे कपीश्वरक तापकेँ अपने ताप बुझि अपन इष्टदेव पावकसँ पावन मनसँ परम पावनी प्रार्थना करैत छथि :

यद्यस्ति पतिशुश्रूषा यद्यस्ति चरितं तपः।
यदिवात्वेक पत्नीत्वं शीतोभव हनुमतः।।

(जँ हमरा अपन पतिक प्रति हमर सेवा भावनाक कोनो मूल्य अछि, जँ हमरा आचरणमे तपोनिष्ठा कोनो-ने-कोनो रूपमे विद्यमान अछि, आ जँ हमरा दुनू गोटाक मनमे एक दोसराक प्रति अनन्य अनुराग आ आत्मविश्वास अछि तँ हे हमर देवता! अहाँ हनुमानक लेल शीतल बनि जाउ)।

एकर संगहि आर तीन गोट श्लोक सभकेँ जानकी उच्चरित करैत छथि तेँ हुनक मांत्रिक महिमा हनुमानक पवित्र आत्माकेँ पीड़ासँ मुक्त कऽ हुनक शरीरकेँ सुख-शीतल रखैत अछि। एतबे नहि, जे आगि हुनका जरयबाक हेतु लगाओल गेल ओएह आगि जरबऽबलाक समस्त नगरीकेँ जरा देलक। ई चमत्कार देखि अपने हनुमानकेँ सेहो आश्चर्यजनक प्रसन्नता होइत छनि आ हुनका एहि बातक आत्मबोध होइत छनि जे सीताक मंगलकामना रामक लोकोत्तर महिमा आ पूज्यपिता पवनक पावकता सभ एक्के संग हुनका हेतु फलित भेल। वाल्मीकिक वाणी एहि प्रसंगमे प्रांजल आ प्रभावशाली बनि अपन अभिव्यंजनाकेँ मर्यादा आ महिमासँ अलंकृत कऽ दैत अछि। एहि प्रसंगकेँ अक्षर-अक्षर पढ़ैत काल पाठक एहि बातक प्रत्यक्ष अनुभव करैत अछि जे रामायणक एहि पंचम कांडकेँ कवि-कोकिल सुन्दरकांड नाम किएक देलनि?

एहि घटनाक बाद हनुमान फेर एक बेर सीताक दर्शन करैत छथि, मात्र हुनकासँ विदा लऽ हुनक संदेश राम धरि जहिनाक तहिना पहुँचयबाक हेतु। मैथिली शांतिदूत हनुमानकेँ आशीर्वाद दैत छथिन, कारण थोड़ क्षणक लेल ओ सीता-रामक मानस-समागम घटित कऽ देलनि। ओ हनुमानसँ कहैत छथि जे एक

मास धरि ओ अपन प्राणकेँ सम्हारिकऽ राखि सकैत छथि आ तकर बाद ओकर रक्षाक भार रामक कार्यदक्षतापर निर्भर छनि। जखन हनुमान ई संदेश रामकेँ निवेदित करैत छथि तँ महात्मा राम एहूसँ पैघ वेदनाकेँ स्वर दैत कहैत छथि जे अधर्म आ अत्याचारक भूमिमे अपन पत्नीक दयनीय दशाक करुण कथा सुनलाक बाद हम एको क्षण अपन प्राणक रक्षा नहि कऽ पाबि रहल छी। एहि शब्दक संग राम हनुमानक आत्मनियत सेवा-भावनाक प्रत्युपकारस्वरूप अपन आलिंगनक मालासँ हुनका अलंकृत करैत छथि।

साँझसँ साँझ धरि पूरे एक दिनक अंतरालमे संपन्न सुन्दर कांडक समस्त कार्यवृत्त एहि सबल संकल्पकेँ जन्म दैत अछि जे लंकाक दिशि तुरंत रथयात्राक अभियान आरंभ करबाक अछि, जाहिसँ लंका आ अयोध्या दुनू ठाम शांति आ सुरक्षा स्थापित कयल जा सकय। जखन युद्ध आरंभ होइत अछि तँ सम्पूर्ण संघर्षक केन्द्र-बिन्दु होअक कारणे सीताकेँ नाना प्रकारेँ प्रताड़ना, प्रलोभन आ चुनौती सभक सामना करऽ पड़लनि अछि। ई सभटा तंत्र रावण बनबैत अछि आ ओकर बेटा इन्द्रजित ओकरा कार्यान्वित करैत अछि। एहि कुटिल योजना सभक प्रतिरोध प्रकट करक हेतु विभीषणकेँ निष्कासित कऽ देल जाइत छैक आ कुंभकर्णकेँ अपन अभिमतपर गंभीरतापूर्वक विचार करक परामर्श देवाक सुखद निद्रामे सुतौल गेल छैक। सत्य आ विश्वासघातक बीच युद्ध आरंभ होइत छैक। राम द्वारा प्रेषित शांतिदूत अंगदक बातपर रावण बिल्कुल ध्यान नहि दैत अछि। अपन छल-कपट, छद्म आ क्षुद्र आचरण आरंभ कऽ दैत अछि। रामक बनौल मृतक आकृति आ ओहि प्राणहीन छविकेँ सीताक सोझाँमे प्रस्तुत करैत अछि आ अन्ट-शन्ट बजैत कहैत अछि जे पहिल आक्रमणमे हमर योद्धासभ राम आ लक्ष्मणकेँ समाप्त कऽ देलक। सहज-सरल सीता पहिने तऽ एहिपर विश्वास कऽ लैत छथि, मुदा रणभूमि सँ प्राप्त सूचनापर तुरत कार्यवाही करक शीघ्रतामे रावणक ओहि स्थानसँ प्रस्थान करितहि ओ कल्पित आकृति सीताक आँखिसँ ओझल भऽ जाइत अछि। एहिसँ सीता बुझि जाइत छथि जे ई सभ धोखा छल। वास्तवमे ई सूचना रणभूमिमे सुग्रीवक प्रथम आक्रमणक थिक।

सीताक मनोबल नष्ट करक दोसर प्रयास तखन होइत अछि जखन इन्द्रजित अपन नागपाशक प्रयोगसँ राम आ लक्ष्मण दुनूकेँ बान्हि दैत छनि। एहि अवसरक लाभ उठा नागपाशमे अचेत पड़ल राम आ लक्ष्मणकेँ देखयबाक लेल सीताकेँ पुष्पक विमानपर रणभूमि पठाओल जाइत छनि। एहि प्रसंगमे सेहो सीता प्रत्यक्षपर विश्वास करैत छथि आ अपन वैधव्यपर निष्ठुर नियतिकेँ दोष दैत छथि। मुदा

विमानमे हुनका संग आयलि त्रिजटा नामक राक्षसी सीताकेँ विश्वास दैत छनि जे राम आ लक्ष्मण दुनू जीविते छथि आ स्वस्थ छथि, कारण हुनका लोकनिक मुखाकृति देखलासँ बुझि पड़ैत अछि जे ओहिमे चेतना छैक। एकटा आर बात अछि, पुष्पक विमान कखनो विधवा स्त्रीकेँ वहन नहि करैत अछि। एहि तरहेँ सीता एहि आघातसँ पुनः अपन पूर्वस्थितिकेँ प्राप्त करैत छथि आ शांतचित्त भऽ जाइत छथि।

फेर एकबेर इन्द्रजित रामक मनोबल शिथिल करक हेतु सीताक एकगोट कल्पित मूर्ति बनाकऽ हनुमानक सोझेमे ओहि मूर्तिक वध कऽ दैत अछि। अपन पिता रावणक कहलापर इंद्रजित द्वारा परिकल्पित ई अंतिम कुतंत्र छल। आव तँ बुद्धिमान हनुमानकेँ सेहो विश्वास भऽ जाइत छनि जे सत्ये इंद्रजित सीताक वध कऽ देलकनि। जहिना ई समाचार रामकेँ हनुमान सुनबैत छथिन, राम वेहोश भऽ जाइत छथि। मुदा विभीषण रामकेँ आश्वस्त करैत कहैत छथि जे ई सभ असुरमाया थिक।

इंद्रजितक वधसँ अत्यंत व्याकुल भऽ रावण सीताक वध करऽ अशोक वनमे अबैत अछि। मुदा सुपार्श्वक परामर्शपर रावण ओहि विचारकेँ छोड़ि दैत अछि। राम रावणक अंतिम युद्धमे रामक विजय आ रावणक संहार होइत अछि। तत्पश्चात् जखन राम संदेश लऽकऽ हनुमान सीताजी लऽग पहुँचैत छथि तँ सीता एकटा एहन उदात्त मनोभूमिकापर पहुँचि जाइत छथि, जतऽ अद्भुत मानसिक संतुलन बृहत्सामक रूप धारण करैत अछि। हनुमानकेँ अपना दिस अबैत देखितहिँ, ओ मन, वचन आ चेष्टामे मौन भऽ जाइत छथि, मुदा मुख-मुद्रापर कोनो प्रतिक्रिया नहि होइत छनि, कने काल बाद एक मास पहिने हनुमानसँ भेल वार्तालापक स्मरण करैत छथि आ फेर अपन प्रभुक विजयक अनुमान कऽ प्रसन्न भऽ जाइत छथि। सीता माताक प्रसन्न गंभीर मुखमुद्राकेँ ध्यानसँ देखि हनुमान सुखद समाचार सुगठित शब्दमे सुनबैत छथि। तइयो सीता अपन गंभीरता बनौने रहैत छथि। जखन हनुमान रामकेँ संदेश सुनबैत छथिन तखनो सीताकेँ अपनाकेँ व्यक्त करक हेतु सक्षम शब्द नहि भेटैत छनि। अंतमे जखन हनुमान साहस कऽ पुछैत छथि जे माताजी अहाँ की सोचि रहल छी? अहाँ हमरासँ बजैत किएक ने किछु छी? तखन ओ अश्रुसिक्त स्वरमे कहैत छथि—"हम आनंदक अतिरेकसँ आत्मविभोर भऽ गेल छी हनुमान! कनेकाल धरि हम किछु नहि कहि सकलहुँ। असलमे हम विचारि रहल छलहुँ जे कतेटा उपकार अहाँ हमर कयलहुँ, एकरा लेल हम अहाँकेँ की दऽ सकैत छी आ देवाक हेतु हमरा लऽग अछिए

की?'' जानकीक ई बात सुनि हनुमान अपनाकेँ अत्यंत सम्मानित अनुभव करैत छथि। सीताक चारूकात एखनो हिंसक असुरांगना सभकेँ देखि सीतासँ निवेदन करैत छथि जे एक सालसँ अहाँकेँ कष्ट देनिहारि एहि राक्षसी सभकेँ क्षण भरिमे समाप्त करक हमरा अनुमति दी। एहिपर धर्मशीला देवी कहैत छथि नहि ई उचित नहि अछि—किएक तँ ओ सभ जे किछु कयलक, ओ अपना मनसँ नहि कयलक। ओकरा सभकेँ एहि प्रकारक व्यवहार करक हेतु कहल गेल छलैक आ ओसभ प्रभुक आदेशक पालन कयलक अछि।'' फेर ओ कहैत छथि जे हुनका ई सभ यातना सहऽ पड़लनि मात्र अपन निठुर नियतिक कारणे आ ताहि हेतु ककरो दोषी ठहरैब उचित नहि छैक। जानकीक उदात्तता ओहि समय महोन्नत शिखरकेँ स्पर्श करैत अछि जखन ओ कहैत छथि, ''बेटा, एहि संसारमे एहन के अछि जे कहियो कोनो अपराध नहि कयने होयत?'' ओ हनुमानकेँ बुझबैत छथि जे जे किछु भेल सभ बिसरि जाउ, एहि राक्षसी सभकेँ क्षमा कऽ दियौक। ओ तँ अपन स्वामी श्रीरामक प्रसन्न मुखमंडलकेँ यथाशीघ्र देखऽ चाहैत छथि आ हनुमानसँ अनुरोध करैत छथि जे रामकेँ हमर ई कामना कहि देबनि।

जखन रामकेँ ई संदेश भेटैत छनि तँ ओ विभीषणसँ कहैत छथि जे सीताकेँ हुनका लग आनल जानि। कारण जे सीताकेँ सभ लोक देखि सकनि। ओ इहो चाहैत छथि जे सीता मंगलस्नान कऽ नीक वस्त्र पहिरि-ओढ़ि सभ प्रकारक आभूषण धारण कऽ आबथि। यद्यपि सीता एहि औपचारिकता सभमे समय व्यर्थ गमबऽ नहि चाहैत छथि। ओ तत्काले रामक दर्शन करऽ चाहैत छथि, तथापि विभीषण हुनकासँ निवेदन करैत छथिन जे एहि विषयमे रामक आदेशक विधिवत् पालन करब समीचीन होयत। तदनुसारे सीता राजमर्यादाक पालन करैत रामसँ मिलन हेतु निर्धारित स्थानपर विभीषणक संग पहुँचैत छथि। किछु अस्वाभाविक लागऽबला एहि सभ लक्षणकेँ देखितो सीता आनंद, आश्चर्य आ अनुरागक मिश्रित भावना लऽ राम लग पहुँचि जाइत छथि। कते नमहर अन्तरालक पश्चात् प्रभुक दर्शन मात्रसँ हुनक मुख-मंडल मेघसँ मुक्त पूर्ण चन्द्रमा जकाँ सुशोभित अछि। हुनक सम्पूर्ण शारीरिक-मानसिक थकान पलभरिमे लुप्त भऽ जाइत अछि आ ओ बड़ अपेक्षाक संग अपलक नयनसँ रांम दिस देखैत छथि आ देखिते रहि जाइत छथि। मुदा लक्ष्मण, सुग्रीव आ हनुमान एहि अभूतपूर्व अप्रसन्नताक परिवेश देखि चिंतित भऽ जाइत छथि आ बुझिए ने पबैत छथि जे हुनका लोकनिक स्वामीक मुखमुद्रामे एहन परिवर्तन अकस्मात किएक भेल? सीता सेहो राम दिस उत्कंठा आ उद्विग्नतासँ देखऽ लगैत छथि आ रामक वचन सुनक हेतु लालायित होअऽ लगैत छथि।

वास्तविक परीक्षाक रुक्षता एत्तहिसँ आरंभ होइत अछि। राम अपना सोझाँ माथ निहुरौने ठाढ़ि सीताकेँ संबोधित करैत छथि—एक पतिक रूपमे नहि, अपितु जगत्पतिक रूपमे। अपन आ अपन सहधर्मचारिणीक प्रतिष्ठापर कोनो ध्यान देने बिनु राम स्पष्ट शब्दमे हुनकासँ कहैत छथि जे ओ युद्धमे जे विजय प्राप्त कयलनि अछि, ओ अपन पत्नीकेँ पुनः प्राप्त करक हेतु नहि, अपितु मुख्य रूपसँ हुनका प्रति जे घोर-अपमान भेलनि अछि, तकरा धो देबाक हेतु आ संसारसँ अमंगलकेँ हँटयबाक हेतु, संगहि मंगल भावनाकेँ स्थापित करक अपन संकल्पकेँ साकार बनयबाक हेतु कयलनि अछि, आ एहि अनुष्ठानमे सुग्रीव, हनुमान आ विभीषणक महत्वपूर्ण योगदान रहलनि अछि।

ई शब्दसभ सीताक आँखिकेँ विशाल आ अश्रुपूरित बना दैत अछि। एते पैघ यातना आ विरह-वेदनाक पश्चात् एहि प्रकारक बात सुनऽ पड़तनि, एहि बातक ओ कल्पनो ने कयने रहथि। एहूसँ कठोर आघात ओ तखन अनुभव कयलनि जखन राम आगू ई कहलथिन जे दोसराक घरमे एते दिन धरि रहल स्त्रीकेँ ओ फेर अपना संग नहि लऽ जा सकैत छथि। एहि बातक संभावना बड़ कम अछि जे रावण सन विषयासक्त व्यक्तिक विषाक्त नयनसँ सीता सन परम सुन्दरी स्त्री अपनाकेँ बचा सकय। अंतिम प्रहारक रूपमे राम एते धरि कहि दैत छथि जे आब सीता लक्ष्मण, भरत, सुग्रीव अथवा विभीषणमेसँ जनिका चाहथि, हुनक वरण कऽ सकैत छथि।

रामक प्राणमे प्राण बनि रहनिहारि सीताकेँ विश्वास नहि भऽ पओलनि जे ई वाक्य रामक मुँहसँ सुनि रहल होथि। ई शब्द हुनका अविश्वसनीय लगलनि। हुनक मन उद्वेलित भऽ गेलनि। हुनका एहन सन बुझि पड़लनि जेना कियो जड़िएसँ हुनका उखाड़ि देने होइन, जेना कोनो हाथी कोनो लताकेँ गाछसँ फराक कऽ फेकि देने होइक। ओ तेहन हृदयविदारक रूपसँ कानऽ लगलीह, ताहूपर एहन स्थानपर सभक सोझेमे एहन बात सुनि लाजे अपनेमे नुका गेलीह। रामक कर्कश शब्दक शर-स्पर्शसँ मर्माहत मानिनी स्त्री अविरल नोरक धार बहबऽ लगलीह, कते कालक बाद जखन आँखिक नोर सुखा गेलनि तँ मुँह पोछि अपन पतिकेँ संबोधित करक साहस कऽ कहैत छथि : "स्वामी, हमरा एक गोट सामान्य स्त्रीगण बुझि अहाँ अपनी एक गोट प्राकृत पुरुषक रूपमे एहि प्रकारक बात किएक कहि रहल छी प्रभु! हम ओहन नइ छी जेहन अहाँ हमरा बुझि रहल छी। जँ अहाँकेँ हमरा विषयमे एते निकृष्ट विचार छल तँ ओही समय हनुमानक द्वारा एहि बातक संकेत मात्र कहबा दितहुँ तँ अहाँकेँ एते श्रम नहि करऽ पड़ैत आ हमर ई पार्थिव शरीरो

एखन धरि समाप्त भऽ गेल रहैत। हमरा ई देखि अत्यन्त दुःख भऽ रहल अछि जे अहाँकेँ हमरामे मात्र एकगोट स्त्री देखना जाइत अछि, अपन पतिपरायणा पत्नी नहि। हमरा लोकनिक पवित्र वैवाहिक सम्बन्धक सभ बात अहाँ बिसरि गेलहुँ, संगहि हमर श्रद्धा आ निष्ठाकेँ सेहो बिसरि गेलहुँ।''

एहि विनीत आ अनुनयात्मक निवेदनक कोनो प्रत्युत्तर रामसँ नहि भेटलापर सीता लक्ष्मण दिसि ताकि कहैत छथि जे हमरा हेतु एक गोट चिता बनबा दियऽ, किएक तँ हमरा लेल आब ओएह टा एकमात्र अवलम्ब अछि। एहि रोषावेश सँ अत्यंत व्याकुल लक्ष्मण राम दिसि तकैत छथि आ हुनक मुखाकृतिक संकेतक अनुरूप ओहिना करैत छथि। मिथिलेशक कन्या रामोसँ दयाक याचना नहि करैत छथि। ओ मात्र न्याय माँगैत छथि जे हुनका नहि भेटलनि। तँहि अपन शरीरकेँ चितामे समर्पित करक हेतु अपन मनकेँ तैयार कऽ लैत छथि, कारण जे हुनक पतिकेँ आब हुनकर आवश्यकता नहि छनि। अग्निदेवतासँ ओ प्रार्थना करैत छथि :

यथा मे हृदयं नित्यं नापसर्पति राघवात्।
तथा लोकस्य साक्षी मां सर्वतः पातु पावकः।।

(जेना हमर हृदय रामसँ हँटिकऽ आर कत्तहु ने जाइत अछि, ओहिना समस्त संयमकेँ साक्षी आ सभकेँ पवित्र कयनिहार अग्निदेवता सर्वथा हमर रक्षा करथु।)

एहि प्रकारेँ तीन आर श्लोकक विधिवत् पाठ कयलाक पश्चात् सीता दुनू हाथ जोड़ि नमस्कारक मुद्रामे निर्भय मनसँ चितामे प्रवेश करैत छथि आ ओतऽ एकत्रित विशाल जनसमुदायक संग-संग अंतरिक्षक अगोचर दैवी निरीक्षक सेहो एहि दृश्यकेँ देखैत रहि जाइत छथि। चारूकात भीषण हाहाकार होइत अछि। राम सेहो हृदयक आंतरिक वेदनासँ ग्रस्त भऽ समाधिस्थ भऽ अन्तरक कोनो रहस्यमयी चित्-शक्तिपर गंभीर चिंतनमे मग्न बैसैत छथि। एतेमे सभ देवतागण एकत्रित भऽ रामसँ अनुरोध करैत छथि जे ओ सीताक सहज सिद्ध पवित्रताकेँ जानि हुनका स्वीकार करथि, किएक तँ आगि जते पवित्र, ओतबे जानकी सेहो। अंतमे अग्निदेवता अपनहि आबि सीताकेँ रामक हाथमे समर्पित करैत कहैत छथि जे लिअऽ अपन सीता, जनिका कोनो पाप स्पर्शो नहि कऽ सकल। तँहि हम आज्ञा दैत छी जे अहाँ अपन कठोरता छोड़ि हिनका स्वीकार करी। एहिपर राम अग्निदेवताक आज्ञाक पालन करैत छथि आ अन्य देवतागणक अभिलाषा पूर करैत छथि। हुनका लोकनिसँ ओ अपने कहैत छथि जे हम जानि-बूझिकऽ सीताक पवित्रताक ई परीक्षा करबा देल, जाहिसँ संसार प्रत्यक्ष देखि सकय जे ओ कते पवित्र छथि आ हुनकर पति कते धर्मनिष्ठ छथिन।

एहि प्रकारेँ अग्निपरीक्षाक समापन सुखांत होइत अछि। मुदा सीताकेँ चिता-प्रवेश करैत देखि रामक मौन रहि जायब आ सभक सोझाँमे सीताकेँ कठोर शब्देँ संबोधित करब रामक चरित्रक आलोचनाक आधार बनबैत अछि। आइयो रामक अनन्य उपासक धरि रामक एहि आपवादिक आचरणक आलोचना करैत अछि। मुदा रामक संकेत पाबि लक्ष्मणक अपन सूक्ष्म बुद्धिसँ काज करब एहि रहस्यक किछु समाधान प्रस्तुत करैत अछि। संभवतः सीता सेहो मने-मन ई अनुभव कऽ रहल होयतीह जे स्वर्णमृग मारीचक आर्तनाद सुनि लक्ष्मणकेँ रामक रक्षा हेतु प्रस्थान करबऽमे हमर कने आतुरता आ ताही प्रसंगमे लक्ष्मणक चरित्रपर शंका प्रकट करब आदि रामक मनमे हेतनि आ तकरे प्रतिक्रिया आब भऽ रहल छनि, जाहिसँ हम अपन चूक बूझि सकी। तकरे ओ संभवतः प्रायश्चित्त आ परिमार्जन थिक। खाहे कारण जे हो, साध्वी तपस्विनी सीतापर आव जे किछु बीतल, ओ सभक लेल अशोभनीय थिक, मुदा इहो सही अछि जे सीते सन उत्तम साध्वी टा एहन कठोर परीक्षामे सफल उतरि सकैत छथि।

एहूसँ एकटा आर कठोर परीक्षा सीताक सहनशीलताक प्रतीक्षा कऽ रहल छल। ई पहिलका परीक्षाक अनुपूरक थीक। लंकामे जे अग्निपरीक्षा भेल, तकरा ओतऽ उपस्थित किछुए लोक देखने छल। मुदा अयोध्याक नागरिक आ सम्पूर्ण प्रजा सीताक पवित्रताक संबंधमे एखनो शंकालु अछि। ई एक गोट व्यापक लोकप्रवादक जन्म जन्म देलक। नरेशक रूपमे राम एकर उपेक्षा नहि कऽ सकलाह। तँहि सीताक परित्याग करऽ पड़लनि बड़ अनिच्छा आ निर्ममतापूर्वक। एत्तहु सीता उच्चतर नैतिक शिखरपर अपनाकेँ प्रतिष्ठित कऽ लैत छथि। यद्यपि परित्यागक सम्बंधमे हुनका बहुत विलम्बसँ पता लगैत छनि। ओ ककरो एहि हेतु दोष नहि दैत छथिन, ने रामेकेँ आ ने लक्ष्मणेकेँ। एकर अतिरिक्त, ओ रामक निर्णयक सराहना करैत छथि, कारण ई निर्णय राज्य तथा राजाक मर्यादा आ प्रतिष्ठाक अनुरूप अछि आ आदर्श नरेशक हेतु प्रजा सर्वोपरि अछि, ओना महारानीक राजाक हृदयपर सर्वाधिक अधिकार होइत छैक। मुदा रामक योग्यतम जीवनसहचरीक रूपमे सीता अपन सुख-सुविधाए टाकेँ नहि, अपितु जीवनक न्यूनतम आवश्यकता धरिक त्यागक हेतु तैयार छथि, अयोध्या आ मिथिला, दुनू राष्ट्रक हितमे। ई दुनू राष्ट्र हुनक थिकनि आ ओ एहि राष्ट्रक छथि।

ई सभ भेलाक बादो राम एहि विषयमे अपन पतिपरायणा पत्नीक प्रति न्याय नहि कऽ पबैत छथि, ओना हुनकर विवशता बूझऽमे अबैत अछि। मुदा अपन दंडनीतिमे कने तँ ढील दऽ सकैत रहथि, कारण हुनक पत्नी गर्भवती रहथिन

आ अयोध्याक भावी नरेश (नरेश द्वय) कें जन्म देबऽबाली रहथि। जे से, विडम्बना एहि बातक जे जाहि महारानीक प्रसव राजमहलमे उच्चतम सुख-सुविधाक बीच होइत, से प्रकृतिक दयापर निर्भर छथि। मुदा, प्रकृति माताक कारुण्यक ई परिणाम छल जे एकरा हेतु सभसँ अनुकूल आ आदर्श स्थान आ व्यक्तिक सान्निध्य प्राप्त भेल। महर्षि वाल्मीकि एहि अवसरक उत्सुक प्रतीक्षा कऽ रहल रहथि। सद्गुण, सौन्दर्य आ सौशील्यक परम आदर्श नारी जानकीक जीवनक ई अंतिम आश्रय महर्षि वाल्मीकिक आश्रम बनि जाइत अछि।

जगदीश्वरक वाणी जगतक व्यथामे मुखरित होइत अछि। ई चिरंतन सत्य सौहार्द आ तपस्याक प्रतिमूर्त्ति मैथिलीक जीवनक अंतिम चरणमे साकार भऽकऽ सोझाँमे अबैत अछि। एहन सुयोग राम सन राजाधिराजो अपन पुत्र-हेतु उपलब्ध नहि करा पबितथि। रामक एहि प्रतिरूप द्वयकें अपन आश्रममे पलैत-बढ़ैत देखि वाल्मीकि रामायणक प्रणयनक प्रेरणा प्राप्त करैत छथि। राम-पत्नीक सात्विक सान्निध्यसँ एहि प्रेरणाकें आर अधिक बल भेटैत छैक। देवर्षि आदर्श मानवक रूपमे प्रतिपादित कऽ वाल्मीकिकें परामर्श दैत छथिन जे हुनके अपन काव्य-नायक बनाबथि। नायिका तँ हुनकर आश्रमेमे छथिन। सात्विक सान्निध्यसँ एहि प्रेरणाकें आर बल प्राप्त होइत छैक। वाग्देवीक स्वामी विश्वविधाता वाल्मीकिकें सरस्वतीक सतत साक्षात्कारक वरदान दऽ हुनक दृष्टिकें सबल आ वाणीकें सरस बनबैत छथि। जखन काव्य तैयार भऽ जाइत अछि तँ ओहि काव्यनायकक पुत्रक मधुर कंठमे सर्वत्र संप्रसारित करक काज ओ करैत छथि। अयोध्याक अघोषित दुनू राजकुमारक ई सम्मोहक काव्य-गायन एकदिन काव्यनायकक कानमे पहुँचि जाइत अछि।

ताहि कालमे राम अश्वमेध यज्ञक अनुष्ठान कऽ रहल रहथि। यज्ञशालामे नाना देशक नरेश राजप्रमुख प्रजा-प्रतिनिधि आ ऋषि-मुनि आसीन रहथि। दुनू राजकुमार लव ओ कुश जखन रामकथा रसायनसँ श्रोतागणकें मंत्रमुग्ध कऽ दैत छथि, प्रशंसाक स्वर सभास्थलीकें रसाप्लावित कऽ दैत अछि। रामकें ई जानि सुखद आश्चर्य होइत छनि जे ओ दुनू बालक हुनकहि आत्मज थिकथिन। मुदा हुनका लोकनिकें ताहि रूपमे स्वीकार नहि करैत छथि। ओ वाल्मीकिकें अपना ओतऽ आमंत्रित करैत छथि आ हुनकासँ अनुरोध करैत छथि जे ओ सीताकें सेहो अपना संग लाबथि, जाहिसँ ओ सभक समक्ष अपन मातृत्व आ सतीत्वकें प्रमाणित कऽ सकथि। वाल्मीकि एहि आमंत्रणकें सहर्ष स्वीकार करैत छथि, किएक तँ सीताक हेतु अपन पतिक आदेशक पालन करऽसँ बढ़ि जीवनमे आर कोनो पावन कर्त्तव्य

नहि भऽ सकैत छनि, यद्यपि जीवन भरि ओ कठोर यातनाकेँ एक तरहक तपस्या मानि स्वीकार कयलनि।

रामक सहज उत्तराधिकारी दू गोट पुत्ररत्नकेँ जन्म देलाक पश्चात् अपन पवित्र पातिव्रत्यकेँ प्रमाणित करक हेतु जखन रामक दरबारमे रामक पत्नी सीता ठाढ़ि छथि तँ ओहि रोमांचक दृश्यकेँ देखि सभ सभासदक रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइत छनि। समयक गतिक संग आब साध्वी सीता सत्य अर्थमे वैदेही (देह बुद्धिसँ अतीत) बनि गेल छथि। एहि आध्यात्मिक परिवेशमे ओ अपन माता भूदेवीसँ अनुरोध करैत छथि जे अपन कोरामे अपन बेटीकेँ कने स्थान देथि। ओ अपन मातासँ स्मरण करबैत छथि जे हुनकहि कोखिसँ प्रकट भऽ हुनकर ई बेटी एहि ग्रहदेवताक आश्रयमे जीवऽबला जीवनधारी सभकेँ प्रत्यक्ष प्रमाणक संग बुझा देलनि जे नर आ नारी मानव जीवनक दू गोट परम सत्य थिक आ आशा-निराशाक बीच सुख-दुःख एही परम सत्यक प्रकट रूप अछि। ई काँच आ कठोर लागि सकैत अछि, मुदा वास्तवमे ओ स्वभावसँ परिपक्वताक प्रेरक तत्त्व थिक।

धरतीमातासँ संबोधित करैत व्यक्त कयल गेल हुनक अंतिम उद्‌गार अछि :

यथाहं राघवादन्यं मनसापि न चिंतये।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति।।
मनसा कर्मणा वाचा यथा रामं समर्चये।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति।।
यथैतत् सत्यमुक्तं मे वेद्मि रामात् परं न च।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति।।

(जँ हम रघुकुलक यशस्वी राजा रामकेँ छोड़ि आर ककरो मनमे कहियो चिंतन धरि नहि करैत होइ तँ हमर माय धरती हमरा अपना कोरामे स्थान देथि।

जँ हम मन, कर्म आ वाणीसँ मात्र रामक आराधना करैत होइ तँ हमर माय धरती हमरा अपना कोरामे स्थान देथि।

हमर ई कहब जे रामकेँ छोड़ि आर कोनो दोसर पुरुषकेँ नहि जनैत छी जँ सत्य तँ हमर माय धरती हमरा अपना कोरामे स्थान देथि।)

अपन जीवनसंगी रामक इच्छा आ आज्ञाक अनुसार सीता अपन पवित्रता आ अनन्यताकेँ ऋषि आ नागरिक सभक समक्ष प्रमाणित करक हेतु राजदरबार मे अवश्य आयलि छथि—मुदा अपन माता धरतीक कोरामे सदाक लेल विलीन होयबाक हेतु, नहि की आयोध्या घुरि ऐहिक सुख भोगक हेतु। संगहि ई साध्वी

एहि वैदिक ऋचाक सार्थकताकेँ अपन आचरण द्वारा निरूपित कयलनि अछि जे मर्त्य अमर बनैत अछि मात्र कर्मकांड वा प्रजनन वा भौतिक संपत्तिक बले पर नहि, अपितु अमरत्व प्राप्त होइत अछि त्याग, विराग आ लौकिक विषय-वासना सँ स्वैच्छिक निवृत्तिक कारणे।

मैथिलीक माता माधवी वास्तवमे भूलोकमे रहनिहार समस्त प्रजाक जननी छथि, दिन-राति दर्शन-प्रेमीगणकेँ दर्शन दैत छथि आ अपन प्रिय तनया परमांगनाकेँ कंठ लगा तुरंत घुरि जाइत छथि।

अपन पतिप्राणा पत्नी सीताकेँ माधवीक मधुमय छायामे लीन होइत देखि रामक अश्रुपूरित नयन शून्यमे परम शून्यकेँ व्यर्थ तकैत छथि, मुदा अपन सुखक एकदम्म चिन्ता बिनु कयने अपन सर्वस्व अपन पतिकेँ महान् बनयबाक हेतु समर्पित कयनिहारि सीता नहि देखना जाइत छथि। ई श्रीस्वरूपिणी अपन सम्पूर्ण जीवन महान् कार्यमे लगौने रहथि जे मात्र स्त्रीटा कऽ सकैत अछि। राम एही हेतु महान् छथि किएक तऽ सीता हुनकोसँ महान् छथि। तँहि तँ रामायणक सार्वत्रिक प्रशंसा करैत लोक एहि अमर काव्यक सम्बन्धमे कहल करैत छथि :

''सीतायाश्चरितं महत्''

4

त्रिमूर्त्ति

अयोध्यासँ मिथिला, किष्किंधा आ लंका धरि रामक अभियानकेँ आगू बढ़ाबऽमे रामायणक तीनटा प्रमुख पात्रक महत्त्वपूर्ण योगदान छनि। ओ लोकनि छथि : विश्वामित्र, लक्ष्मण आ हनुमान।

रामक अंतर्निहित दिव्यताकेँ अविष्कृत कऽ मानव-कल्याणक हेतु विश्वमे ओकरा संप्रसारित करक श्रेय विश्वामित्रकेँ भेटैत छनि। एकटा समय छल जखन विश्वामित्र तपोनिष्ठामे वशिष्ठक प्रतिद्वंद्वी रहथि। मुदा रामकेँ अपना संग पठयबामे संकोच कयनिहार दशरथकेँ एहिमे निहित लोकहितक भावनाक संबंधमे आश्वस्त करक हेतु विश्वामित्र ब्रह्मर्षि वशिष्ठक सद्भावना आ साधु सम्मतिक आश्रय लेलनि अछि। आदंकवादी राक्षस सभसँ अपन यज्ञक रक्षा कराबऽमे विश्वामित्र रामक सहयोग मात्र दस दिनक लेल मंगने रहथि, मुदा हुनकर यात्राक अवधिकेँ चौदह दिन आओर बढ़ाकऽ जानकीसँ दाशरथीक विवाहो करौलनि। स्थूल दृष्टिसँ देखलापर एहन सन बुझि पड़ैत अछि जे ताड़काक संहारसँ लऽकऽ अयोध्याक चारू राजकुमारक विवाह मिथिलाक चारिटा अद्वितीय राजकुमारी सभक संग संपन्न कराबऽ धरिक सभ घटना अपने घटित भेल। परंतु ध्यानसँ देखलापर पता चलैत अछि जे एहि सभ गतिविधिक पाछू कोनो दैवी वरद्हस्त काज कऽ रहल अछि, जकरा विश्वामित्र ऋषिमानस परिकल्पित आ आयोजित कयलनि अछि। विश्वामित्र तँ तपस्याक तापस रूप रहथि। अहल्याक शाप-विमोचन सेहो पूर्व परिकल्पित योजना अछि, जेना मिथिलामे शतानंद आ विश्वामित्रक संवादसँ स्पष्ट होइत अछि। रामकेँ आगू जाकऽ जे महान् कार्य करक छनि, ताहि हेतु आवश्यक सामाजिक, सांस्कृतिक आ आध्यात्मिक परिसंपदा प्रदान करक लेल सेहो विश्वामित्र एहि पूर्वरंगक आयोजन करैत छथि, जाहिसँ अयोध्या घुरऽ धरि हुनका एते साधन-संपत्ति अपना अधीन रहनि जे दंडक आ लंकामे घटित होअऽबला विशिष्ट कार्यक्रममे काज आबि सकय।

एतऽ वाल्मीकिक अध्येताकेँ दू टा सूक्ष्म बातपर ध्यान देबऽ पड़तनि। पहिल

बात ई थिक जे विश्वामित्र अपन कार्यसिद्धि हेतु मात्र रामक सहयोग मंगने रहथिन, मुदा हुनक पिता दशरथ हुनकर छोट भाइ लक्ष्मणकेँ सेहो संग लगा देलथिन। विश्वामित्र एहि अतिरिक्त सुखद सहयोगकेँ मौन भावसँ स्वीकार करैत छथि। दोसर बात ई अछि जे सीताक संग रामक विवाह संपन्न होइतहिँ ओ अपन निवासस्थान घुरि अबैत छथि। एहि प्रकारेँ अयोध्यासँ मिथिला आ मिथिलासँ अयोध्या दुनू यात्रामे तीन गोट यात्रीक त्रितय सदिखन बनल रहैत अछि। विश्वामित्र, राम आ लक्ष्मणक त्रयी मिथिला पहुँचैत अछि तँ सीता राम आ लक्ष्मणक एकटा नवत्रयी अयोध्यामे प्रवेश करैत अछि। एहि तरहेँ रामक सम्पूर्ण अयनमे जकरा वाल्मीकि 'रामायण'क संज्ञा दैत छथि—अंतिम विजय आ सीताक पुनःप्राप्ति धरि त्रितयक ई समाहार कोनो-ने-कोनो रूपमे सभदिन बनले रहैत अछि। एहि सार्वत्रिक त्रिक, त्रितय या त्रिमूर्त्तिक परिकल्पना दिसि वाल्मीकि एकटा हल्लुक सन संकेत करैत छथि, जखन ओ राम आ लक्ष्मणकेँ संग लऽकऽ विश्वामित्र ओहिना जा रहल छथि जेना ब्रह्माजीक पाछू दुनू अश्विनी कुमार चलैत छथि आ तीन-तीन टा फनबला साँप सन बुझि पड़ैत छथि।

मिथिला जयबाक मार्गमे रामकेँ तीन विभिन्न प्रकृतिक स्त्रीगण देखबामे अबैत छनि। एहिमेसँ पहिल थिक ताटका जे कि तमोगुणक आसुरी मूर्त्ति थिक आ जकर संहार कऽ राम जनकल्याण कयलनि अछि। दोसर थिकीह अहल्या जे रजोगुणक भस्मराशि बनिकऽ शापसँ मुक्त होएबाक लेल तपोलीन रहथि, जनिकर उद्धार राम कयलथिन, हुनक दांपत्य जीवनकेँ पुनर्वासित कयलथिन। तेसर छथि सीता—सौंदर्य, वैभव आ श्रीक प्रतिमूर्त्ति, जनिका राम अंगीकार कयलनि आ हृदयसँ हृदयक स्वागत कयलनि आ सौभाग्य आ सम्मान देलनि। इहो एकटा त्रयी थिक।

राजा दशरथक तीनू रानी सेहो त्रयीक एकटा समुच्चय बना लैत छथि। वाल्मीकि एहि तीनूकेँ, ह्री, श्री, आ कीर्तिक सांकेतिक प्रतीक बनौलनि अछि। तीनूमे सर्वाधिक संस्कारसंपन्न कौशल्याकेँ बीजाक्षर 'ह्री' सँ मिलौल गेल अछि आ ललितभाषिणी लक्ष्मणक माताकेँ 'श्री'क प्रतिकृतिक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। मितभाषिणी, मृदुभाषिणी, कोमल आ निर्मलहृदय, आचरणमे निःस्वार्थ आ परहितक भावना आर जे किछु नीक छैक, हितकारी छैक आ कल्याणकारक छैक ओकर संवर्धन करऽमे सहयोग देनिहारि सुमित्रा वास्तवमे तीनू रानीक बीच प्रबल योगसूत्रक रूपमे छथि। हुनक दुनू पुत्र लक्ष्मण आ शत्रुघ्न, समर्पित भावसँ राम आ भरतक सेवामे लागल रहैत छथि। ओ कैकेयीक विरुद्ध कहियो एको शब्द नहि बजैत छथि जखन की

वशिष्ठ सन ब्रह्मर्षि सेहो सभक सोझेमे हुनकर निंदा करैत छथि। राम आ सीताक संग ओ अपन पुत्र लक्ष्मणकेँ वनवास पठयबाकाल हृदयपूर्वक आशीर्वाद दैत छथि। हुनकर मंत्रपूरित मंगलकामना छनि :

रामं दशरथं विद्धि मां विद्धि जनकात्मजाम्।
अयोध्यामटवीं विद्धि गच्छ तात यथासुखम्।।

(रामकेँ अपन पिता दशरथक समान देखू आ जानकीकेँ हमरा जकाँ मातृत्वक भावनासँ देखू। वनकेँ अयोध्या बुझू आ जतऽ जाउ निके ना रहू।)

''सीताकेँ हमरे समान बुझू'' कहऽमे सुमित्रा अपनाकेँ सीतासँ अभिन्न आ एकात्मक मानैत छथि। तँहि वाल्मीकि दुनूकेँ 'श्री'क प्रतीक कहैत छथि। वास्तवमे दुनूक सहज सात्विकता संसारक समस्त सुविज्ञताकेँ अपनामे समेटि लैत अछि।

एहि त्रितयक तेसर पात्र कैकेयी छथि। हिनका वाल्मीकि 'कीर्त्ति'क उपाधि देलनि अछि। कविक एहि परिकल्पनासँ बुझि पड़ैत अछि जे कीर्तिकामिनी कैकेयीक वास्तविक नामे कीर्ति छनि—''कीर्ति, तोहर नाम कैकेयी।'' ध्यान देबाक बात थिक जे वाल्मीकि कैकेयीक हेतु कोनो बीजाक्षरसँ युक्त सांकेतिक नाम नहि दैत छथि, किएक तँ हुनकर दृष्टि अधिकार, आडंबर, अहंकार, वैभव आदिसँ युक्त लालसामय जीवनक तात्कालिक आनंद धरि सीमित रहैत अछि, ताहिसँ आगू ओ आत्मा परमात्माक बात सोचियो नहि पबैत छथि।

वनवासक हेतु प्रस्थान करैत काल सेहो फेर एकटा त्रितय अपनहि संगठित भऽ जाइत अछि। ई तीनू पारिवारिक जीवन आ राजभोगक प्रलोभन छोड़िकऽ कर्त्तव्य भावना, समर्पण आ निर्लिप्तताक संग वन्य जीवनक स्वागत करैत छथि। कैकेयीक वर-याचनामे सीता आ लक्ष्मणक उल्लेख नहि छल। हुनका दुनू गोटाकेँ वन जयबाक आवश्यकता कोनो नहि छलनि, मुदा ओहोसभ रामक सेवा करऽ आ हुनका दुनू संकल्पकेँ सार्थक बनाबक हेतु अपन इच्छासँ वनवासक लेल तैयार भऽ जाइत छथि। राम हुनका अपना संग लऽ नहि जाय चाहैत रहथि, किएक तँ हुनका लोकनिकेँ सहज रूपेँ प्राप्त सुखसँ वंचित करब हुनका नीक नहि लगनि। मुदा महाकविक महामानव कखनो एकांत नहि रहि सकैत छथि, कमसँ कम तीन व्यक्तिक बीच ओ अपनाकेँ सदा देखैत छथि। लक्ष्मण तँ नित्य सहायक छथिन आ तेसर व्यक्तिक चयन समयसापेक्ष होइत अछि। मिथिलाक यात्रामे ई स्थान विश्वामित्र लेलनि आ आब वनवासक समय सीताकेँ ई अवसर भेटलनि। ई देखिकऽ आश्चर्य होइत अछि जे एहि संदर्भमे सीतोसँ अधिक प्राथमिकता

लक्ष्मणकेँ भेटलनि अछि, यद्यपि सीता लक्ष्मणसँ पहिने वन जयबाक लेल रामक अनुमति विधिवत् प्राप्त कऽ लेलनि। बादमे लक्ष्मण बुद्धिमानीसँ ई अनुज्ञा हासिल कऽ लेलनि। जे होअय, अंततः तीनू प्रस्थानक लेल प्रस्तुत भऽ जाइत छथि—मुदा कोमहर?

जहाँधरि प्राथमिकताक प्रश्न छैक, सीता आ लक्ष्मण दुनूक अनुरोध पहिने भेल छल, तँहि स्वीकृतिमे सेहो हुनकर स्थान पहिल छनि। लक्ष्मण बादमे एकर चर्चा करैत छथि। मुदा लक्ष्मणक बुद्धि सूक्ष्म छनि। जखनसँ कैकेयी आ दशरथक समाद लऽकऽ सुमंत्र रामकेँ अंतःपुर अनलनि, तखनेसँ लक्ष्मण रामक संगे रहैत छथि, खाली अंतःपुर नहि जाइत छथि। जखन राम अपन माता कौशल्याकेँ बुझबैत रहथि जे पिताजीक आदेशक पालन करबे धर्मसम्मत अछि, तखन लक्ष्मण ओत्तहि रहथि। बनवासक बात छोड़ि घरमे अपने लग रहक जखन कौशल्या आग्रह कऽ रहल रहथि आ राम तकरा मानक लेल तैयार नहि होइत रहथि, तखन लक्ष्मणक मनमे किछु क्षोभ उत्पन्न भऽ रहल रहनि। एतेधरि जे एकटा उदात्त पिताक उदात्ततम पुत्रक प्रति जे घोर अन्याय भऽ रहल अछि, तकर विरुद्धमे एकटा न्यायसम्मत विद्रोह ठाढ़ करक बात ओ सेहो कहि रहल रहथि। मुदा राम संतुलन बनौने छथि, अति सतर्कताक संग आओर सत्य, धर्म, परिवारिक प्रतिष्ठा, आ मानव-मर्यादाक सात्विक समर्थन करैत छथि। अंत धरि ओ माताक आशीर्वाद प्राप्त कऽ लैत छथि। लक्ष्मणक भावावेशकेँ शांत करक प्रयासमे राम हनका कहैत छथि—

धर्ममाश्रय मा तैक्ष्ण्यं मद्बुद्धिरनुगम्यताम्।

(धर्मक आश्रय लऽकऽ अपन उग्रता आ व्यग्रताकेँ छोड़ू। हमर बुद्धिक अनुसरण करू।)

रामक बातकेँ लक्ष्मण अक्षरशः अपनबैत छथि। तँहि तँ ओ ने मात्र हुनक बुद्धिक अनुगमन कयलनि अछि, अपितु वनवासक मार्गमे हुनके संग चलक संकल्प सेहो कयलनि अछि। एही आधारपर ओ रामकेँ कहैत छथि जे अहाँ हमरा वन जयबाक अनुमति पहिने दऽ देलहुँ अछि, तँहि आब एहि प्रश्नपर पुनर्विचार करक कोनो प्रसंग नहि छैक। आब राम निरुत्तर भऽ जाइत छथि।

सीता आ लक्ष्मण दुनू रामक अयनमे आगू-आगू रहिकऽ हुनक मार्गमे आबऽबला अवरोधकेँ हँटेबामे तत्परता देखबैत छथि। अंतर मात्र एतबे छैक जे सीता स्पष्ट शब्दमे कहैत छथि जे हम आगू-आगू चलिकऽ अहाँक बाटकेँ कुश-कंटक सँ मुक्त कऽ दैत छी (अग्रतस्ते गामष्यामि मृदंती कुशकंटकान्) जखन की लक्ष्मण

बड़ विनम्रतापूर्वक कहैत छथि जे हम अहाँक अनुसरण करैत आगू-आगू धनुष हाथमे धेने चलब (अहंत्वानुगमिष्यामि वनमग्रे धनुर्धरः)। दुनूक हेतु उपयुक्त शब्दक प्रयोग करऽमे वाल्मीकिक वाक्-संस्कृतिक पता चलैत अछि। अंतमे जखन सुमंत्र प्रस्थानक लेल रथ आनिकऽ तीन गोटाक समक्ष ठाढ़ करैत छथि तँ सीता दुनू राजकुमारक वस्त्र, आयुध, तथा विदाइक समय ससुर द्वारा प्रेमस्वरूप देल गेल वस्त्र आ आभरण लऽकऽ पहिने रथपर बैसि जाइत छथि। सीताक बैसि गेलापर दुनू राजकुमार सेहो रथपर बैसि जाइत छथि। रामायणक ई तीनू प्रधान पात्र (सीता, राम आ लक्ष्मण)क अयोध्या छोड़ि वन चलक ई दृश्य महाकवि वाल्मीकिक गहन अंतर्दृष्टिक स्पर्शसँ एते मार्मिक बनि जाइत अछि जे एहि प्रसंगक प्रत्येक गतिविधि, कथन आ भावुक परिवेश मानवजातिक इतिहासमे जनमानसपर एकटा अमिट मुद्रा अंकित कऽ देलक अछि।

राजपरिवारक ई तीनू सदस्य जहिना अयोध्यासँ प्रस्थान करैत छथि, सौँसे राजधानी हुनका पाछू चलक प्रयास करैत अछि। अधिकांश नागरिक पहिल राति तमसा नदीक तटपर एहि तीनू प्रधान पात्रक लगमे बितबैत अछि। राम कोनो-ने-कोनो लाथे एहि शुद्ध जनताकेँ छोड़ि कत्तहु दूर अपन रथ आगू बढ़ा लैत छथि। गंगा नदी पार कयलाक बाद सुमंत्रकेँ सेहो अनिच्छासँ अयोध्या घुरऽ पड़ैत छनि। आब वनवासी त्रिमूर्त्ति एकदम एकसर रहि जाइत छथि।

लक्ष्मणक रामक संग वन जायब मात्र संयोगे नहि छल। वनवासमे रामक संग रहब हुनकर भाग्येमे लिखल छल। हुनकर माता सुमित्रा एही बातकेँ साधु भाषामे कहैत छथि। हुनक वाक्य छल—"पुत्र तोँ तँ वनवासक लेल जन्म लेने छह" (सृष्टस्तं वनवासाय)। रामक राज्याभिषेक लेल निर्धारित समयमे जँ भरत अयोध्यामे होइतथि तँ बात किछु आओर होइतैक। ओहि दशामे गतिविधि कोन दिशामे चलितैक, एकर कल्पनो करब कठिन छैक। मुदा जाहि प्रकारेँ घटना घटि रहल छल, ताहिमेसँ एकटा बात स्पष्ट भऽ रहल छल जे भरतक अयोध्या घुरऽ सँ पहिने रामक राज्याभिषेक संपन्न होअय, ई दशरथक उत्कट कामना छलनि। संगहि कैकेयीक सेहो संकल्प छल जे भरतक घुरऽसँ पहिने राम अयोध्या छोड़िकऽ चल जाथि। तँहि कोनो दैवी संकल्प एहि घटनाक्रमक पाछू सक्रिय छल। एकरे वाल्मीकि अपन भाषामे 'यदृच्छा' कहैत छथि। जे घटना अपनहि ढंगसँ घटैत अछि, ओ एही कोटिमे अबैत अछि।

बेर-बेर भरत वनवासक स्वागत करैत रामक स्थानपर अपने चौदह वर्षक वनवास स्वीकार करक अपन प्रबल इच्छा प्रकट करैत छथि। रामकेँ अयोध्या घुराकऽ

आनि आ सिंहासन स्वीकार करक लेल ओ अनुनय-विनय करैत छथि। सत्य कें अपन पराक्रम बुझिकऽ चलनिहार राम मुदा बदलल परिस्थितिक संग सलाह करक लेल तैयार नहि होइत छथि, अपितु भरतकें ओ बुझयबाक चेष्टा करैत छथि जे सत्यसंघ राजा दशरथक सत्यनिष्ठाक सम्मान करब हुनक पुत्रक प्रथम आ पावन कर्तव्य थिकनि। अंततः भरतकें रामक अयोध्या घुरऽ धरि हुनक प्रतिनिधित्व करक हेतु हुनका द्वारा देल खराम लऽ कऽ अयोध्या घुरहि पड़लनि।

एहि तरहेँ राम, सीता आ लक्ष्मण चौदह वर्षक वनवासक अवधि विधिवत् व्यतीत करक लेल कृतसंकल्प भऽकऽ प्रस्थान करैत छथि। एहि अवधिमे सीता आ लक्ष्मण मात्र रामक साहचर्यसँ संतुष्ट नहि होइत छथि, अपितु वनवासक सभ प्रमुख घटनामे महत्त्वपूर्ण भूमिका निमाहैत छथि। लक्ष्मण कुशल वास्तुशिल्पी छथि, तँहि चित्रकूट आ पंचवटीमे सुंदर पर्णशाला बनबैत छथि। एकर अतिरिक्त प्रतिदिन ओ सीता आ रामक हेतु फल आ जल आनल करैत छथि आ राति भरि जागि कऽ हुनका लोकनिक सुरक्षाक ध्यान रखैत छथि। सीता-रामक मन प्रसन्न राखऽ लेल आवश्यक वातावरण बनबैत छथि आ समय-समयपर समयोचित परामर्श सेहो देल करैत छथि। राम दुनूक सेवासँ संतुष्ट भऽकऽ हुनक सेवा-भावनाक प्रशंसा कयल करैत रहथि।

राम जकाँ लक्ष्मण सेहो हास्यप्रिय रहथि। सुपनेखाक संग परिहास करऽमे लक्ष्मण सेहो सक्रिय भाग लेलनि। मुदा ई परिहास तीनूक लेल महग पड़ल। जखन राम चौदह हजार राक्षसक संग एकसरे लड़ैत रहथि तँ ताहि कालमे रामक आदेशसँ लक्ष्मण सीताक सुरक्षाक सम्पूर्ण दायित्व बड़ निष्ठा आ सतर्कताक संग निमाहलनि।

लक्ष्मणक बुद्धि कुशाग्र छनि। ओ रामकें सतर्क भऽ कहलनि जे संसारमे स्वर्णमृग संभव नहि भऽ सकैत अछि आ ई तँ वास्तवमे मारीच थिक जे एहि रूपमे आबिकऽ हमरा लोकनिकें धोखा दऽ रहल अछि। सीताक लगसँ लक्ष्मण कें हँटेबाक हेतु मारीच जखन रामक स्वरक अनुकरण करैत आर्तनाद कयलक तखनहुँ लक्ष्मण एहि धूर्तताकें चीन्हि लेलनि। लक्ष्मणक बात ने राम सुनलनि आ ने सीता, कारण दुनूपर भाग्यक सम्मोहन व्याप्त छल। लक्ष्मणक सभसँ नमहर गुण छल सोझ-साझ स्वभाव, निर्भीकता आ अंतःकरणक शुद्धता, यद्यपि ओ कखनो-कखनो उद्विग्न भऽ जाथि। मुदा ओ कहियो एहि बातक लेल दुराग्रह नहि कयलनि जे हुनके बात अंततः मानल जानि। दोसराक बात ध्यानसँ सुनक हेतु ओ सदिखन तत्पर रहथि। सीता जखन लक्ष्मणकें राम लग जाय लेल एकदम बाध्य कऽ देलनि तँ लक्ष्मण अनिच्छुक रहितो भविष्यकें भाग्यपर छोड़ि हुनक आज्ञाक

पालन कयलनि। पिताक अनिर्दिष्ट आदेशपर रामक वनवास स्वीकार करब लक्ष्मणकेँ एकदम्मे पसिन्न नहि रहनि, मुदा जखन राम अपन विवेकसँ निर्णय कऽ लेलनि, तखन लक्ष्मण हुनक निर्णयकेँ सही मानि वनवासमे हुनका संग रहलाह। जखन भरत नमहर सेना लऽकऽ चित्रकूट पहुँचि रहल रहथि, तखन हुनक सदाशयपर लक्ष्मणकेँ शंका अवश्य भेलनि, मुदा जखन राम हुनका कहलथिन जे भरत ओहन नहि भऽ सकैत छथि जेहन अहाँ सोचि रहल छी तँ तुरंत लक्ष्मण शान्त भऽ कऽ गाछपरसँ उतरि अबैत छथि। जखन कखनो लक्ष्मणक मन विक्षुब्ध होइत छनि तँ ओकर कारण रामक प्रति हुनक अनन्य भावने छनि। वास्तवमे रामायणक सम्पूर्ण इतिवृत्तमे रामक सभसँ निकट आ निरंतर संग देनिहार पात्र मात्र लक्ष्मणे टा छथि जे जन्मसँ लऽकऽ अंतिम कालधरि रामक संगे रहलाह। तँहि वाल्मीकि लक्ष्मणक उपनाम 'लक्ष्मिवर्धन' देलनि अछि। हुनक समर्पित जीवन-दर्शनक सार थिक रामक संवर्द्धन।

रावण द्वारा सीताक अपहरण होयबाक पश्चात् रामकेँ सांत्वना दऽकऽ हुनका शारीरिक, मानसिक, नैतिक आ आत्मिक धैर्य ओ स्थैर्य प्रदान कयनिहार एकमात्र व्यक्ति लक्ष्मणे छथि। जखन राम शोकाकुल भऽकऽ रोष आ आवेशमे निरपराध पर्वत, निरीह नदी, आ अनिंद्य वनस्पतिकेँ नष्ट करक हेतु उद्यत भऽ जाइत छथि, किएक तँ एहिमेसँ कियो बेर-बेर पुछलोपर सीताक पता नहि कहैत छनि तँ लक्ष्मणे हुनका सांत्वना दऽकऽ आश्वस्त कऽ दैत छथि जे सीताक पता अवश्य लागत, आ कोनो एक व्यक्तिक अपराधक कारण समस्त सृष्टिकेँ अस्त-व्यस्त कऽ देब समीचीन नहि थिक। तँहि ने राम लक्ष्मणकेँ अपन प्रधान मित्र मानिकऽ हुनक सम्मान करैत छथि! असलमे रामक हृदयमे सीताक वियोगसँ जे रिक्तता आबि जाइत अछि तकरा लक्ष्मणे भरक प्रयास करैत छथि। एहि रिक्ततातेँ वास्तवमे अधिक सार्थकताक संग हनुमानक समागम भरैत अछि आ ताहिसँ लक्ष्मणकेँ सेहो कने आफियत भेटैत छनि। यद्यपि रामक अयनिकामे मित्रक मर्यादा सुग्रीव निमाहैत छथि, तथापि वास्तविक कार्यसाधक बनिकऽ रामक काजक निर्वहन हनुमाने करैत छथि।

रामक अयन (रामायण)क तेसर चरण किष्किंधासँ आरंभ होइत अछि आ एहि चरणमे रामक संग लक्ष्मण आ हनुमानक सहभागितासँ तीनू अपन भूमिका निमाहैत अछि। गंगाक पावन धाराकेँ देखिकऽ रामकेँ अपन मधुरभाषिणी मैथिलीक कल्याण-कारिणी वाणीक स्मरण बेर-बेर होइत छनि। अत्यंत भावुक आ संवेदनशील स्वरमे राम लक्ष्मणकेँ कहैत छथि जे गंगाक प्रत्येक लहरी आ ओकर तटपर चमकऽवला प्रत्येक कंकड़ सीताक स्मरण करा रहल अछि, जनिकर मृदु-मधुर

उच्चारण हुनक स्मृतिकेँ चिर-नवीन बना दैत अछि। गंगाक पार उतरलापर दुनू राजकुमार भिक्षुरूपमे हुनके लोकनिक दिस अबैत हनुमानकेँ देखैत छथि। दुनू हाथ जोड़ि खोजी दृष्टिसँ तकैत पहिने ओ अपन परिचय दैत छथि आ फेर अपन स्वामी सुग्रीवक राज्यच्युति होयबाक उल्लेख करैत छथि। जखन हनुमान राम आ लक्ष्मणकेँ आकारमे विद्यमान देवता मानिकऽ हुनक मुखमुद्रासँ प्रसारित सुगंधक प्रशंसा करैत छथि तँ राम सेहो हनुमानक विनय, विवेक, शालीनता आ संस्कारसंपन्न सात्विक अभिव्यंजना आदि विशिष्ट गुण सभक मुक्तकंठसँ सराहना करैत छथि। हृदय, मस्तिष्क आ आत्मावेँ आलोकित कयनिहार हुनक वाणी सुनिकऽ राम सुग्रीवक भाग्यक सराहना करैत छथि, जनिका एहन योग्य व्यक्ति 'वित्त सचिव' (हनुमान अपन परिचय देबाकाल अपना लेल एही पदनामक प्रयोग कयलनि अछि)क रूपमे भेटलथिन अछि। रामायणमे हनुमानक पहिल दर्शन इएह थिक आ प्रथम दर्शनेमे राम हुनक मुखमंडलपर पसरल उज्ज्वल शोभा आ हुनक मुँहसँ प्रकट होअऽबला प्रसन्न आ प्रबोधिनी वाणीक प्रशंसा करैत छथि।

मनहि मन हनुमानक विषयमे एते प्रशस्त धारणा रखितहुँ, राम हुनकासँ कते दिन धरि सोझाँ-सोझी गप्पो नहि करैत छथि। प्रथम दर्शनक प्रशंसा सेहो लक्ष्मणेकेँ संबोधित छल आ लक्ष्मणेसँ हनुमानकेँ वार्तालाप होइत छनि। ई संवाद दुनू दिसिसँ समान रूपसँ संतुलित आ परिनिष्ठित चलैत रहैत अछि, जकर फलस्वरूप ऋष्यमूक पर्वतपर राम आ सुग्रीवक संकल्पित समागम होइत अछि। ऋषि लोकनिक मौन साधनाक केन्द्र थिक ऋष्यमूक पर्वत। दुनू राजकुमारकेँ ऋष्यमूक धरि अपन कान्हपर बैसाकऽ लऽ जयबाक हनुमानक प्रस्ताव राम द्वारा जखन स्वीकृत होइत अछि तँ हनुमान अपनाकेँ धन्य मानैत छथि। एतहिसँ सेवा-संवादक पूर्वरंग तैयार होइत अछि। अंततः रामक दिव्य वर्चस्विताक लग सुग्रीवकेँ आनऽमे हनुमान सफलता प्राप्त करैत छथि। तकर बाद ओ एकांतमे लक्ष्मणसँ वार्ता करैत छथि आ आगूक घटना सभक मूक साक्षी बनि जाइत छथि। जखन सुग्रीव आपन मित्रताक प्रतीक रूपमे रामक सोझाँ अपन बाँहि पसारैत छथि तँ राम सेहो हुनका कंठ लगा लैत छथि आ पारस्परिक सद्भावना आ सहयोगक आश्वासन दैत छथि। हनुमान दुनू गोटाक मैत्रीकेँ अग्निदेवताक सान्निध्यमे एकटा औपचारिक अनुष्ठानक रूप दऽकऽ ओकरा पवित्र बनबैत छथि।

ई पवित्र अनुष्ठान ऋष्यमूकसँ कने दूरपर मलय पर्वतपर संपन्न होइत अछि। आब सभटा वार्ता सोझे राम आ सुग्रीवक बीच होइत अछि। हनुमान ताहिमे तखने शामिल छथि जखन बीचमे हुनका बजौल जाइत छनि, अन्यथा ओ मात्र उत्प्रेरक

अभिकर्ताक भूमिका निमाहैत यथासमय अपन सम्मति, संयोजन आ सान्त्वनाक माध्यमे हुनक सेवा करैत छथि। रामक परोक्ष सहायताक बलपर जखन सुग्रीव अपन भाइसँ युद्ध करऽ चलैत छथि तखनो हनुमान तटस्थ द्रष्टाक रूपमे राम आ सुग्रीवक संग जाइत छथि। दुनू बेर युद्धक समयमे उपस्थित रहथि, मुदा उपस्थित एहि लेल रहथि किएक तँ हुनको उपस्थित रहक छलनि।

हनुमान तखनहि अपन मुँह खोलि किछु बजैत छथि जखन तारा अपन पतिक संग परलोक जयबाक बात कहैत छथि। ओ कत्ते तरहेँ हुनका बुझबैत छथिन जे कालक निर्णयक क्यो प्रतिरोध नहि कऽ सकैत अछि आ तँहि हुनका एहि बातसँ आश्वस्त रहक चाही जे हुनकहि पुत्र अपन पिताक उत्तराधिकारी बनिकऽ पति-वियोगक क्षतिपूर्त्ति करताह। तथापि तारा एहिसँ संतुष्ट नहि होइत छथि। हुनका तखने सान्त्वना भेटैत छनि जखन राम अपने हुनका आश्वस्त करैत कहैत छथि जे बदलल व्यवस्थामे सेहो हुनका पहिने जकाँ पूरा सुख-सुविधा भेटतनि। ई बात राम अत्यंत सांकेतिक भाषामे कहैत छथि आ हनुमान सन कुशाग्रबुद्धि ओकरा तत्काले बुझि जाइत छथि। राम द्वारा अनुष्ठित वालि-वध अथवा ताराक यथास्थितिक संबंधमे हुनका देल गेल आश्वासनपर हनुमान अपने कोनो टिप्पणी नहि करैत छथि। धर्मक मूर्त्तिरूप रामक एहि निर्णयकेँ ओ भगवत्-संकल्प न्यायोचित समाधान मानि लैत छथि। एहिसँ हनुमानकेँ एकटा लाभ होइत छनि। अत्यंत जटिल समस्याक समाधान करक हेतु राम कोना अपन क्रिया आ प्रतिक्रियाक प्रति सजग आ सावधान रहैत छथि, एहि बातकेँ आस्ते-आस्ते बुझक हुनका अवसर भेटैत छनि।

हनुमानक दृष्टिकोण सदा पूर्वाग्रहसँ मुक्त रहैत छनि आ हुनक वाणीमे शब्दक संतुलित प्रयोग देखबामे अबैत अछि। वालिक दाह-संस्कार भऽ गेलाक बाद सुग्रीव अपन बानर प्रमुख सभक संग रामक आदेशक प्रतीक्षामे ठाढ़ रहैत छथि। ककरो किछु कहक साहस नहि होइत छैक। मात्र हनुमान राम लग जाकऽ हुनकासँ अनुरोध करैत छथि जे कृपापूर्वक ओ किष्किंधा पधारिकऽ एहि महान् रज्यक सिंहासनपर उपयुक्त व्यक्तिकेँ प्रतिष्ठित कऽ राज्यकेँ पुनर्वासित करथि। ध्यान देबाक बात थिक जे ओ सुग्रीवक बिनु नाम लेनहि राज्यमे स्वामित्वक जे रिक्तता उत्पन्न भऽ गेल छैक, ओकर पूर्त्ति करक अनुरोध करैत छथि। एहि प्रसंगमे ओ अत्यंत उपयुक्त शब्द 'स्वामि संबंध'क प्रयोग कयलनि अछि। निर्णय ओ रामपर छोड़ि दैत छथि जे कि सर्वथा उपयुक्त अछि। आब राम पहिल बेर हनुमानसँ वार्ता करैत हुनक पहिल प्रस्तावक उत्तर पहिने दैत छथि, अर्थात् किष्किंधामे रामक

प्रवेशसँ संबंधित। राम हनुमानसँ अत्यंत शिष्ट भाषामे कहैत छथि जे ओ कोनो गाम अथवा नगरमे प्रवेश नहि कऽ सकैत छथि, किएक तँ हुनक पिताजी चौदह वर्षक वनवासक दीक्षा देलथिन अछि। हनुमानसँ एते कहि राम सुग्रीव दिसि घुमिकऽ हुनका कहैत छथि जे अहाँ किष्किंधाक राज्यसिंहासनपर आसीन भऽ अपन अग्रजक ज्येष्ठपुत्र अंगदकेँ—जे सामर्थ्य, विवेक आ चरित्रमे हुनकहि समान छथि, युवराजक पदपर प्रतिष्ठित करी। एहिसँ ओतऽ उपस्थित सभ नागरिक आ राज्यप्रमुख लोकनिक मन प्रसन्न भऽ जाइत छनि आ हनुमान सेहो नर-देवता रामक न्यायसंगत आ संतुलित निर्णयकेँ सर्वथा उचित बुझिकऽ सभ किछु सुसंपन्न अनुभव करैत छथि।

आवश्यकता पड़लापर सुग्रीवकेँ सतर्क करऽमे हनुमान कखनो संकोच नहि करैत छथि। शरदक आमगनक बादो सुग्रीवक ध्यान एहि बातपर नहि जाइत छनि जे आब सीताक अन्वेषणक समय आबि गेल अछि, जेना रामकेँ वचन देल गेल छलनि। हनुमान सुग्रीवकेँ समय रहैत एहि बातक स्मरण करबैत छथि आ संगहि-संग एहि बातकेँ सुनिश्चित सेहो करबैत छथि जे अन्वेषण-कार्य सही समय पर सही ढंगसँ आरंभ करक लेल विभिन्न प्रांतसँ वानरसेना बजेबाक दायित्व नीलपर सौंपल जाय। जँ हनुमान सुग्रीवकेँ एहि बातक स्मरण नहि दिअबितथिन तँ सुग्रीव किन्नहु ने नींनसँ जगितथि आ ने लक्ष्मणकेँ मुँहें देखेबा जोगरक होइतथि, जखन ओ सुग्रीवपर कर्तव्यक घोर उपेक्षाक दोष आरोपित कयलथिन। एहि प्रकारेँ हनुमान द्वारा समयपर उठौल गेल डेग हुनक राजनीतिक विवेकक परिचय करबैत अछि, जाहिसँ अपन स्वामी सुग्रीवक प्रतिष्ठाक रक्षा सेहो कयलनि।

सही समयपर सतर्क कयल गेलापर सेहो सुग्रीव एहि बातक गंभीरतापर यथेष्ट ध्यान नहि देलनि। अंगद आबिकऽ जखन कहैत छथिन जे लक्ष्मण रोषपूरित नेत्रसँ आ तमसायल आबि रहल छथि, तखन सुग्रीव आँखि मिलमिला एम्हर-ओम्हर देखि एहि असावधानीक दोष दोसरापर थोपक चेष्टा करैत छथि आ कहैत छथि जे ईर्ष्यावश कियो राम लग मिथ्यारोपन कयलक अछि। एहि विकट परिस्थितिमे हनुमान अपन पछिला बातकेँ फेरसँ एकबेर दोहरबैत छथि आ निवेदन करैत छथि जे हुनक स्वामी सुग्रीव समयक ध्यान नहि रखलनि आ ताँहि लक्ष्मणकेँ एना आबऽ पड़लनि। एहि बेर ओ कटु भाषाक प्रयोग करैत छथि, जाहिसँ सुग्रीवकेँ विषयक गंभीरता बुझऽमे आबि जानि। सुग्रीवकेँ ओ स्पष्ट शब्दमे कहि दैत छथि जे हुनकासँ जे अक्षम्य अपराध भेलनि अछि, ताहि लेल लक्ष्मणसँ क्षमा माँगब हुनकर कर्त्तव्य थिकनि। ओ सुग्रीवकेँ सतर्क करैत कहैत छथि जे जँ सही डेग

उठेबामे आबहु विलंब भेल तँ परिणाम अत्यंत भयावह भऽ सकैत अछि। विशेष ध्यान देबाक बात अछि जे अपन वचन आ समयवद्धतापर जोर दैत हनुमान जाहि पदावलीक प्रयोग करैत छथि (राजन तिष्ठ स्वसमये) लगभग एहने वाक्य-विन्यास रामक सेहो छनि (समये तिष्ठ सुग्रीव)। एहिसँ पता चलैत अछि जे हनुमानक वाक्भंगिमा रामसँ मिलैत अछि। इहो स्पष्ट होइत अछि जे जखन राज्यक प्रतिष्ठापर कलंकक छाया देखऽमे अबैत अछि तँ हनुमान कते निर्भीक आ कर्तव्यक प्रति सजग भऽकऽ अपन स्वामीकेँ सजग बना सकैत छथि। हनुमान प्रासंगिक रूपेँ चाहैत छथि जे सुग्रीव एहि बातकेँ ठीक-ठीक बुझि लेथि जे हुनका संग मैत्री करऽमे राम जे उदारता आ महनीयताक परिचय देलनि अछि, जकरा गलती नहि बुझक चाही, आ ने ओकर दुरुपयोग करक चाही। तथापि सुग्रीव लक्ष्मणक तामसकेँ शांत करक हेतु ताराकेँ पठबैत छथि। अंततः भारी संकट सात्विक परामर्शक रूपमे समाप्त होइत अछि, आ तकर आधार बनैत अछि ताराक अनुनय-विनय आ करुणामय रामक उदारता। मुदा ई सम्पूर्ण क्रियाकलाप हनुमानकेँ एकटा महान् चिंतक, कुशल राजकर्ता आ निर्भय संवादवाहकक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

राम एहि बातकेँ अपन दूरदर्शितासँ देखैत छथि जे सुग्रीवमे एहि विवेकक उदय किछु विलंबसँ होइत छनि। जखन सभ वानर-वीर सीताक खोजमे विभिन्न दिशामे पठौल जाइत छथि तखन राम आ सुग्रीव दुनूकेँ खूब नीक जकाँ विश्वास होइत छनि जे हनुमाने एहि कार्यकेँ सम्पन्न करऽमे समर्थ छथि।

एहि प्रसंगक सम्पूर्ण सर्ग हनुमानक गुणावलीक वर्णनसँ भरल अछि। एहि गुणगानक आरंभ सुग्रीवे करैत छथि। भऽ सकैत अछि, ताधरि हुनक विवेक-वर्द्धन भऽ गेल होनि। ओ प्रशंसात्मक परिभाषामे कहैत छथि जे गति, वेग, तेजस्विता आ लाघव सभ दृष्टिकोणसँ मारुतिक समता एहि संसारमे दोसर कियो नहि कऽ सकैत अछि। धरतीपर, वायुमंडलमे, आकाशमे, स्वर्गमे आ रसातलमे एहन कोनो स्थान नहि छैक जतऽ ओ नहि पहुँचि सकैत छथि। ई गुणसभ आ सामर्थ्य हुनका अपन पितासँ प्राप्त भेल छलनि जे विश्वव्यापी छथि। ओ एहि बातकेँ प्रमाणित करैत छथि जे बल-बुद्धि, पराक्रम देश आ कालक संग अनुकूलताक प्रवृत्ति, राजनयिक आदि सभ सद्गुणसँ संपन्न छथि, तँहि एहि महान् कार्यकेँ सफलतापूर्वक संपादन करक क्षमता हुनकामे छनि।

सुग्रीवक बात ध्यानसँ सुनलाक बाद रामकेँ विश्वास होइत छनि जे हनुमान एहि दुष्कर कार्यकेँ सुसंपन्न करक हेतु सर्वथा योग्य छथि, किएक तँ सुग्रीवकेँ हुनकापर जते विश्वास छनि ताहिसँ बेशी हनुमानकेँ अपनापर छनि। तखने ओ

अपन नामसँ बनल मुद्रिका हनुमानकेँ सौंपैत छथि आ कहैत छथि जे एकरा देखिकऽ सीताकेँ तोरापर विश्वास भऽ जयतनि। ई दोसर प्रसंग अछि जखन राम हनुमानसँ सोझाँ-सोझी वार्ता करैत छथि। आब ओ हुनका आशीर्वाद दैत छथि आ कहैत छथि जे तोहर अध्यवसायी बुद्धि, सुरक्षित आ सुपरीक्षित सामर्थ्य आ सुग्रीवक प्रशंसासँ एहि बातमे कोनो संदेह नहि रहि गेल अछि जे तोहर काज सिद्ध होयबे करतौक। अंतमे राम कहैत छथि "हमरा तोहर आ तोहर बल-पराक्रमक पूर्ण भरोस अछि। हमरा तोरे भरोस अछि। आगू बढ़ि, जनकनंदिनीक पता लगेबाक हेतु जे किछु करक होउ, निर्भय भऽकऽ कर, हम तोहर बाट देखैत रहब।" रामक ई शब्द आ हुनका द्वारा देल गेल बहुमूल्य मुद्रिका, हनुमानकेँ आनंदसँ आत्मविभोर कऽ दैत छनि। हनुमान मुद्रिकाकेँ शिरोधार्य कऽ रामक चरणक वन्दना करैत छथि आ हाथ जोड़ि हुनका प्रणाम करैत अपन अभियान आरंभ करैत छथि।

एही ठामसँ सीताक अन्वेषणमे हनुमानक अभियानक आरंभ होइत अछि। ई हुनका सोझाँ सबसँ पैघ चुनौती छल आ तकरा ओ साहस आ विश्वासक संग स्वीकार करैत छथि। रामक अमोघ आशीर्वादे हुनका मुख्य बल प्रदान करैत छनि। पूब, पश्चिम आ उत्तर दिशामे पठौल वानर-प्रमुख एक मासक अवधि धरि सीताक अन्वेषण कऽ ओहि दिशामे हुनका कत्तहु ने देखि फेर किष्किंधा घुरि गेल आ सुग्रीवकेँ सूचित कऽ देलकनि। अंगदक नेतृत्व तथा वयोवृद्ध जाम्बवानक पर्यवेक्षणमे दक्षिण दिशामे गेल वानर सेनाक संग हनुमानकेँ सेहो ओहि दिशामे कत्तहु जानकीक पता नहि चलैत छनि। मुदा एक मासक अवधि बीति गेल। बाटमे हुनका लोकनिकेँ उज्वल आध्यात्मिक तेजसँ विराजमान एकटा तपस्विनी ध्यानमुद्रामे बैसलि ओहि एकान्त गुफामे देखयलनि। बाहर अन्हारे अन्हार, मुदा भीतर प्रकाशपुंज ओहि गुफाक विशेषता छल। हनुमान हुनकासँ वार्ता करैत छथि। ज्ञात भेलनि जे हुनक नाम स्वयंप्रभा छनि। स्वयंप्रभाक ओतऽ फलोपहार ग्रहण कऽ हुनकहि तपोबलसँ सभ वानरवीर गुफासँ बहरा सकलाह। आब ओ सभ एकदम समुद्रक कातमे आबि गेलाह। एक दिस विन्ध्याचल आ दोसर-दिस प्रस्रवण पहाड़ छल।

एतऽ हनुमानक सोझाँमे एकटा अन्य समस्या, एकदम आंतरिक समस्या ठाढ़ भऽ गेल। अंगदकेँ सुग्रीव लग जाकऽ अपन विफलताक समाचार देब नीक नहि लगैत छनि आ किछु भय सेहो होइत छनि। तँहि ओ ओत्तहि किछु वानर-वीरक सहयोगसँ एकटा राज्यक स्थापनाक बात विचारैत छथि। ओ आमरण अनशनक घोषणा करैत छथि आ ताहि हेतु ओ सभक समर्थन प्राप्त करक यत्न करैत छथि। हनुमान तकर विरोध करैत छथि, किएक तँ हुनका आशंका छनि जे सुग्रीवक

विरुद्ध अंगद एकटा विद्रोह करक षड्यंत्र रचि रहल छथि। ओ अंगदकेँ स्पष्ट कहि दैत छथिन जे सुग्रीव तथा दुनू राजकुमारसँ अपनाकेँ आ जाम्बवान एवं नील सन प्रमुख वानर-वीर सभकेँ फराक करक हुनक यत्न एकदम विफल भऽ जेतनि आ जँ ओ सही मार्गपर नहि चलताह तँ राम, लक्ष्मण आ सुग्रीवक तामससँ बँचि नहि पओताह। एहन विवेकपूर्ण परामर्शक अछैतो अंगद अनशनक अनुष्ठान शुरू कऽ दैत छथि।

एतवेमे अकस्मात् वानर सभ संपाति नामक गृद्धराज, जे कि जटायुक जेठ भाइ छल, तकरा देखलक। पहाड़क ऊपर बैसल संपाति नीचाँमे बहुत वानरकेँ बैसल देखिकऽ सभकेँ एककटा कऽ खयवाक नमहर योजना बनवैत अछि आ ओमहर अंगदक नेतृत्वमे आयोजित अनशन संपातिकेँ देखितँहि खतम भऽ जाइत अछि। सभ वानर संपाति लग जाकऽ अपन दुःखक आ अपन रामक दुःखक कथा सुनवैत अछि आ तकर प्रतिक्रियामे संपाति जे अपना मादे रोचक आ प्रासंगिक कथा कहैत छैक, ताहूकेँ ध्यानसँ सुनऽ लगैत अछि। संपाति स्वभावसँ दूर-दूरक दृश्यकेँ देखक क्षमता रखैत अछि। एही शक्तिक बलेँ, एक हजार योजन दूर लंकामे एकांत स्थानपर वैसलि सीताकेँ ओ देखि लैत छथि। संपातिक ई वात सुनि वानरसेनाकेँ प्रसन्नता होइत छैक आ ओकरा सभकेँ आगू बढ़क साहस भेटैत छैक। एहि तरहेँ संपातिक आकस्मिक प्रवेशसँ अंगद द्वारा ठाढ़ कयल गेल मध्यावधि समस्याक स्वतः समाधान बहरा जाइत अछि आ हनुमान एकदम आश्वस्त भऽ विचारऽ लगैत छथि जे कृत्रिम संकटक सुखद समापन भऽ गेल।

वानर-दलक सोझाँमे आगाँक समस्या ई छल जे सागर कोना पार कयल जाय, जाहिसँ ओ लंकामे पहुँचिकऽ सीताक दर्शन कऽ सकथि। ई काज के करत आ कोना करत, आब से प्रश्न छल। एत्तहु अंगद हनुमानकेँ एहि समस्याक समाधान सँ कात राखक प्रयत्न करैत छथि। इहो ओ नीक जकाँ जनैत रहथि जे ई महान् कार्य सम्हारक आवश्यक शक्ति आ उत्प्रेरणा हुनकहि लग छनि। हुनका एहि लेल नैतिक मनोबल, रामक आशीर्वाद आ सुग्रीवक मंगलकामना सेहो प्राप्त भऽ गेल छलनि। ई सब जनितो अंगद एकटा हास्यास्पद मानसिक व्यायामक दृश्य ठाढ़ कऽ दैत छथि। ओ बेरा-बेरी सभ वानर-वीरसँ पुछैत छथि जे के कते दूर धरि सागर पार कऽ सकैत अछि। जे उत्तर सोझाँमे अबैत अछि ओ दससँ नब्बे योजन धरि जाइत अछि। गज सभसँ कम दूर जयबाक बात कहैत अछि आ जाम्बवान सभसँ दूर। अंगद अपन क्षमता आँकि कहैत छथि जे हम सागर तँ पार कऽ सकैत छी, मुदा घुरि अयबामे संदेह अछि। दलक सभसँ वयोवृद्ध आ

वरिष्ठ नेता जाम्बवान खूब बुधियारीक संग एकटा विवेकशील विचार व्यक्त करैत छथि जे अंगद तँ हमरा लोकनिक नायक छथि, भऽ सकैत अछि ओ सागर पार कऽ फेर घुरियो सकैत छथि, मुदा एहन साहसपूर्ण काजकेँ अपना हाथमे लेब नायक जोगरक बात नहि भेल, उचित ई हैत जे योग्य व्यक्तिकेँ ई काज सौंपल जाय। ई सुनि अंगद मौन भऽ जाइत छथि। वास्तविक कार्यकुशल व्यक्ति लग जाकऽ हुनक मौनकेँ पराक्रममे परिवर्तित करक दायित्व जाम्बवान स्वतः अपना ऊपर लऽ लैत छथि। ई कार्यसाधक व्यक्ति हनुमान आरामसँ एकांतमे बैसल किछु विचारि रहल छथि। संभवतः इएह विचारैत होथि जे आब की करक चाही, स्वामी सुग्रीव आ लोकस्वामी राम हुनका जे काज सौंपलथिन अछि, ताहिकेँ हुनके देल शक्तिक उपयोग करैत कोना सफलतापूर्वक संपन्न करक अछि?

जाम्बवान हनुमानकेँ उद्‌बोधित करैत कहैत छथि ई काज तोरे करक छौक, दोसर कियो एहि योग्य नहि अछि। हनुमान आंतरिक प्रेरणा आ बाहरी प्रोत्साहन सँ आत्मबल समेटि एहि दुष्कर कार्यकेँ आरंभ करैत छथि, मौन उपक्रमसँ ने कि शब्दसँ। ओ अपन शरीरकेँ विशालकाय बनबैत छथि आ अपन आंतरिक आनंदकेँ प्रकट करक हेतु नाँगरि डोलबैत छथि। कनिए कालमे ओ तीनू लोककेँ अपन तीनू पैरसँ घेरऽबला त्रिविक्रम सन रूप धारण कऽ वानर-वीर सभक सम्मुख ठाढ़ भऽ जाइत छथि। फेर अपन सामर्थ्य आ संपन्न होअबला काजक गरिमाक अनुमान लगाकऽ अपनाकेँ आश्वस्त कऽ लैत छथि जे, जे काज हुनका देल गेलनि अछि तकरा ओ सुगमतासँ पूरा कऽ सकैत छथि। अंततः ओ अपन सहयोगीसँ कने कालक लेल बिदा भऽकऽ अपन उड़ानक उपक्रम करक लेल महेन्द्र पर्वत दिसि बढ़ैत छथि। महावीर हनुमानकेँ एहि महान् कार्यमे सफलता आ सकुशल घुरिकऽ अयबाक मंगलकामनाक संग बिदा करैत सभ वानर-वीर मुक्त आ संयुक्त कंठसँ जय-जयकार करैत छथि। हुनका एहि बातक लेल आश्वासन दैत आ अपन नैतिक समर्थन देबाक लेल ओ सभ ता धरि एक्के टांगपर ठाढ़ रहताह जा धरि ओ सकुशल घुरि नहि जाथि।

जाहि क्षण हनुमान महेन्द्र पहाड़सँ उड़लाह तखनसँ हुनका घुरि अयबा धरिक सौंसे इतिवृत्त जे पूरा एक राति आ एक दिन धरि चलैत अछि, हनुमानकेँ केन्द्र बनाकऽ घटित होइत अछि। ओमहर लंकावासी आ एमहर महेन्द्र पहाड़पर एहन साहसपूर्ण काजक परिणामकेँ ठाढ़े-ठाढ़े उत्कंठित प्रतीक्षा कयनिहार समस्त वानर समूहक ध्यान आकृष्ट कयनिहार एहि अनुष्ठानक कर्ता हनुमान छथि आ अभीप्सित कर्म जानकी। धनुर्विद्यामे धुरंधर रामक प्रखर शर जकाँ मारुतनंदन सागरकेँ पार

करैत छथि अंतरिक्षक उज्वल नक्षत्र जकाँ निर्विराम आ निरुद्विग्न। सागर पार करक बाटमे मैनाक नामक पर्वत हनुमानकेँ अपना ओतऽ विश्राम करऽ आ आतिथ्य स्वीकार करक अनुरोध करैत अछि। मुदा हनुमान मात्र अपन करस्पर्शसँ आभार प्रकट कऽ आगू बढ़िते चल जाइत छथि, क्षणो भरि अँटकैत नहि छथि। कने कालक बाद नागमाता सुरसा अपन विकराल मुँहसँ हनुमानकेँ अपन आहार बनवऽ चाहैत अछि। असलमे हनुमानक बुद्धि आ सामर्थ्यक परीक्षा लेबाक हेतु देवगण सुरसाकेँ पठौने रहथिन। हनुमान अत्यंत बुधियारीसँ सुरसाक मुँहमे प्रवेश कऽ तखने वहरा जाइत छथि। नागमाता मात्र हनुमानकेँ गीड़ऽ चाहैत रहथि आ हनुमान हुनका मुँहमे प्रवेश कऽ लैत छथि, मुदा बिनु हुनक प्राण लेने आ बिनु अपन प्राण देने कनिये कालमे अपनाकेँ बचाकऽ आगू बढ़ि जाइत छथि। एही प्रकारेँ एकटा आओर संकटक हुनका मोकाविला करऽ पड़ैत छनि जखन सिंहिंका नामक छायाग्राही राक्षसी हुनका बलात् अपना दिसि घीचि लैत अछि। हनुमान ओकर संहार कऽ दैत छथि। अंततः संध्याकाल सूर्यास्तसँ पहिने ओ लंकामे उतरैत छथि। एहन साहसपूर्ण उपलब्धिकेँ देखिकऽ अगोचर देवता आ गोचर प्राणी चकित भऽ जाइत छथि। लंकामे प्रवेश करऽसँ हुनका लंकाक ओगरबाहि कयनिहारि राक्षसी रोकैत छनि आ हुनका आघात पहुँचावक प्रयास करैत छनि, मुदा हनुमान ओकरा हल्लुके सन मुक्कासँ मूर्छित कऽ दैत छथि। एहिपर लंकेश्वरी भविष्यवाणी करैत अछि जे आव लंकाक सर्वनाश होएबाक समय आबि गेल अछि।

राति होइते हनुमान लंकामे प्रवेश करैत छथि। कनिए कालमे पूर्णिमाक चन्द्रमा अपन छिटकैत इजोरियाक संग उगल आ हनुमानक मार्गकेँ अलौकिक आ आह्लादकारी बना देलक। लंकामे व्यतीत प्रत्येक क्षण आब सार्थक आ सतर्कताक क्षण थिक, किएक तँ जाहि जानकीकेँ कहियो ने देखने छथि तनिके ताकक छनि। लंकामे सभठाम प्रशिक्षित रक्षक सावधानीसँ पहरा दऽ रहल अछि। ओ अपन आकारकेँ बिलाड़ि सन बनाकऽ सौंसे लंकाक एकटा संक्षिप्त सर्वेक्षण करैत छथि। कनेके कालमे रावणक अंतःपुर धरि पहुँचि जाइत छथि। ओतऽ रावणकेँ आ ओकरासँ कने हँटिकऽ एकसरे सूतलि मंदोदरीकेँ देखैत छथि। मंदोदरीकेँ देखिते हुनका सीता बुझि नाचऽ लगैत छथि। मुदा कनेके कालमे अपन गलती बुझि जाइत छथि। अपन कल्पनाक परम साध्वी नारीक खोजमे आगू बढ़ैत छथि। सौंसे लंका ताकि अयलोपर जानकी कतौ दृष्टिगोचर नहि होइत छथिन, ताहिसँ हुनका अत्यंत दुःख होइत छनि। जानकीकेँ देखक बदलामे अंतःपुरक असुरांगना सभक अश्लील अंग-भंगिमा जे देखा जाइत छनि, ताहिसँ मनमे परिताप होइत छनि। परन्तु अपना

मनकेँ बुझा लैत छथि जे कोनो स्त्रीकेँ ताकक हेतु ओकरा स्त्रीगणेमे ताकऽ पड़तनि, तँहि एहिमे हुनकर दोष नहि छनि। एहिना सौंसे राति बीतल जाइत अछि आ पऽह फाटऽसँ पहिने ओ अशोक वनमे पहुँचि जाइत छथि। अकस्मात् हुनका एकटा गाछ तर सीता सन साध्वी स्त्री देखऽमे अबैत छथिन। हुनक चारूकात हुनकर रखबारि कयनिहारि राक्षसी सभकेँ देखलनि, जकरा सभकेँ रावण एही हेतु तैनात कयने छल। जानकीकेँ देखिकऽ हुनका प्रसन्नता होइत छनि, मुदा हुनक विषाद देखि दुःख होइत छनि। तथापि अपन अन्वेषणक लक्ष्यसिद्धिपर अंततः अपनाकेँ धन्य-कृतार्थ मानैत छथि। समस्त नारी जगतमे अद्वितीय आ आदर्श परम सुंदरीक मुखाकृति विश्वमोहन रामचन्द्रक आकृतिसँ मिलैत-जुलैत अछि। जाहि परमांगनाकेँ देखलाक बाद संसारमे आर किछु देखक आवश्यकता नहि रहि जाइत छैक, एहन वर-वार्णिनीकेँ प्रत्यक्ष पाबि अपनाकेँ सौभाग्यशाली मानैत छथि। हुनक मन तत्काल राम लग चल जाइत अछि। ओ एहि बातकेँ एकदम न्यायसंगत बुझैत छथि जे एहि अपूर्व सुन्दरीक हेतु हुनका एते टा युद्ध करऽ पड़तनि।

हनुमानक हेतु वास्तविक परीक्षाक समय आब आरंभ होइत अछि। जानकीक दर्शन टासँ हुनकर काज पूरा नहि होइत छनि। हुनका अपनाकेँ रामदूतक रूपमे अपन परिचय दऽकऽ विश्वास दिआबक छनि। फेर हुनका राम-नाम अंकित मुद्रिको देबाक छनि, हुनक सुख-दुःखक सभटा समाचारसँ हुनका आवगत करयबाक छनि आ राम लग जाकऽ हुनको सभटा वृत्तांत सुनयबाक छनि। औखन ओ नुका-नुका कऽ अपन काज चला रहल छथि। आब हुनका अपन असली रूपमे आबि जयबाक छनि आ साहसक संग एहि प्रयासक परिणामक सामना करक छनि। एहि साहसपूर्ण प्रयासक फल अंततः अपना पक्षक लाभ आ लक्ष्यसिद्धि होयबाक चाही आ आततायी शत्रुपक्षक लेल हानिकारक होयबाक चाही। ई सम्पूर्ण चिंतन हनुमान अपन मनहि मन कऽ रहल रहथि आ संगहि पतिपरायणा जानकीक दयनीय स्थितिकेँ देखिकऽ व्याकुल भऽ रहल रहथि।

अकस्मात् रावण अशोक वनमे प्रवेश करैत अछि। भऽ सकैत अछि, प्रतिदिन प्रभातकालमे ओ एहिना एतऽ घुमैत होअय, ई देखक हेतु जे ओकरा द्वारा तैनात राक्षसी सभ कहाँ धरि सीताक मनकेँ लंकेश्वर दिसि मोड़ऽमे सफल भऽ रहल अछि। एहिसँ हनुमानकेँ रावण आ सीताक मनःस्थितिकेँ सेहो लगसँ देखऽ परखऽ मे सहायता भेटैत छनि। जखन रावण निराश भऽकऽ ओतऽसँ घुरि अबैत अछि, तकर बादे हनुमान रामक गुणगान करैत हुनकर वर्तमान परिस्थितिक स्वांतःसुखाय वर्णन करऽ लगैत छथि—ओ गाछेपर बैसल छथि। जेना-जेना हनुमान एहि

कथा-कथनक माध्यमसँ रामदूतक रूपमे अपन परिचय दैत छथि, तहिना सीताक दृष्टि एहि वक्र-स्रष्टा दिसि ऊपर उठैत अछि। मधुर शब्दमे मधुरतर वार्ता सुनबैत जखन वानर-रूपमे रामदूत नीचाँ उतरि अबैत छथि तँ रामाक्षी रामकिंकरकेँ देखिकऽ प्रसन्न होइत छथि आ दुनूक बीच संवाद शुरू होइत अछि। आरंभिक शंका आ संशय-निवारणक बाद दुनूक मनमे एक दोसराक प्रति विश्वास आ गौरव-भावना उत्पन्न होइत अछि। परिणाम ई होइत अछि जे हृदय हृदयसँ वार्ता करऽ लगैत अछि।

रामनाम अंकित स्वामी रामक मुद्रिका देखिते रामेक्षणीक हृदय रसार्द्र भऽ जाइत अछि। रामसँ यथाशीघ्र भेटक लेल सीताक उत्कंठाकेँ देखि हनुमान हुनका लग एकटा प्रस्ताव रखैत छथि जे जँ ओ चाहथि तँ औखन तुरंत ओ हुनका अपना कान्हपर बैसाकऽ राम लग पहुँचा सकैत छथि। मुदा जखन सीता रामक प्रतिष्ठा आ गरिमा आ अपन मान-मर्यादाक आधारपर एहि प्रस्तावकेँ स्वीकार नहि करैत छथि, तखन हनुमानकेँ पूरा विश्वास भऽ जाइत छनि जे सीते सन उदारचेता स्त्री एहन बात कहि सकैत छथि। आस्ते-आस्ते सीताक अनुकंपा आ आत्मीयताक पात्र बनिकऽ ओ हुनकासँ प्रत्यभिज्ञान चिन्हासीक रूपमे हुनकर एकटा बहुमूल्य आभूषण चूड़ामणि प्राप्त करैत छथि, जाहिसँ रामकेँ ओकरा देखिकऽ ई विश्वास भऽ जानि जे हनुमान वास्तवमे सीताकेँ देखिकऽ आयल छथि।

एहि घटनाक बाद हनुमान खूब सुविधासँ लंकासँ प्रस्थान कऽ सकैत छलाह, जखन कि सीताक आशीर्वाद लऽकऽ ओ हुनकासँ प्रस्थानक अनुमति लऽ लेने रहथि। तथापि एकटा प्रतिष्ठित राजनयिक आ अनुभवी राजप्रमुखक रूपमे जाहि राज्यक ओ पर्यटन कयने रहथि, ओकर अधिपतिसँ बिनु सम्पर्क स्थापित कयने ओ घुरिकऽ जाय नहि चाहैत रहथि। ताहि लेल ओ एकटा सुंदर उद्यानकेँ ध्वस्त करैत छथि। एहिमे जे राक्षस हुनकापर आक्रमण करैत छनि ओकरा सभकेँ मारि दैत छथि। इंद्रजीतक ब्रह्मास्त्रक आगू तँ ओ जानिबुझिकऽ खूब चलाकीसँ हारि मानि लैत छथि, जाहिसँ ओ रावणकेँ देखि सकथि। रावणक ओतऽ जाकऽ ओ अपन वास्तविक स्वरूप प्रकट करैत छथि आ निर्भय भऽकऽ ओकरा कहैत छथि जे हम रामक दूत बनिकऽ एतऽ आयल छी, रामजीक पत्नीकेँ देखऽ आ तोरा ई बुझबऽ जे जँ तोँ तुरंत सीताजीकेँ ससम्मान रामजीकेँ घुरा नहि देबहुन तँ जल्दीए राम एतऽ आबिकऽ लंकापर विजय प्राप्त करताह आ सीताकेँ लऽ जेताह। ई सुनि रावण तामसे आगि भऽ गेल आ हनुमानकेँ वध करक आज्ञा देलक। किंतु विभीषण बीचमे पड़िकऽ मृत्युदंडकेँ कम कराकऽ ई आदेश दिआ दैत छथि जे हनुमानक नांगड़िमे तेलमे भिजौल वस्त्र लपेटि आगि लगा देल जाय। एहिसँ

हनुमानक योजनाकेँ अद्‌भुत बल भेटैत छनि। ओ सौंसे नगरकेँ भीषण ज्वालासँ आर्दकित कऽ दैत छथि आ कनेके कालमे समस्त लंका नगरी जरिकऽ भस्म भऽ जाइत अछि। सीता, राम आ वायु देवताक आशीर्वादक महिमासँ एहि भयानक अग्निकांडक हनुमानपर कोनो प्रभाव नहि पड़ैत छनि, अपितु हुनका एहन सन लगैत छनि जेना हुनकर जरल नांगड़िपर कियो चाननक लेप लगा देलकनि अछि। एहि घटनाक लाभ ई होइत छनि जे लंकामे जते प्रमुख सामरिक महत्त्वक स्थान अछि ओ सभ एहि अग्निकांडमे नष्ट भऽ जाइत अछि। ताहिसँ राम, सुग्रीव वा वानर सेनाक काज आगू जाकऽ सुगम भऽ जाइत अछि। ई सभ भेलाक बाद हनुमान अपन नांगड़िकेँ सागरक जलसँ ठंढा कऽ लैत छथि आ फेर एक बेर सीताजीक दर्शन कऽ हुनकासँ आशीर्वाद लऽ महेन्द्र पर्वत घुरि अबैत छथि आ अपन संगी सभकेँ सभटा खिस्सा सुनबैत छथिन आ संक्षेपमे ई सुखद समाचार सेहो सुनबैत छथिन जे ओ सीताकेँ देखिकऽ आयल छथि।

आंजनेयक एहि साहसिक काजक, जे स्वयं कतेको दृष्टिसँ विलक्षण अछि—रामायणक प्रशस्त गाथामे एकटा महत्त्वपूर्ण स्थान छैक। औखन धरि रावण एहि भ्रममे छल जे सीताक अपहरण कऽ खूब चलाकीसँ अपना ओतऽ रखने अछि। ओहि स्थानपर देवतो लोकनि नहि पहुँचि सकैत रहथि आ पयरे चलनिहार राम एतऽ धरि अयबाक कल्पनो नहि कऽ सकैत छथि। सीता कहियो-ने-कहियो ओकरा वशमे आबि जयतीह। मुदा अकस्मात् एक दिन ओकरा दारुण आघात लगलैक, जाहिसँ ने मात्र ओकर कठोर हृदय अपितु सौंसे राज्य दहलि गेल। ओकरा लेल ई महा अपमान छल। संगहि ई ओकरा हेतु एकटा भयंकर चेतौनी सेहो छल, जे ओकर आँखि खोललक ओहि वास्तविकताकेँ देखक हेतु जे रावणक लोक सभहक द्वारा हुनकर नांगड़िमे पजारल आगिसँ दहकल छल। तँहि ई घटना लंकाक लेल एकटा गंभीर चेतौनी सिद्ध भेल आ सीताक हेतु नमहर आस्वस्ति सेहो। हनुमान लंकामे ई घोषित करैत छथि जे ओ तँ अजेय आ सत्य पराक्रम रामक मात्र एकटा विनम्र सेवक छथि, जनिका राम लंकाक प्रारंभिक सर्वेक्षण करक हेतु पठौने छलथिन, सुग्रीवक दरबारमे लाखो-करोड़ो वानर-वीर छथि जे पराक्रम आ मनोबलमे की तँ हुनक समान छथि वा हुनकासँ श्रेष्ठ छथि। लंकाक संरक्षिका राक्षसी लंकिनी सेहो लंकाक सर्वनाशक भविष्यवाणी सुनाकऽ अपन प्राण छोड़लक। खेलाइते-खेलाइते एकटा साधारण वानर जे चुनौती रावणकेँ दऽ देलकैक, ताहिसँ ओ आर्दकित भऽ गेल आ दिन-राति इएह बात विचारैत-विचारैत ओकर निम्न सेहो उड़ि गेलैक।

एतेटा साहसक काज, जे किष्किंधामे दोसर कियो नहि कऽ सकैत छल,

सफलतापूर्वक संपन्न कयलोपर ई सभटा वृत्तांत बड़ विनम्रतासँ रामकेँ निवेदित करैत छथि। ओ अपन सफलताक श्रेय सीता, राम आ विश्वात्मा पवन देवताकेँ दैत छथि। वास्तवमे हुनक एहन महान् कार्यमे पाँचो तत्त्व सहयोग दैत छनि। समुद्रजल हुनक बाटमे आयल बाधा सभसँ बचाकऽ सकुशल दक्षिण तटपर पहुँचा दैत छनि। अग्निदेवता हुनका शीतलता प्रदान कऽ शत्रु-पक्षकेँ भस्मसात् कऽ दैत छथि। धरती आ आकाश हुनका रोमांचक उड़ान भरक हेतु, अंतरिक्षमे चलैत सागर पार करक हेतु आ सकुशल लंकामे उतरक हेतु सहायक होइत छथि। अपन अनुभवक विवरण प्रस्तुत करैत काल हुनका मुँहसँ बहरैल पहिल वाक्य अछि—"दृष्टा सीता" (सीताकेँ देखलहुँ)। सौंसे किष्किंधा एही समाचारक प्रतीक्षा कऽ रहल अछि। अपन लंका-अभियानक संक्षिप्त सार हनुमान एही दू टा शब्दमे प्रस्तुत करैत छथि। बादमे एकरे ओ विस्तारसँ सुनबैत छथि तीन टा विभिन्न स्तरमे। पहिने, घुरिकऽ अविते अपन संगी सभकेँ संबोधित करैत, तकर बाद सुग्रीव आ लक्ष्मणक सम्मुख रामकेँ संबोधित करैत, आ अंतमे रामसँ एकांतमे आत्मीयताक संग लंकामे अपन अनुभवक संक्षेपण, एहि तीन स्तरमे प्रस्तुत करऽमे हनुमानक वाग्विदग्धताक परिचय भेटैत अछि। अपन लंकायात्राक सम्पूर्ण इतिवृत्त आ ओकर फलक संक्षेपमे विवरण दैत हनुमान रामकेँ कहैत छथि जे अपन वाणीमे कहियो हीनताकेँ स्थान नहि देनिहारि मैथिली हमर कल्याणकारी शब्द सभसँ शांतिक अनुभव कयलनि आ ताहिसँ हुनक शोकाकुल मनकेँ सांत्वना भेटलनि। हनुमानक संक्षेपण-कौशलक सभसँ पैघ विशेषता ने मात्र विभिन्न घटनाक माध्यमसँ व्यक्त होअयबला मनोवृत्तिक प्रत्यक्षीकरण अछि, अपितु हुनका द्वारा प्रयुक्त शब्दक उपयुक्तता सेहो थिक जे अपनाकेँ स्वतः व्यक्त आ अभिव्यक्त करैत अछि। सुंदरकांडक वास्तविक सौंदर्य इएह वाक्संस्कृति थिक। सत्य पूछल जाय तँ वाल्मीकि रामायणक सारस्वत सार्थकता सेहो एहीमे अछि।

हनुमानक कयल काज आ हुनक भावनासँ प्रसन्न भऽकऽ राम हुनकर सराहना करैत छथि आ प्रगाढ़ आलिंगनसँ पुरस्कृत करैत अत्यंत उदारताक संग कहैत छथि—एखन तुरंत तोरा योग्य कोनो पारितोषिक हमरा लग नहि अछि।

युद्धक अंतिम कालमे सेहो हनुमानक भूमिका एहने सार्थक सिद्ध होइत अछि। विभीषण जखन राम लग शरणार्थी बनि अबैत छथि तखनो हनुमानक परामर्श सभसँ बेशी उपयुक्त आ उपयोगी सिद्ध होइत अछि, सुग्रीव आ अन्य वानर-वीर सभक अपेक्षा। एहि संदर्भमे वाल्मीकि हनुमानकेँ 'संस्कार-संपन्न' कहिकऽ हुनक व्यवहारक सही वर्णन करैत छथि। आरंभमे ओ रामक बुद्धि आ वाणीक प्रशंसाक

संग अपन गप्प कहैत छथि जे देवतालोकनिक गुरु वृहस्पतियो एहि विषयमे राम सँ बढ़िकऽ नहि छथि, तखन हुनका के विचार दऽ सकैत अछि? एही विचारकेँ आगू बढ़बैत अपन पूर्ववर्ती सभ वक्ता लोकनिक वक्तव्यक विनम्रतापूर्वक खंडन करैत छथि आ अपन स्वतंत्र विचार व्यक्त करैत कहैत छथि जे विभीषणक सदाशयताकेँ देखैत हुनका आश्रय देब अभीष्ट होयत, मुदा अंतिम निर्णय ओ रामक ऊपर छोड़ि दैत छथि। राम सेहो एही दिशामे सोचैत रहथि। हनुमानक सुचिंतित, सुसंगत आ सुसंबद्ध परामर्शसँ हुनक मन प्रसन्न होइत छनि आ तदनुसारे ओ शरणागत विभीषणकेँ आश्रय दैत छथि। एहिसँ सपष्ट होइत अछि जे हनुमान रामक कते विश्वास-पात्र छथि।

रणभूमिमे सेहो हनुमान सक्रिय भाग लैत छथि। जखन राम आ लक्ष्मण इंद्रजीतक नागपाशमे बन्हा जाइत छथि तँ सभ वानर-वीर चिंतासँ जड़ीभूत भऽ जाइत छथि, मुदा हनुमान अपने आ वानरक संग दुनू राजकुमारक रक्षामे तत्पर रहैत छथि। कनेके कालमे गरुड़जी आबिकऽ रघुकुलक वीर द्वयकेँ नागपाशसँ मुक्त कऽ दैत छथि। रावण अपन पुत्र इंद्रजीतक पराक्रमसँ राम आ लक्ष्मणकेँ दीर्घनिद्रामे सूतल बूझि मनहि मन प्रसन्न छल, मुदा अकस्मात् ई समाचार सुनि हताश आ निष्प्रभ भऽ गेल आ रामकेँ समाप्त करक हेतु धूम्राक्ष नामक राक्षसकेँ रणभूमिमे पठौलक। मुदा हनुमान ओकर मुकाबिला करैत क्षणभरिमे ओकरा समाप्त कऽ देलनि। कुंभकर्णक वधक पश्चात् रावण घोर निराशामे विमूढ़ भऽकऽ कते राक्षसकेँ रणभूमिमे पठबैत अछि, जाहिमेसँ देवांतक आ त्रिशिरा नामक दू टा राक्षसक हनुमाने निर्मम वध करैत छथि।

मात्र विध्वंसकक रूपेमे नहि, अपितु ताहूसँ अधिक एकटा जीवनदाताक रूपमे हनुमान अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निमाहैत छथि। इंद्रजीतक एकटा मायावी अस्त्रक प्रयोगसँ जखन राम, लक्ष्मण आ कते वानर-वीर बेहोश भऽ जाइत छथि तँ मात्र जाम्बवान आ हनुमान होशमे रहैत छथि। विभीषण सेहो एहि मायासँ अप्रभावित रहैत छथि, किएक तँ हुनका एहि मायाक रहस्य बुझल छलनि। जाम्बवान अर्धमूर्छित अवस्थामे ई जिज्ञासा प्रकट करैत छथि जे ओ सभसँ बेशी हनुमानेक हेतु किएक चिंतित छथि। जांबवान हुनका कहैत छथिन जे जाधरि हनुमान स्वस्थ आ सजीव छथि ताधरि ककरो कोनो बातक चिंता करक आवश्यकता नहि छैक। तखनहि जांबवान हुनका एकटा संजीवनी बुटी लाबऽ हिमालय पठबैत छथिन आ हनुमान सौंसे पहाड़ेकेँ अनिकऽ सोझाँमे ठाढ़ कऽ दैत छथि, जाहिपर ओ बुटी अछि। एहि बुटीक गंध सूंघिते राम आ लक्ष्मणक संग सम्पूर्ण सेना पुनरुज्जीवित भऽ जाइत अछि।

हनुमान एहने अद्‌भुत काज फेर एक बेर सम्पन्न कऽ सभकेँ संतुष्ट कऽ दैत छथि, जखन रावण द्वारा प्रयुक्त शक्तिक प्रभावसँ लक्ष्मण मूर्च्छित भऽ जाइत छथि। लक्ष्मणक मृतप्राय देह लग बैसि राम कानऽ लगैत छथि। तत्काल हनुमान एही संजीवनी बुटीकेँ आनिकऽ लक्ष्मणकेँ सजीव बनबैत छथि।

युद्धमे विजय प्राप्त कयलाक उपरान्तो राम आ सीता दुनूकेँ हनुमानक सेवाक आवश्यकता रहिते छनि। विजयक समाचार हनुमानेक माध्यमसँ राम सीताकेँ पठबैत छथि। फेर अयोध्यामे रामक पुनरागमनक समाचार सेहो रामक आदेशपर हनुमाने भरतकेँ सुनबैत छथिन। राज्याभिषेकक भव्य समारोहमे हनुमान अपने एकटा सम्मान्य अतिथि बनि जाइत छथि, जखन श्री सीता महालक्ष्मी एकटा विशिष्ट उपहार (अपन कंठहार) सँ अलंकृत करक हेतु हनुमानेक चयन करैत छथि। एहि विशिष्ट सम्मानक लेल हनुमानक योग्यताक प्रशस्ति-पाठ करैत प्राचेतस वाल्मीकि कहैत छथि :

तेजो धृतिर्यशो दाक्ष्यं सामर्थ्यं विनयोनयः।
पौरुषं विक्रमो बुद्धिर्यस्मिन्नेतानि नित्यदा।।

(तेजस्विता, धैर्य, यशस्विता, दक्षता, क्षमता, विनम्रता, नीतिकुशलता, पुरुषार्थसाधना, जयिष्णुता, मनस्विता ई सभगुण सभ समयमे जनिकामे निवास करैत अछि, हुनके सीता अपन हारसँ सुशोभित कयलनि अछि।)

सीता-रामक पुनर्मिलनक पुनीत अवसरपर राम सीताकेँ परम प्रीतिक प्रतीक रूपमे देल गेल कंठहारे ई उपहार छल। ताही कंठहारकेँ रामक अनुमतिसँ सीताजी रामदूत हनुमानकेँ प्रदान करैत छथि। रामक वाम भागमे बैसलि वैदेही द्वारा प्रदत्त ई उपहार अत्यंत महत्त्वपूर्ण अछि, कारण वैदेहीक वैवाहिक जीवनक अति आनंदमयक्षण आंजनेयक अनन्य सेवा भावनाक सुखद परिणाम थिक।

हनुमान मात्र रामायणक एकटा विशिष्ट पात्रे टा नहि, अपितु देवताक रूपमे जन-मानसमे प्रतिष्ठित दिव्यात्मा सेहो छथि। राम सीताक संगहि हिनको स्मरण कयल जाइत अछि। सौंसे रामायण मे ई तीनू पात्र—राम, सीता आ हनुमान—एहन छथि, जनिका लोकनिकेँ भारतवर्ष भरिमे प्रत्येक आस्थावान व्यक्ति पूज्य भावनासँ आराधना करैत अछि। जतऽ कत्तहु रामक मंदिर हो, ओतऽ हनुमानोक मूर्त्ति श्रद्धांजलि, कटिबद्ध आ नतजानुक मुद्रामे अवश्य विराजमान रहैत अछि। हनुमानक मंदिर सेहो कतोक अछि, जतऽ विभिन्न भंगिमामे विभिन्न प्रसंगकेँ चित्रित कयनिहार हुनक कते मूर्त्ति प्रतिष्ठित अछि। रामायणमे त्रिमूर्त्ति अथवा त्रयीक ई परिकल्पना सीता-राम-आंजनेयक संबंधमे सेहो तहिना चरितार्थ होइत अछि जेना

सीता-राम-लक्ष्मण, अथवा राम-लक्ष्मण-विश्वामित्रक संबंधमे। विश्वामित्रक संग गठित प्रारंभिक त्रितयमे विश्वामित्रक भूमिका समाप्त होइते सीताक प्रवेशसँ दोसर व्यक्ति सीता, राम आ लक्ष्मणमे सीताक वियोग घटित होइते हनुमानक समावेश भऽ जाइत छनि।

रामायणक प्रमुख पात्र सभमे एहि प्रकारक आओर अनेक त्रितय देखल जा सकैत अछि—जेना अहल्या, तारा आ मंदोदरी। एहि तीनूक गणना पाँच महाकन्याक अंतर्गत होइछ। रामक स्पर्श मात्रसँ अहल्या शुद्ध भऽ जाइत छथि। ताराकेँ रामक आशीर्वाद भेटि जाइत छनि। मंदोदरी तँ एहि तीनूमे विलक्षण मानल जाइत छथि जे ने हुनका किनको आशीर्वादक अपेक्षा छलनि आ ने शुद्धीकरणक आवश्यकते छलनि। यद्यपि हुनकर पतिकेँ कोनो सुन्दर नारीक प्रति मोहजनित आकर्षण होइत छलनि, तथापि ओ पतिक प्रति अनन्य प्रेमभावना रखैत रहथि। हुनकर प्रशंसा करथि, हुनकापर दया होनि, जखन हुनकर मृत्यु भऽ गेलनि तँ ओ व्यथित हृदयसँ अपन आंतरिक पीड़ा प्रकट करैत छथि। सीताक पवित्रता आ चरित्रबलक ओ प्रशंसा करैत छथि आ तहिना रामक निश्चयात्मिकता आ धर्मिष्ठताक सेहो ओ सराहना करैत छथि। अपना पतिक पराजयक हेतु ओ रामक भर्त्सना नहि करैत छथि। तकर विपरीत ओ अपन पतिक आक्रामक स्वभावक खंडन करैत छथि। महाकवि सम्राट वाल्मीकिक वाणीमे एहि निर्लिप्त आ धर्मनिष्ठ आदर्श गृहिणीक चित्रण अत्यंत हृदयग्राही बनि गेल अछि।

त्रिमूर्त्तिक परिकल्पनाक एकटा त्रितयक रूप कल्पनाक आधार बनि जाइत अछि। भ्रातृत्वक ओलोकनि तीन प्रकारक प्रतिनिधित्व करैत छथि। एहि भ्रातृमंडलमे भरत, जानिका वाल्मीकि भ्रातृवत्सलक उपाधिसँ विभूषित कयलनि अछि, एकटा अपवाद स्वरूप छथि। अपमानित भाइ सुग्रीव अपन जेठ भाइसँ लड़िकऽ, आवश्यक भेलैक तँ ओकर संहार कऽकऽ, अपन अपहृत पत्नीकेँ पुनः प्राप्त करऽमे रामक सहायता मंगैत छथि। ई सही अछि जे जेठका भाइ ओकर घोर अपमान केलकैक, मुदा तकर प्रतिक्रिया एते दारुण बनेबाक संभवतः आवश्यकता नहि छलैक। सुग्रीव अपने ई कबूल करैत छथि, मुदा ताधरि ओहि प्रतिक्रियाक प्रक्रिया समाप्त भऽ गेल रहैक। एहन विषम परिस्थितिकेँ राम अपन कालकेँ परिखक बुद्धिसँ समयानुंकूल बना लेलनि। विभीषण एकदम भिन्न तरहक छथि। ओ अपन भाइक परित्याग कऽ दैत छथि, मुदा तखन जखन हुनकर जेठ भाइ अपन शालीनता आ मर्यादाकेँ तिलांजलि दऽ दैत छथि। अग्रजक अत्याचारसँ लंकापर उमड़ैत ओहि महाप्रलयसँ बाँचक हेतु धर्ममार्गक आश्रय लैत छथि। जाहि स्वामीक आश्रय ओ लैत छथि,

हुनका प्रति अंतधरि निष्ठा रखैत छथि। अपन कर्तव्य-पालनमे अपन परिवारक लोकक मोह सेहो छोड़ि दैत छथि। एते धरि जे पापी रावणक अंत्येष्टि करऽमे सेहो ओ संकोच करैत छथि। मुदा धर्मज्ञ राम हुनका बुझबैत छथिन जे सम्पूर्ण शत्रुता मृत्युक संगहि समाप्त भऽ जाइत छैक, तँहि रावण हुनका अपनो लेल ओतबे आप्त छनि जते ओकर परिवारक लोककेँ छलैक।

मंथरा, सुपनेखा आ त्रिजटा एकटा आर त्रयी अछि। रामकथाकेँ आगाँ बढ़यबामे सद्भावनासँ होइ वा स्वार्थसँ वा ईर्ष्या वा द्वेषसँ होइक, सहयोग देब हिनका तीनूक लक्षण थिक। मंथराक उद्देश्य घनीभूत ईर्ष्यासँ प्रेरित अछि। एक्के रातिमे ओ अयोध्यानरेशक भविष्य बदलि दैत छनि। वाल्मीकि ओकरा पापदर्शिनी (पाप आ अगबे पापे टाकेँ देखिनिहारि) आ कैकेयीक सहोषिता (संग रहनिहारि) कहैत छथि। ओ सदिखन कैकेयीक अंतर्मनमे वैसलि रहैत अछि आ विकट रूप प्रकट करक समय अयलापर ओकरा ओ बाहर कयलक। मंथराक मंत्रणाक पाछू ओकर अपन कोनो लाभ, स्वार्थ अथवा प्रयोजन नहि रहैक, मुदा सुपनेखाकेँ अपन स्वार्थ छलैक। मुदा ओ अपन अभीष्ट-सिद्धि हेतु आवश्यक योग्यता नहि रखैत छल। इएह बात ओ कहियो बुझि नहि पओलक। मुदा ओकर ई छोट सन चूक लंकाक सर्वनाशक बीज बनि गेल : परन्तु अंततः मानव-कल्याणक हेतु वरदान सिद्ध भेल। संसारकेँ लंकेश्वरक आदंक आ अत्याचारसँ मुक्त करक श्रेय ओकरे भेटक चाही। त्रिजटा एकदम विलक्षण स्वभावक अछि : राक्षसी रहितहुँ राक्षस स्वभावसँ मुक्त अछि। यद्यपि सीताकेँ भय आ भर्त्सनाक माध्यमे रावण दिसि आकृष्ट करब ओकरा हेतु निर्धारित कर्तव्य-कर्म छैक, तथापि स्वप्नमे रामक विजय, सीता-रामक पुनर्मिलन आ लंकाक सर्वनाश आदि देखलापर ओकर स्वभाव एकदम बदलि जाइत छैक। ओ लंकामे एकटा अपवाद बनि जाइत अछि, जेना ओ अपन स्वप्नक वृत्तांत अपन सखी-बहिनपा सभकेँ सुनबैत अछि, ध्यानसँ पढ़लापर ओहिमे परम प्रकाशक प्रशस्तिमे प्रणीत पवित्र मंत्र गायत्रीक गुणगान गुंजि उठल सन प्रतीत होइत अछि।

रामायणक सभ पात्र बहुआयामी छथि आ तँहि हुनका लोकनिक गहन अध्ययन ज्ञानवर्द्धक होइत अछि। आखिर ई सभटा पात्र एकटा एहन रसद्रष्टाक कारयित्री प्रतिभाक प्रसून छथि, जनिका प्रवाहित नदीक तरंगमे एकटा पावन मानवक अंतरंग प्रतिबिंबित होइत देखबामे अबैत छनि।

इएह कलाकारक मानवीय मनोहारिता थिक।

5

मानवीय स्पर्श

सन्मनुष्यताक सात्विक अन्वेषणे वाल्मीकीय रामायणक प्रणयनक प्रमुख प्रयोजन छैक। एक गोट एहन मानवकेँ महाकवि अपन काव्यक नायक बनबऽ चाहैत रहथि, जकर मानवीय मनोहारिताक तुलनामे, ओकर पारदर्शक संप्रेषणशीलताक कारण, दिव्यत्वो मंद पड़ि जाइत अछि। रामक अयन जकरा वाल्मीकि 'रामायण' कहैत छथि, जकर कर्णधार राम नरत्वक गरिमा आ दिव्यत्वक आभाक दुर्लभ सामंजस्य संग लेने चलैत छथि ओ एहि आभाकेँ अपन भीतर आ मात्र अपने धरि सीमित राखिकऽ बाहरक संसारमे विराट प्रेम, स्नेह, दया, पुनरुत्थान आ पुनर्वासनक सुगन्धि पसारि देलनि अछि। महाकविक मानव राम एहि मूलभूत मानवमूल्य सभकेँ मात्र उद्‌बोधन धरि सीमित नहि रखैत छथि, अपितु आचरणक परिधानमे प्रस्तुत कयलनि अछि। प्रधान पात्र रामक एहि गुणक प्रभाव रामायणक लगभग सभ पात्रपर चाहे ओ नीक हो वा अधलाह—परिलक्षित होइत अछि।

राम सन विदितात्माक (जे अपन वास्तविक अस्मिताकेँ चिन्हैक) हेतु नीक-बेजाय मात्र सापेक्ष शब्द छैक। सार्वभौम आ जीव-कारुण्यक भावनासँ देखलापर हुनका हेतु एकर कोनो निरपेक्ष महत्त्व नहि छैक। जँ मानवीयताकेँ साहस, संकल्प-शक्ति आ अनुकम्पासँ संपन्न बनौल जाय तँ असत्‌केँ सत्‌मे बदलल जा सकैछ वा कम-सँ-कम ओहिमे सुधार आनल जा सकैछ। एहि मौलिक नीति आ जीवन-दर्शनक प्रभावक पर्याप्त उदाहरण रामायणमे सर्वत्र भेटैछ।

सत् आ असत्‌क ई संप्रदान आ अपादान जे कि रामक अयनक एकटा अंतर्धारा छैक, एकटा विचित्र पात्र मारीच आ ओकर माय ताटकाक संग आरंभ होइत अछि। मारीच मूलतः एकटा प्रतिष्ठित वंशक छल, कारण ओकर माय एकटा यक्षिणी छलैक। मुदा दुनू कोनो शापवश राक्षस बनि गेल। एहि प्रकारेँ ओ दुनू ऋषि-मुनि लोकनिक धार्मिक अनुष्ठानमे बाधा उत्पन्न कऽ आदंक पसारि देलक। एहि आदंकसँ आश्रम-मंडलकेँ मुक्त करक हेतु विश्वामित्र रामक सहयोग मँगलनि। विश्वामित्रक कहलापर राम ताटकाक संहार करैत छथि, ओना आरंभमे स्त्रीक वध करऽमे कने

सं़कोच होइत छनि। मारीचक मुदा ओ वध नहि करैत छथि। खाली ओकरा एकटा नीक सबक सिखाकऽ ओकर प्राणक रक्षा करैत छथि। एतऽ रामक सात्विक मानवीयता क्रियाशील अछि। ककर प्राण हरण करबाक अछि आ ककरा कठोर दंड दऽकऽ जीवनभरि मन राखऽबला सबक सिखयबाक अछि, एहि बातमे राम अपन विवेकसँ काज करैत छथि। वाल्मीकिक अनुसार, राम मानव-अस्त्रक प्रयोग कऽ मारीच आ किछु अन्य राक्षस सभकेँ दूर प्रान्तमे पहुँचा दैत छथि आ आग्नेय, वायव्य आदि अस्त्र सभसँ सुबाहु तथा दोसर राक्षस सभक संहार करैत छथि। हुनक मुख्य उद्देश्य ओकरा सभक संहार करब नहि अछि, अपितु यथासंभव उद्धार करब अछि। मारीचक प्राण, किछुए अवधिक लेल बचाकऽ राम ओकर स्वभाव-सुधारक प्रयास टा नहि, अपितु समरमे शांति स्थापित करऽमे सेहो सफलता प्राप्त कयलनि अछि। ई रामक साधारण 'समर-तंत्र' छनि, जकर प्रयोग ओ अपऩ प्रारंभिक समरसँ लऽकऽ रावणक संहार धरि कयलनि अछि। रावणक संहार करऽमे हुनक उद्देश्य जीव-कारुण्य-भावना छल, किएक तँ हुनका बुझल छलनि जे रावणक जीवैत रहलासँ सौंसे संसारक सर्वनाश अवश्यभावी छल।

मारीचक प्राण बचाकऽ राम ओकरा साधु-पुरुष बना देलनि। जखन सीता-अपहरणमे मारीचक सहयोग माँगऽ रावण जाइत अछि तँ मारीच रावणकेँ स्पष्ट कहि दैत अछि जे राम साधारण मनुष्य नहि छथि, ओ धर्मक मूर्तरूप छथि। कियो हुनकासँ सोझाँ-सोझी युद्ध नहि कऽ सकैत अछि, किएक तँ संहार आ संरक्षणक सभ संभव अस्त्र-शस्त्रपर हुनक अद्भुत अधिकार छनि। रामक उत्कट भक्तक रूपमे परिणत मारीच रावणसँ कहैत अछि· जे हमरा तँ सौंसे दंडकवन राममय दृष्टिगोचर होइत अछि, किएक तँ जत्तहि देखू ओत्तहि रामहि राम छथि। अंतमे ओकरा रामेक हाथमे अपन प्राण अर्पित करऽ पड़लैक। मुदा एहिमे ओकरा आत्मसंतोष छलैक, किएक तँ रावणक हाथे मारल जाइत ताहिसँ नीक छलैक रामक हाथे मरब। मानवताक निर्माण आ संहारक परिहार ई दू टा प्रमुख जीवनमूल्य छैक, जकरा कविकोकिल वाल्मीकि अपन क़ालजयी कृतिमे उद्घोषित कयने रहथि। एही दुनू मूल्यपर आधारित रामक मानवीय विचारमे एतऽ तीनटा चुनौती अबैछ। ताटका, मारीच आ रावण तीनू आक्रामक आ अत्याचारी छल। तथापि राम ओकरा सभकेँ बचबऽ चाहैत रहथि। मुदा जखन हुनक धैर्य आ सहनशीलता हुनका निराश कऽ दैत छनि तखन ओ विवश भऽ जाइत छथि।

रावणकेँ रणभूमिमे पहिल बेर देखिते सोझाँमे ठाढ़ परम शत्रुक ओ हृदयसँ प्रशंसा करऽ लगैत छथि। रावणक पराक्रमदीप्ति आ बाह्य तेजक सराहना करक संग

ओकरापर दया सेहो होइत छनि, पर-स्त्री आ पर-सम्पत्तिक प्रति ओकर दुर्बलतापर। अंततः हुनका ओकर संहार करहि पड़ैत छनि, जाहिसँ संसारमे सुख, शांति आ समृद्धि रहय। रावणो रामक लोकोत्तर तेजकेँ चिन्हैत अछि। मुदा ओ अपना लेल सुधारक अवसर गमा लेलक। ता बहुत विलम्ब भऽ गेल रहैक। राम जखन अपन अगोचर अस्त्र सभक प्रयोगसँ सम्पूर्ण राक्षसी सेनाकेँ भस्मसात कऽ दैत छथि तँ रावण बुझि जाइत अछि जे रामक रूपमे नारायणे ई सभ कऽ रहल छथि। रावणक उदारमना पत्नी मंदोदरी रामक सभसँ बेशी गुणगान करैत छथि। अपन भावावेशक उत्कट अभिव्यंजनामे सेहो ओ रामक आदर्श चरित्र आ सीताक असाधारण पतिपरायणताक मुक्तकंठसँ प्रशंसा करैत छथि। संगहि अपन महापराक्रमी पति रावणपर दया प्रकट करैत छथि, जे कालचक्रव्यूहमे पड़ि अपन दयनीय पर्यवसानक अपनहि कारण बनल छल। एहि प्रसंगमे मंदोदरी द्वारा व्यक्त भावुक आ भावगर्भित उद्‌गारसँ हुनक व्यवहार-कुशलता, विवेकशीलता, आ मानसिक संतुलनक पता चलैत अछि। इहो स्पष्ट होइत अछि जे लंकामे सेहो सद्‌बुद्धिक प्रचलन छलैक, ओना रावण ताहिसँ लाभान्वित नहि भऽ सकल।

भाग्यक मारल रावणक संबंधमे कुंभकर्ण सेहो मंदोदरी द्वारा व्यक्त विचारक समर्थक प्रतीत होइत अछि। जखन रावण एकटा आपातकालीन बैसारीमे अपन अन्य मित्रक संग कुंभकर्ण आ विभीषणक अभिमत मंगलक तँ कुम्भकर्ण अपन भाइक स्पष्ट आलोचना करैत कहलक जे ई जनितो जे राम एकसरे जनस्थानमे एते विशाल सेनाक संहार कऽ देलनि, हुनकर पत्नीक अपहरण करब विवेकशून्य आ अविचारित आचरण छल। बादमे रामसँ युद्ध करबाक हेतु ओकरा जगौल गेल, तखनहुँ ओ एही बातकेँ दोहरौलक। मुदा ई बुझि जे आब एहि हालतमे ओकरासँ बहस करऽमे कोनो लाभ नहि छैक, प्राणक बिनु परबाहि कयने लड़बाक आ भाइक मान-मर्यादाक रक्षा करक ओ वचन देलक आ निष्ठावान् आ प्रिय सहोदरक रूपमे अपन प्राणक आहुति देलक। वाल्मीकि कुम्भकर्णक चरित्रक एतेक प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत करैत छथि जे पाठककेँ ओकरामे साहस, दृढ़संकल्प, अनुकंपा आ स्वार्थरहित त्यागभावनाक हृदयग्राही छवि देखऽमे अबैत छैक।

सुपनेखामे सेहो गरिमा आ गौरवक अभाव नहि अछि। कमी एतबे ओकरामे छैक जे राम आ लक्ष्मणक परिहासकेँ सही परिप्रेक्ष्यमे बुझि नहि पबैत अछि। बेचारी नारी दुनू राजकुमारमेसँ कमसँ कम एकटाकेँ अपन बनयबाक दयनीय प्रयास करैत कखनो ओमहर तँ कखनो एमहर जाकऽ अपनहि हास्यास्पद बनि जाइछ। अंततोगत्वा सौंसे कांड ओकर अवमाननामे जखन परिणत भऽ जाइत अछि, तखन ओ अपन

भाइ रावण लग जाकऽ सभ वृत्तांत खूब चलाकीसँ ओकरा सुनवैत छैक। ओ अपन भाइक स्त्री-लोलुपता नीक जकाँ जनैत अछि। सीताक लोकोत्तर सौन्दर्यक विस्तारसँ वर्णन तँहि ओ करैत अछि जे ओकर मन लोभा जाइक। एकटा कनेटा झूठं वाजऽमे सेहो ओ संकोच नहि करैत अछि। ओ कहैत अछि हम तोरा लेल ओकरा मनयबाक प्रयत्न कयलहुँ आ तकरे फल थिक जे हमर नाक कटि गेल। एकटा आदर्श शासकमे कोन-कोन गुण होयवाक चाही, तकर विस्तृत विवेचन ओ रावणक आगू करैत अछि। एहिसँ पता चलैछ जे ओ शासन-प्रशासन आदिक नीक ज्ञाता अछि। तत्वतः प्रवल काज करऽमे प्रचण्ड, किन्तु आशयकेँ प्रकट करवामे अवोध एहि नारीक चित्रण करबामे आर्ष कवि वाल्मीकि मानवीय गरिमा आ पाशविक विद्वेपक बीच संतुलनक निर्वाह करैत छथि।

इंद्रजितकेँ वाल्मीकि निर्लिप्त दृष्टि आ रचनात्मक कल्पनासँ संपन्न व्यक्तिक रूपमे चित्रित करैत छथि। अपराजेय पराक्रमसँ सम्पन्न ई समर-वीर इंद्रकेँ पराजित कऽ इंद्रजितक उपाधिसँ विभूषित भेल। ताहिसँ पूर्व ओकर उपनाम मेघनाद छलैक, किएक तँ ओ मेघ जकाँ गरजैत छल। ओ परम पितृभक्त छल आ अंतिम साँस धरि ओ अपन पिताक समर्थन कयलक। ओ कहियो अपन पिताक आलोचना नहि कयलक, अपितु अपन पितासँ छोड़िकऽ गेनिहार विभीपणक ओ निंदा कयलक। युद्धमे ओ कतेको बेर महत्त्वपूर्ण भूमिका निमाहलक। युद्धक प्रारंभिक चरणमे ओ नागास्त्रक प्रयोग कऽ राम आ लक्ष्मणकेँ नागपाशमे बाँन्हि देलक। फेर दोसर चरणमे हनुमानकेँ छोड़ि शेप समस्त शत्रुसेनाकेँ मूर्छित कऽ देलक। एहि भयंकर संकटसँ पहिल चरणमे गरुड़ आ दोसर चरणमे हनुमान सभकेँ बचौलनि। ओकरा लग अद्भुत माया आ यौगिक शक्ति सभ छल, जाहि सभक प्रयोगसँ ओ अपन चारूकात अन्हार पसारि अपने अदृश्य भऽ सकैत छल आ लड़ऽकाल शत्रु ओकरा देखि नहि सकैत छलैक। ओ माता सीताक एकटा मूर्ति बनाकऽ हनुमानक सोझाँमे ओहि मूर्तिक वध कयलक आ हनुमानकेँ विश्वास भऽ गेलनि जे वास्तवमे सीताक वध भऽ चुकल छनि। बादमे जखन सत्य बात बुझैत छथि, तंखन हनुमान ओकरा कहैत छथिन जे स्त्रीक वध करब न्यायसम्मत नहि थिक, तँ ओ अपन नीति स्पष्ट करैत कहैत अछि जे शत्रुक मनोबल क्षीण करक हेतु किछु कयल जा सकैत अछि। अंतमे ओ एकटा एहन यज्ञ अनुष्ठित करक हेतु, जाहिसँ ओ जयप्रद रथ आ शक्तिशाली अस्त्र पाबि सकय, योजना बनाकऽ यज्ञशालामे प्रवेश करैत अछि, तखनहि लक्ष्मण, हनुमान आ विभीषण संगहि ओकरापर आक्रमण कऽ जबरदस्ती रणभूमिमे लऽ अनैत छथि आ लक्ष्मण द्वारा ओकर वध कयल जाइत अछि। हनुमान आ विभीषणक सहयोग

बिना लक्ष्मण एकसर ई विजय प्राप्त नहि कऽ सकितथि। इंद्रजीत एहन पराक्रमी पुत्र छल, जकर मृत्यु रावणक हेतु अशनिपात छलैक। इन्द्रजितक सवसँ पैघ गुण ई छल जे ओ कहियो अपन स्वार्थ-हेतु कोनो पाप नहि कयने छल। ओ जे किछु कयलक से मात्र अपन पिताकेँ सहारा देबाक हेतु कयलक। एहि दृष्टिसँ ओ दशरथक दत्तचित्त पुत्र सभक समकक्ष मानल जा सकैछ। दुर्भाय जे ओ रावण-सन जघन्य पिताक पुत्र छल।

जहिना लंकामे तहिना किष्किंधामे सेहो वाल्मीकि द्वारा निरूपित किछु पात्र सभमे प्रच्छन्न वा प्रकट रूपमे सौहार्द आ भ्रातृत्वक भावना देखबामे अबैत अछि। बालि आ सुग्रीव प्रारंभमे परस्पर प्रेम-भावनासँ पालित भाइ छल। स्वभावमे अंतरक कारणे आ मुख्यतः बालिक अगुताह आचरणक कारणे दुनूमे शत्रुता उत्पन्न भऽ जाइत छैक। मुदा दुनूक हृदयमे एक-दोसराक प्रति प्रेम छैक आ दुनूक आकृति एकदम मिलैत-जुलैत छैक। ओकरा दुनूक ई रूपसादृश्य एतेक अधिक छैक जे बालि आ सुग्रीवक प्रथम द्वंद्व युद्धक समय राम चिन्हिए ने सकलाह जे दुनूमे के बालि आ के सुग्रीव थिक। जखन बालि सुग्रीवक ललकारा सुनि युद्धक लेल प्रस्थान करऽ लगैत अछि तँ तारा आ बालिक बीच जे संवाद होइत छैक, ताहिसँ पता चलैत अछि जे सुग्रीवक प्रति दुनूमे कते आत्मीयता छैक, कते वात्सल्य आ प्रेम छैक। तारा बेर-बेर बालिसँ निवेदन करैत अछि जे ओ सुग्रीवक संग प्रेम आ स्नेहसँ व्यवहार करय। बालि ताराक बात मानियो जाइत अछि आ ओकरा आश्वासनो दैत छैक जे ओ सुग्रीवक संहार नहि करत, मात्र कठोर आघातसँ ओकरा सबक सिखाकऽ छोड़ि देत। बालिक निर्मम आ निष्ठुर व्यवहारक अछैतो सुग्रीवक मनमे अपन अग्रजक प्रति आदर आ प्रेम छैक। जखन अंततः बालिक संहार भऽ जाइत छैक आ तारा बालि लग बैसिकऽ विलाप करऽ लगैत अछि तँ सुग्रीवक कोमल हृदय विक्षुब्ध भऽ जाइत छैक। अपनहिपर दया आ आक्रोश प्रकट करैत ओ पछताइत अछि जे अपन अग्रजक प्रति ओकरा एतेटा अन्याय नहि करक चाहैत छल आ तकर प्रायश्चित्तक रूपमे ओ अपन प्राणत्यागक निर्णय करैत अछि। राम अपन विशिष्ट प्रबंध-पटुताक माध्यमसँ एहि संकटक समाधान कऽ तारा आ सुग्रीव दुनूकेँ वस्तुस्थितिक प्रति सजग कऽ दैत छथि। ओ बालिकेँ सेहो बुझबैत छथि जे ओकरा अपन छोट भाइक संग एते निष्ठुरता नहि देखयबाक चाहैत छल आ तकरे परिणाम ई दुःखद विराम छैक। अंतिम साँस लैत काल बालि अपन पुत्र अंगदक लालन-पालनक दायित्व सुग्रीवकेँ सौँपैत ओकरा विचार दैत छैक जे ओ सभ दिन ताराक मंत्रणाक अनुसार काज करैत रहय। ओ सुग्रीवसँ अपन सभ गलतीक लेल क्षमा सेहो मंगैत

अछि, यद्यपि ओ सुग्रीवक जेठ भाइ छल। अंतिम उपहारक रूपमे ओ सुग्रीवकेँ अपन स्वर्णिम कंठहार प्रदान करैत अछि, जकरा संगहि ओकर सभ शक्ति, प्रभुता, वैभव आ तेज सुग्रीवकेँ प्राप्त भऽ जाइत छैक। दुनू भाइक बीच अंतिम काल घटित सौहार्दक ई संस्पर्श पूर्वक समस्त पापकृत्य आ कमीकेँ परिमार्जित कऽ दैत अछि, जाहि दुआरे ओ एक दोसरसँ फराक भऽ गेल छल।

सुमंत्र, गुह (केवट) आ जटायु सन किछु गौण पात्र सभ सेहो वाल्मीकिमे छथि, जनिका सभक रामक अयनक विभिन्न दशा सभमे मानव-मूल्यक संवर्धनमे महत्त्वपूर्ण योगदान रहल अछि। सुमंत्रक उल्लेख रामक जन्मसँ पहिनेसँ भेटैत अछि। सुमंत्रे राजा दशरथकेँ विचार देलथिन जे ऋष्यशृंग नामक एकटा महान् ऋषिक सहयोगसँ ओ पुत्रकामेष्टिक अनुष्ठान करथि, जाहिसँ हुनका पुत्रलाभ होनि। पुराणक भविष्यवाणीक आधारपर ओ ई विचार दैत छथिन। तदनुसारे तीन रानीसँ चारि पुत्र होइत छनि। तँहि इक्ष्वाकुवंशमे राम तथा हुनक तीन भाइक आविर्भाव सुमंत्रक सुचिंतित विचारेक परिणाम थिक। तेँ ने वाल्मीकि हुनका 'पुराणविद्' आ 'मंत्रकोविद' कहैत छथि। सुमंत्र रामक रथक सारथी छथि। एकर अतिरिक्त, राज-परिवारमे ओ संवाद-संधायक आ परामर्शदाता सेहो छथि। रामक प्रति हुनका मनमे खूब सम्मानक भावना छनि आ हुनकासँ पैघ-पैघ आकांक्षा सेहो छनि। राज्याभिषेकक प्रस्ताव रामक समक्ष राखक हेतु दशरथ जखन रामकेँ बजौलथिन, तखन सुमंत्रे रामकेँ दशरथ लग लऽ गेलथिन। फेर जखन ई प्रस्ताव कैकेयीक हस्तक्षेपसँ निरस्त भऽ जाइत अछि, तथापि अर्द्ध-चेतन अवस्थामे पड़ल व्यथित दशरथक दिससँ रामकेँ अपना ओतऽ बजाबक लेल कैकेयी समुंत्रेकेँ पठबैत छथिन। सुमंत्र जखन कैकेयीक आदेशपालन करऽमे हिचकिचाइत छथि तँ दशरथ साहस कऽकऽ सुमंत्रकेँ कहैत छथिन जे हम रामक सुंदर मुखमंडल जल्दी देखऽ चाहैत छी। तथापि सुमंत्र बाहर जाक़ऽ कनेके कालमे घुरि अबैत छथि आ राजाकेँ कहैत छथि जे बाहरमे सभ राजप्रमुख अपनेक प्रतीक्षा कऽ रहल छथि आ राज्याभिषेक देखबाक हेतु उत्सुक छथि। राजा दशरथ ई सुनि विवश आ विह्वल भऽकऽ हुनका घुरा दैत छथिन आ अपन कर्तव्य-पालन करऽ कहैत छथिन। एहि अवसरपर सुमंत्रक मानस-मंथन आ कैकेयीक महलसँ राम-भवन धरि हुनक जैब-ऐब शब्द शिल्पी वाल्मीकिक भाषामे प्रत्यक्ष समीक्षाक रूप धारण कऽ लैत अछि। वनवासक आज्ञा लऽकऽ कैकेयीक महलसँ बहरायल राम संस्कार आ संयमक परिचय दैत रथ छोड़ि पयरे चलब पसिन्न करैत छथि। एहि आकस्मिक आमूल परिवर्तनकेँ देखि सुमंत्र स्तब्ध आ क्षुब्ध भऽ जाइत छथि। जखन राम सीता आ लक्ष्मणकेँ संग लऽकऽ वन जयबाक अनुमति मांगऽ राजा दशरथ लग जाइत छथि तँ सुमंत्र कैकेयीक

सोझाँ आ वशिष्ठक पाँजरमे ठाढ़ भऽकऽ अपन क्रोध आ आक्रोश प्रकट करऽमे संकोच नहि करैत छथि आ एहि भर्त्सनामे वशिष्ठ सेहो हुनकर समर्थन करैत छथिन। ओ घोषित करैत छथि जे हम रामक चरणचिह्नक अनुसरण करैत हुनका संगे चलब। अहाँक कुटिल योजना आ क्रूर कार्यक हम कनियो समर्थन नहि करब। किंतु कैकेयी अपन बातपर डटल रहैत छथि आ राम बहरा जाइत छथि। सौभाग्यसँ जनपदसँ बाहर धरि जयबालेल राजमहलक रथक उपयोग करबाक पिताक अनुरोध राम स्वीकार करैत छथि। सुमंत्र एतबेमे संतुष्ट भऽ जाइत छथि आओर 'महत्त्रयी'केँ अपन रथपर बैसाकऽ चलि पड़ैत छथि।

गंगा नदी पार करऽ धरि सुमंत्रकेँ रामक सान्निध्यक आनंद भेटैत छनि। राम जखन हुनका अपना लग बजाकऽ अत्यंत आत्मीयताक संग अयोध्यामे आइ धरि बितौल सारथी-जीवनक मधुर क्षणक स्मरण करैत अपन हार्दिक प्रसन्नता प्रकट करैत छथि तँ सुमंत्रक मन फूल जकाँ प्रफुल्लित भऽ जाइत छनि। रामक शब्द-माधुरी सुनैत सुमंत्र मंत्रमुग्ध भेल उत्तर देबाक हेतु शब्द नहि ताकि पबैत छथि। गुहक संग बैसिकऽ हुनक जे विलक्षण क्षण व्यतीत भेल, ओ ने मात्र ओकरहि लेल अपितु वाल्मीकिक प्रबुद्ध पाठक वर्गक हेतु सेहो चिरस्मरणीय भऽ जाइछ। रामक दुनू आराधक रातिभरि जागिकऽ उच्च जाग्रत भावनामे लीन महान् आत्मा रामक संबंधमे गप्प करैत बैसल रहलाह। लक्ष्मण सेहो ओहिमे आबिकऽ बैसि गेलाह। सुमंत्र खाली रथ लऽकऽ अयोध्या घुरय नहि चाहैत रहथि। किंतु राम कहुना बुझा-सुझाकऽ हुनका घुरौलनि। तथापि ओ एकदिन गुहक ओतऽ थम्हि रामक घुरि अयबाक सांयोगिक संभावनाक प्रतीक्षा करैत छथि। आखिरमे जखन ओ रथ चलयबाक प्रयास करैत छथि तँ घोड़ा आगू नहि बढ़ैत छनि। एहि मार्मिक प्रसंगक वर्णन अयोध्या घुरलापर सुमंत्र दशरथकेँ सुनबैत छथिन, तखन एहन बुझि पड़ैत छनि जेना रामक मानवीय मनोहारिता हुनक घनिष्ठ परिजन आ पुरजनक सीमा टपिकऽ पशुक हृदयकेँ सेहो स्पंदित करऽ लगैत छैक। राम, सीता आ लक्ष्मण गंगा पार करऽसँ पहिने सुमंत्रकेँ घुरबाक काल जे भावपूर्ण बात कहैत छथि ताहिसँ सुमंत्र अपने भाव-विह्वल भऽ जाइत छथि। अयोध्यामे ई बात राजा-रानीकेँ सुनौलनि। मुदा एहि यथार्थ वर्णनसँ वृद्ध दंपतिक मनमे तुरंत रामक लग जयबाक तीव्र लालसा उत्पन्न होइत छनि। एहि समस्त प्रसंगकेँ दार्शनिक रूप दऽ मंत्रकोविद सुमंत्र हुनका सांत्वना दैत कहैत छथि—

न शोच्यास्ते न चात्मा ते शोच्यो नापि जनाधिपः।
इदं हि चरितं लोके प्रतिष्ठास्यति शाश्वतम्।।

(माताजी, एहिमे चिंता करक कोनो बात नहि छैक, ने अपने लेल आ ने राजाक

लेल। ई जे किछु भऽ रहल छैक, ई संसारमे एकटा शाश्वत इतिहास बनाबऽ जा रहल अछि।)

एतऽ महाकवि वाल्मीकि अपने सुमंत्र बनिकऽ अपन महामानवक ऐतिहासिक जनकल्याणकारी अभियानकेँ सार्वकालिक आ सार्वत्रिक घोषित करैत बुझि पड़ैत छथि। एकटा साधारण राज-सारथीक रूपमे प्रारंभ कऽ राजवेत्ता, तत्त्ववेत्ता, आ अंतमे प्रवक्ताक रूपमे विकसित सुमंत्र ई सभ क्षमता रामक मानवीय मनोहारिता आ आध्यात्मिक तेजस्वितासँ प्राप्त करैत छथि।

वाल्मीकिक शब्दमे रामक 'आत्मसखा'क रूपमे रामक अयनमे प्रवेश कयनिहार गुह सेहो एकटा रहस्यमय व्यक्तित्व अछि। जन्मसँ निषाद कुलक होइतो शृंगवेरपुर राज्यक्षेत्रक ई अधिपति बनि जाइत अछि, जकरा अधीनमे कतेको नाविक आ आश्विक रहैत छैक। ई सभ अयोध्याक लेल सीमारक्षकक भूमिका निमाहैत छल। अपन राज्यमे रामक भव्य स्वागत कयलाक बाद गुह हुनक खूब प्रेमसँ अतिथि-सत्कार करैत अछि आ अपन राज्यो हुनका समर्पित करबा लेल तैयार भऽ जाइत अछि। राम ओकरा कंठ लगाकऽ ओकर स्नेहपूर्ण सत्कार लेल आभार प्रकट करैत छथि। लक्ष्मण द्वारा अपनहि आनल गेल शीतल जल छोड़ि ओ किछु स्वीकार नहि करैत छथि। जे घोड़ा सभ हुनका एतऽधरि अनलक ओकरा खुएबाक हेतु ओ गुहकेँ कहैत छथिन, किएक तँ एक-दू दिनमे एहि घोड़ा सभकेँ सेहो विदा करऽवला छथि। राम गुहक राज्यमे शांति-सुख आ समृद्धिक विषयमे सेहो जिज्ञासा प्रकट करैत छथि। जखन गुह लक्ष्मणकेँ विश्राम करक हेतु आग्रह करैत छथि तँ लक्ष्मण गुहसँ गप्प करैत राति बितैबामे अधिक आनंदक अनुभव करैत छथि। अगिला दिन गुह नावक प्रबंध करैत अछि, जाहिपर सीता, राम आ लक्ष्मण गंगापार कऽ अपन वनवास आरंभ करैत छथि।

गुहक दर्शन फेर तखन होइत अछि जखन भरत अपन भाइ रामकेँ घुराकऽ अयोध्या लऽ जयबाक हेतु ओहि राज्य देने चलैत छथि। विशाल सेनाकेँ लऽ कऽ भरतकेँ अबैत देखिते गुहकेँ संदेह होइत छैक। मुदा, वास्तविकताक पता लगिते ओ हुनका प्रेमसँ स्वागत-सत्कार करैत अछि आ गंगा पार करऽमे हुनक विशाल सेनाक सेहो मदति करैत अछि। एहि प्रसंगमे गुहक लेल वाल्मीकि एकटा सार्थक संज्ञाक प्रयोग करैत छथि, 'गहन-गोचर' (गहींरमे जाकऽ जाननिहार आ गहींरे मे गेलापर बुझऽमे अयनिहार)। ताहिकालमे वास्तवमे गुह भरतक हृदयक भीतर नुकैल वास्तविकताकेँ बुझक प्रयास कऽ रहल छल। मुदा अत्यंत सात्विक विनम्रतासँ हुनका सोझाँ कर जोड़ि ठाढ़ भऽकऽ। गुहक एहि गाम्भीर्यकेँ स्पष्ट करक लेल वाल्मीकि एहि शब्दकेँ दू-तीन बेर दोहरौलनि अछि। एहि 'गहन-गोचर' गुहकेँ जहिना पता

चलैत छैक जे भरतक हृदय आकाश सन निर्मल छनि, तखनेसँ ओ सौँसे राति भरतक संग गप्प करैत आनंदसँ बितबैत अछि। लक्ष्मण कते महान्, उदार आ सात्विक छथि एहि विषयमे गुह खूब विस्तारसँ भरतकेँ कहैत छनि। सीता, राम आ लक्ष्मणकेँ अपन अतिथिक रूपमे पाबिकऽ अपनाकेँ धन्य बुझैत अछि। रामसँ बढ़िकऽ एहि संसारमे हमरा हेतु आर कोनो वस्तु प्रियतर नहि अछि, ई लक्ष्मणक वाक्य छल, जकरा गुह भरतक सोझाँमे दोहरबैत अछि। राम, सीता आ लक्ष्मणक विषयमे भरत कते प्रश्न पुछैत छथि, जेना ओ कतऽ सुतल रहथि, की खाइत रहथि, की कहने रहथि आदि-आदि। एहि सभ वातक उत्तर गुह हृदयंगम भाषामे दैत छथि। हुनक सभ बात सुनलाक बाद भरत अपनहि वनवासक अनुरूप संयत जीवन व्यतीत करवाक संकल्प लऽ लैत छथि।

एहि प्रकारेँ अयोध्याक चारू राजकुमारक संग गुहक संबंध अत्यंत महत्त्वपूर्ण अछि। वास्तवमे रामक वनवास गुहक राज्य क्षेत्रसँ आरंभ होइत अछि, एहि चौदह वर्षक वनवासक समाप्तिपर फेर भरद्वाजक आश्रममे एहि महत्त्रयीसँ गुहकेँ भेट होइत छैक। जँ भरतकेँ आकाश जकाँ निर्मल कहल जाय तँ गुहकेँ अग्निक समान पवित्र मानल जा सकैत अछि। रामक दर्शन होइते गुह अपन सुधि-बुधि हेरा बैसैत अछि आ अपन सर्वस्व, अपन राज्य समेत, हुनक चरणमे अर्पित कऽ दैत अछि। राम तँ ओकर हृदयेश्वर बनि जाइत छथि।

मर्यादापुरुषोत्तम रामक पुरुषार्थ-साधना हुनक वनवास जीवनमे ने मात्र स्त्री-पुरुष, साधु-संत, देव-दानव आदि धरि सीमित छल, अपितु पशु-पक्षी धरि व्याप्त छल। जटायुक नाम एही संदर्भमे लेल जा सकैत अछि। पंचवटीक मार्गपर राम एहि विराट पक्षिराजकेँ देखलनि। बलिष्ठ पाँखिसँ हृष्ट-पुष्ट एहि प्राणीकेँ देखिकऽ राम एकरा राक्षस बुझलनि। मुदा जखन जटायु अपन परिचय दैत अपनाकेँ दशरथक मित्र कहैत अछि तँ राम ओकरा अपन पिताक आत्मसखा बुझि आदर-सत्कारक संग गप्प करैत छथि। जटायु अपन वंशानुक्रम सुनबैत दुनू भाइक अनुपस्थितिमे सीताक सुरक्षाक दायित्व स्वीकार करबाक हेतु अपन तत्परता देखबैत अछि। जटायुक बातमे रामकेँ पिताक वात्सल्य मन पड़ि जाइत छनि आ वंचित वात्सल्यकेँ पुनः प्राप्त करक भावनासँ जटायुक सोझाँ ठेहुनियाँ दऽ ओकरा कंठ लगबैत छथि।

जटायुक अभीष्ट सहायताक समुचित उपयोगक लेल सही अवसर आबिए जाइत अछि, जखन रावण सीताक अपहरण करऽ अबैत अछि। असहाय अवस्थामे सीता चेतन अचेतन समस्त जीव-जन्तुसँ अनुरोध करैत छथि जे अपहरणक ई समाचार कियो राम धरि पहुँचा दिअय। अपन सम्पूर्ण शक्ति लगाकऽ ओ रावणसँ

लड़ि-झपटिकऽ ओकर रथ टुकड़ी-टुकड़ी कऽ दैत अछि, सारथीकेँ मारि दैत अछि आ अन्तमे अपन प्राणक आहुति सेहो दैत अछि। ई नीक जकाँ बुझैत जे रावण सन शक्तिशाली राक्षसक सामना ओ नहि कऽ सकत, द्वंद्व युद्धक लेल ओकरा ललकारिकऽ अंतिम साँसधरि प्रतिरोध करैत अछि। सीताकेँ एहि घोर विपत्तिसँ बचयबाक ओ पूरा प्रयास करैत अछि, मुदा ओकर प्राणो सीताकेँ एहि अनर्थसँ बचा नहि पबैत अछि, तथापि अपन अदम्य इच्छा-शक्तिसँ ओ अपन प्राण ताधरि नहि त्याग करैत अछि जा धरि राम ओतऽ पहुँचि नहि जाइत छथिन आ सीताक संबंधमे जिज्ञासा नहि करैत छथिन।

प्रारंभमे जटायुकेँ शोणितसँ लथपथ भेल जमीनपर पड़ल देखि राम हड़बड़ीमे एहि निष्कर्षपर पहुँचैत छथि जे इएह पक्षी सीताकेँ खा लेने हैत। मुदा जखन जटायु सभ वृत्तांत सुनबैत छनि, तखन राम बिलखि-बिलखि कानऽ लगैत छथि आ हुनका कंठमे लगा लैत छथि। ओ अपन भाग्यकेँ कोसैत छथि, जाहि दुआरेसँ ओ ने मात्र राज्यसँ वंचित भेलाह अपितु घरो छोड़ि वन पड़ाय पड़लनि। अपन स्त्रीसँ दूर कऽ देल गेलाह अछि, आ अपन प्राण अर्पित कऽ स्वामीक सहायता कयनिहार गृद्धराजकेँ सेहो बचा नहि पओलनि, जे साध्वी सीताकेँ बचयबाक अंतिम साँस धरि प्रयास कयलक। एकदम एकसरे, संकीर्ण गलीमे पड़ल गृद्धराज लग बैसिकऽ राम निःसहाय स्वरमे एहि दुःखद घटनाक संबंधमे विस्तारसँ जानक लेल कते प्रश्न पूछैत छथिन—सीता की कहलनि, ई सभ कोना भेल, आदि-आदि। जटायु जाधरि ओकरा स्वर संग दैत छैक, ताधरि सभ किछु कहैत छनि आ हुनका सांत्वना दैत छनि जे जखन ई घटना घटल, ओकरा 'विंद' नामक मुहूर्त्त कहल जाइत छैक आ एहि मुहूर्त्तमे हेरायल धन अंततः ओकर स्वामी लग घुरिकऽ आबि जाइत छैक। अपन देहक बँचल सभ शक्ति समेटि जटायु रावणक नाम कहि ओकरा विषयमे जे किछु कहबाक रहैक, सभ किछु प्राण-त्याग करऽ कालधरि कहैत रहल।

राम जटायुक अंत्येष्टि आदर-सत्कारपूर्वक अपने करैत छथि आ दाह-संस्कार करऽकाल प्रार्थना करैत छथि जे भू-दान आदि यज्ञक अनुष्ठानसँ महात्मा लोकनि जे लोक प्राप्त करैत छथि, ताहि लोककेँ जटायु प्राप्त करथु। राम जे काज अपन पूज्य पिताक लेल नहि कऽ सकलाह, से काज पुण्यात्मा जटायुकेँ पूजनीय आ मान्य बुझि कऽ रहल छथि। सौंसे रामकथामे दुइए गोटे राम-सीताक लेल प्राण-त्याग कयने रहथि—राजा दशरथ आ गृद्धराज जटायु। जटायुक त्याग मानवीय दृष्टिकोणसँ दशरथक मृत्युसँ अधिक मर्मस्पर्शी अछि। दुनू करुणापूर्ण घटना थिक, मुदा दोसर घटना रामक हृदयक अंतरतम स्तरकेँ विचलित कऽ दैत अछि, किएक तँ ई प्रसंग

रामकेँ पुरना बात मन पाड़ि दैत छनि जे दुर्भाग्यक ई घटना, हुनके शब्दमे, ज्वालाकेँ जरौनिहार दाहक प्रसंग थिक (दहेदपिहि पावकम्)। रामक नाम लऽकऽ प्राण छोड़ऽकाल राजा दशरथकेँ राम देखने नहि रहथिन, मुदा आखिरी साँस धरि सीतायन सुनबैत रामकेँ सांत्वना दैत शनैः शनैः देह त्याग कयनिहार जटायुकेँ आब ओ अपना आँखिक सोझाँमे देखि रहल छथि—मरितो आ मरण-यातनासँ मुक्त, जीवनमुक्त जटायुकेँ। जटायु सीताक लेल अपन प्राण अर्पित कऽ देलक, जखन कि दशरथक मृत्यु रामक वियोगमे भेल।

दशरथक व्यथा मुदा जटायुक निधनसँ अधिक हृदय-विदारक अछि, किएक तँ जटायुकेँ एहि बातक कमसँ कम संतोष छलैक जे ओ रामकेँ सीताक जानकारी दऽ सकल, जाहिसँ राम सीताकेँ पाबि सकताह। राम वन-गमन आरंभ कयलनि आ दशरथ तखनहि टूटिकऽ खसि पड़लाह। ओ कौशल्याकेँ कहैत छथि जे हुनक दृष्टि रामक संगहि चल गेल आ फेर कहियो घुरिकऽ नहि आओत। हुनक व्यथा एते गंभीर छल जे ओ अपनहुँ नहि बुझि सकथि। सत्य की थिक, असत्य की थिक, एकरा ओ चिन्हि नहि पबैत छलाह, किएक तँ कैकेयी अपन दुष्टतासँ एहि तत्त्व सभक परिभाषा बदलि देने छलीह। हुनक विद्रोह, हुनक अपन विवशता क्षुद्र स्वार्थक विरुद्ध छल, जाहि कारणसँ सत्य आ धर्म सन मौलिक मानव मूल्यक लेल सर्वात्मना समर्पित सुसंस्कृत परिवारमे धर्मसंकट उत्पन्न भऽ गेल छल। एहि दुनू मूल्यक बीच भयंकर संघर्ष हुनका मनकेँ झिकझोरैत रहल। ओ ने सत्यकेँ नकारि पाबि रहल छथि आ ने अपन धर्मक निर्भीकतासँ पालन कऽ पाबि रहल छथि। इएह अंतर्द्वंद्व हुनक दयनीय अवसानक कारण भेल। मुदा हुनकर दुनू उदारमना पुत्र (राम आ भरत) मानवतामे मानवजातिक विश्वासकेँ पुनः प्रतिष्ठित कऽ देलनि अछि आ सत्य, धर्म, प्रेम, दया, कर्तव्यपरायणता, स्वार्थजयी सेवा-भावना सन सनातन जीवनमूल्यक संजीवनी शक्तिकेँ पुनः स्थापित कयलनि।

वाल्मीकिक पात्र सभक चरित्र-चित्रणक एकटा महत्त्वपूर्ण विशेषता ई थिक जे मानव-जातिक प्रतिष्ठा तखनहि उच्च शिखर धरि पहुँचि पबैत अछि जखन मानव-मूल्य संकटमे पड़ि जाइत अछि। देखऽमे ई कने अटपट अवश्य लगैत छैक, मुदा समस्त जीव-जगतक अस्तित्व ओ भव्यताक आधारशिला इएह थिक। एही सनातन सत्यसँ जीवधारीक निरंतर संघर्ष आ ओकर जीवाक लालसाकेँ बल आ संबल भेटैत रहैत छैक। वाल्मीकि अपन कालजयी कृतिक लगभग सभ पात्रक माध्यमसँ एही बातकेँ रेखांकित करऽ चाहैत छथि।

6

कलात्मक कर-स्पर्श

वाल्मीकिक कलात्मक श्रेष्ठता हुनक अनुभूतिक सत्य आ अभिव्यक्तिक सरलतामे समाविष्ट अछि। हुनक शब्दमे ऊष्मा छनि, संवेगमे संतुलन छनि आ आख्यानमे सहज समरसता छनि। ओ अपना दिसिसँ कम कहैत छथि आ अपन पात्र सभसँ अधिक कहबैत छथि। मानव-स्वभावमे हुनक सात्विक अंतर्दृष्टि छनि आ अपन पात्र सभक चालि-चलनि आ आचार-विचारकेँ संशोधित कऽ प्रस्तुत करवाक अद्‌भुत कौशल छनि। सभसँ बढ़ि भाषाक गतिशीलताक ओ प्रवाचक छथि। कखनो-कखनो पात्रक मौन मुखरित वाणीसँ अधिक आकर्षक लगैत अछि आ वाग्‌-विलास अन्य सभ हास-विलासकेँ मौन बना दैत अछि। सारांश ई जे प्रवक्ताक प्रजागर-दृष्टिसँ संपन्न महाकविक रूपमे हुनक सफलताक रहस्य हुनक गंभीर साधना आ सात्विक स्वाध्यायमे निहित अछि।

रामायणक कथा-वस्तु अत्यंत सरल, संक्षिप्त आ सोझ-साझ अछि। मुदा वाल्मीकि जे ओकरा कलात्मक स्पर्श देलनि अछि आ हृदयक जाहि अभिव्यंजना सँ रंजित कयलनि अछि, ताहिसँ विश्वक मनमोहक आख्यायिकामे ई अन्यतम बनि गेल अछि। विभिन्न घटना सभक पूर्व संबंध जोड़िकऽ ताहि सभमे कलात्मक सौष्ठवक रचनामे ओ औंचित्य आ समतुल्यताक परिमार्जित रुचिक परिचय देलनि अछि। हुनक कथा-कथनक शैलीमे तँ एकटा अंतःसत्व आकर्षण परिलक्षित होइत अछि। एही लेल हुनक कृतित्वकेँ 'मधुरं मधुराक्षरम्‌' कहिकऽ सराहल जाइत अछि।

कथाक आरंभ अयोध्याक आपात मधुर वर्णनसँ होइत छैक आ ओकर उपसंहार रामक चिरप्रतीक्षित राज्याभिषेक समारोहक संग होइत अछि जे कि रामक अयोध्या घुरलापर संपन्न होइत छैक। पहिल चारि सर्ग कथावस्तुक पूर्वपीठिका प्रस्तुत करैत अछि आ उत्तरकाण्ड परिशिष्ट वा अनुबंधक रूपमे जोड़ल गेल अछि। कत्तहु-कत्तहु किछु प्रक्षिप्त अंश सेहो देखबामे अबैत अछि।

वाल्मीकिक काव्य-मानससँ परिचित कोनो प्रबुद्ध पाठक एकरा चीन्हि सकैत अछि। वाल्मीकि रामायणपर आधारित कते रामकाव्य बादमे प्रचलित भेल।

आदि-कविक आद्यकृतिक प्रासंगिकता, प्रतिष्ठा आ प्रामाणिकता तथापि जहिनाक तहिना बनले रहल। जे कोनो नव उद्‌भावना कयल गेल, ताहिसँ मूलक महिमा आ मान्यतामे वृद्धिए भेल अछि।

सम्पूर्ण कथामे लगभग एक सय पात्र अछि आ प्रत्येक पात्रक अपन विशिष्ट व्यक्तित्व स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत छैक। कोनो दू टा पात्र एक रंगक नहि अछि। गौणसँ गौण पात्रकेँ सेहो खूब सावधानीक संग प्रस्तुत कयल गेल अछि। वाल्मीकि किछु पात्रकेँ जाहि रूपमे प्रस्तुत कयलनि अछि, ओकरा पाछू हुनक उद्देश्य आ एहन रूप-कल्पनाक सार्थकता परवर्ती रामकाव्यक प्रणेता ठीक-ठीक बुझि नहि पौलनि। उदाहरणार्थ वाल्मीकिक अनुसार अहल्या पाथर बनिकऽ पड़ल नहि रहलीह आ ने रामे ओहि पाथरपर अपन पयर रखलनि। शापक विधान आ शापविमोचनक प्रकार किछु दोसरे छल। महर्षि गौतमक देल शाप मात्र एतबे छल जे जाधरि रामक दर्शन नहि होयतनि ताधरि ओ वाह्य जगतक हेतु अगोचर रहतीह। रामक दर्शन मात्रसँ आ हुनक प्रेमपूर्ण वाणी सुनितँहि अहल्याकेँ अपन निजी स्वरूप फेर सँ भेटि जयतनि। तहिना लक्ष्मण पंचवटीमे सीताकेँ एकसरे छोड़िकऽ जाइत काल कोनो एहन रेखा नहि घिचने रहथि, जकरा टपलापर सीताकेँ कष्ट भोगऽ पड़ितनि। 'लक्ष्मण रेखा'क रूपमे परवर्ती रामकथा-परंपरामे प्रख्यात एहि रेखाक कोनो उल्लेख नहि भेटैत अछि। मुदा समय-गतिक संग ई रेखा एते लोकप्रिय भऽ गेल जे आब ओकरा मेटायब कठिन अछि। सीताक अपहरण वाल्मीकिक रावण हुनकर केश पकड़िकऽ आ हुनक देहकेँ अपना बाँहिसँ उठाकऽ करैत अछि। मुदा परवर्ती राम-काव्यक प्रणेता लोकनिकेँ ई उचित नहि लगलनि, तेँ ओ सभ एकर विभिन्न प्रकारक वर्णन कयलनि अछि। तहिना अग्निपरीक्षासँ पहिने राम सीताकेँ जे कठोर वचन कहैत छथिन, ओकरो परवर्ती कथाकार पचा नहि सकलाह। तेँ ओ सभ एहि प्रसंगकेँ दोसर ढंगे प्रस्तुत कयलनि। रावणक संहार राम अंतमे कोना कयलनि, तकरो कते प्रकारक वर्णन भेटैत अछि।

ई सभ होइतो, वाल्मीकि अपन 'रामायण'क एहि महान् इतिवृत्तकेँ अभिकल्पित, प्रतिपादित आ आख्यायित करबाक कलात्मक परियोजनामे सर्वोपरि मानल जाइत छथि। एहि सार्वकालिक आ सर्वजनीन महाकाव्यक वास्तविक महत्त्व, साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आ आध्यात्मिक दृष्टिसँ बुझबाक हेतु मूलरूपमे रामायणक अध्ययन करब आवश्यक छैक।

कथा-कथन एकटा कौशल थिक जकरा व्याख्यायित करबाक हेतु वाल्मीकि दू टा ऋषिक कथाशिल्प हमरा लोकनिक सोझाँ नमूनाक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि।

ई छथि विश्वामित्र आ शतानंद। विश्वामित्र दुनू राजकुमारकेँ अपन आश्रम लऽ जाइत काल मार्गमे कते कथा-पिहानी सुनबैत छथिन। दुनू राजकुमार जखन मिथिला पहुँचैत छथि तँ महाराज जनकक राजपुरोहित शतानंद विश्वामित्रक वृत्तांत राजकुमारकेँ सुनबैत छथि। ई दुनू ऋषि जखन कथा सुनबैत छथिन तँ दुनू राजकुमारक मन कथावस्तु आ कथाशिल्पमे एते रमि जाइत छनि जे ओहि रमणीयताकेँ छोड़ि हुनका लोकनिक मनमे कोनो अनुभूति प्रवेश नहि कऽ पबैत छनि। रामायणक विभिन्न प्रसंगक वर्णन करक काल वाल्मीकि सेहो एही कथाशिल्पकेँ अपनौलनि अछि।

रामायणक प्रथम रोमांचक प्रसंग रामक अप्रत्याशित वनवास अछि। घटनाक्रमक दिशा आ दशा जखनहि एक छोरसँ दोसर छोर दिस अकस्मात् घुमऽ लगैत अछि तँ एहि आमूल परिवर्तनसँ संबंधित विभिन्न पात्रक प्रतिक्रियाक सजग निरूपण करऽमे कथाशिल्पीक सोझाँ कते समस्या सभ अबैत छनि। सभसँ अधिक प्रभावित पात्र दशरथ छथि, जे कैकेयीक निष्ठुर प्रहारक पहिल प्रभावित व्यक्ति बनि गेल छथि। ओ निःसहाय छथि, किएक तँ ने कैकेयी हुनकर बात मानक हेतु तैयार छथिन आ ने राम अपन कर्तव्यसँ हटनिहार छथि। एहि दुनू गोटामेसँ कियो हुनका आफियत नहि दऽ सकलथिन। कैकेयी जँ अपन माँगसँ हँटि जइतथि अथवा राम अपन राज्यक अधिकारपर जोर दितथि, जेना राजा दशरथ अपने हुनका बुझबैत छथि, तँ हुनक काज सिद्ध भऽ जइतनि आ ओ प्रसन्न भऽ जइतथि। मुदा दुनूमेसँ कोनो मार्ग नहि खुजल, एक दिस कैकेयी अपन स्वार्थसिद्धिपर डटल रहलीह, दोसर दिस राम अपन सात्विक निःस्वार्थतापर अटल रहलाह। अंतःपुरक एहि मानस-मंथनकेँ आओर अधिक भयावह बनौनिहार उत्कट व्यग्रता राजमहलसँ बाहर बढ़ल जाइत अछि। सभ राजप्रमुख राजमहलसँ बाहर महाराज दशरथक सातुर प्रतीक्षा करैत रहथि, कारण राज्याभिषेकक मुहूर्त्त आबि गेल छल। सम्पूर्ण अयोध्या रामक राज्याभिषेकक आनंद-महोत्सवक प्रतीक्षा कऽ रहल छल। एहन विषम परिस्थितिक कारण सभ संबद्ध व्यक्तिक मनमे भीषण द्वंद्व चलि रहल छल। राजमहलक भीतर जे किछु भऽ रहल छलैक ताहिसँ बाहरक मनोदशा एकदम मेल नहि खाइत छल। पिताक बजौलापर जखन राम राजमहल दिस बिदा होइत छथि, तखन बाटमे झुंडक झुंड लोक रामक बाट छेकि हुनक प्रसन्न मुखमंडलक एकटा झलकी पाबि वास्तवमे आनंदित होइत अछि। जँ रामक दृष्टि हुनका लोकनिपर पड़ैत छनि तँ ओ सभ अपनाकेँ धन्य मानैत छथि आ हर्षातिरेकमे पुलकित भऽ जाइत छथि। विधिक विडंबनासँ उत्पन्न एहि विचित्र परिस्थितिक वर्णन करऽमे

वाल्मीकि अपन कल्पना ओ सृजनशीलताक अद्‌भुत् परिचय दैत छथि। राम, दशरथ, कौशल्या, सीता आ लक्ष्मण-सन प्रमुख पात्र लोकनिक व्यक्ति-वैचित्र्य एहिसँ कुशलतापूर्वक अभिव्यक्त भेल अछि। रामकेँ वन जयबासँ रोकक हेतु अंतिम प्रयासमे दशरथ कहैत छथि—

अद्यत्विदानीं रजनीं पुत्र मा गच्छ सर्वथा।
एकाहं दर्शनेनापि साधु तावच्चराम्यहम्।।

(पुत्र, आइ तँ वन जयबाक बात एकदम्मे छोड़ि दिअऽ। एक्के दिन सँही, अहाँकेँ अपना लग देखि हम अपनाकेँ जीवऽ आ चलऽयोग्य बुझब।)

दशरथ असलमे चाहैत छथि जे राम सर्वदाक हेतु वनवासक बाते छोड़ि देथि। ई बात हुनका सदिखन अखरैत छनि जे क्रूरकर्मा कैकेयी ई सभटा झंझट ठाढ़ कऽ देलक अछि। रामकेँ ओ एते धरि कहि दैत छथि जे अपन पत्नीक कुतंत्रमे फँसिकऽ एहन गलती काज करक अपराधमे हुनका बन्दी बना लेथि आ अपन स्वत्वक आधारपर राजसिंहासनपर बैसि जाथि। अपन पिताक मानसिक विक्षोभकेँ बुझिकऽ, जे अपना ढंगसँ न्यायसम्मतं तँ अछिए, राम कहैत छथि :

प्राप्स्यामि यानद्य गुणान् को मे श्वस्तान प्रदास्यति।
अपक्रमणमेवातः सर्वकामैरहं — वृणे।।

(आइ वन जयबासँ जे हमरा सत्कर्मक फल भेटत, तकरा काल्हि के दऽ सकैत अछि पिताजी? तेँ अपन सभ सुख-सुविधा आ मनोकामनाकेँ छोड़िकऽ हम सही मार्गपर जयबाक आइए उपक्रम आरंभ करऽ चाहब।)

दोसर शब्दमे, राम एहि बातकेँ स्पष्ट करऽ चाहैत छथि जे कर्तव्य-कर्ममे विलंब होयबासँ कर्तव्यक भावने निरस्त भऽ जाइत छैक। मुदा, रामक मनमे पिताक प्रति अनादरक भावना एकदम्मे नहि छनि। अत्यंत गौरवक संग ओ अपन पितासँ अनुरोध करैत छथि जे एहि क्षणिक दुःखसँ ओ अपनाकेँ विक्षुब्ध नहि करथि। अपना दिससँ राम आश्वासन दैत छथिन जे एहिसँ हुनका कोनो प्रकारक कष्ट नहि होयतनि आ वनवासक अवधि आरामसँ कटि जयतनि। पिताक आँखिसँ बहैत अश्रुधाराकेँ रोकक हेतु ओ बुझबैत छथि आ दुःख सहबाक हेतु बेर-बेर अनुरोध करैत छथि। अंतमे अपन सत्यसंघ पितासँ अनुरोध करैत छथि जे कैकेयीकेँ देल गेल वचनपर ओ अडिग रहथि आ अपन पुत्रक सुख-सुविधाक हेतु सत्यसँ समझौता नहि करथि। अपन बात समेटैत, राम एकटा आर्यवचनक उदाहरण दैत कहैत छथि—

'पिताहि दैवतं तात देवतानामपि स्मृतम्'

(स्मृति सभ कहैत अछि जे पिता तँ देवताक हेतु सेहो देवतुल्य छथि।)

ई सभ होइतो दशरथ अपन मनक समाधान नहि कऽ पवैत छथि। सुमंत्र आ वशिष्ठ दशरथक सोझेमे कैकेयीक भर्त्सना करैत छथि आ कठोर वचन कहि हुनकर निन्दा करैत छथि। तथापि कैकेयीक मन पाथर वनले रहैत अछि। राम, सीता आ लक्ष्मणक हेतु ओ वल्कल वस्त्र आनिकऽ हुनका सभकेँ पहिरऽ कहैत छथिन। पारस्परिक वाद-विवाद, वैषम्य आ संघर्षक एहि संवेदनशील प्रसंगक वर्णन करैत काल वाल्मीकि प्रवर्तन, आवर्तन, प्रत्यावर्तन आदि कतोक मनोवृत्तिक जीवन्त चित्र प्रस्तुत कऽ आख्यान कलाकेँ पराकाष्ठा धरि पहुँचा दैत छथि। विभिन्न पात्रक बीच एहि अवसरपर जे वाद, प्रतिवाद आ संवाद होइत छैक ओ एते संयत आ संतुलित अछि जे एहिमेसँ कोनो पात्र कोनो दोसर पात्रक एक्कोटा बात जीवन भरि कहियो विसरि नहि सकैत अछि आ वाल्मीकिक सभ पाठक तँ सभक वात सभ दिन मोने राखत।

भरतक एहि अवसरपर अनुपस्थिति सभकेँ वेर-वेर हुनक स्मरण करवैत छैक। जँ ओ एहि अवसरपर अयोध्यामे रहितथि तँ ई सभ नहि होइतैक, राजमर्यादा आ पारिवारिक प्रतिष्ठाकेँ एहि प्रकारेँ क्षति नहि होइतैक। मुदा विधिक विडंवना छैक जे दशरथ सभ किछु जनितो, जानि ने किएक, भरतक अनुपस्थितिमे अगुताकऽ ई सभ योजना बना लेलनि। हुनका मनमे किछु रहनि आ विधिक विधान किछु आर छलनि। भरतक अयोध्या घुरि अयबाधरि रामकेँ थम्हक हेतु कैकेयी सेहो तैयार नहि छलीह। वास्तवमे राम भरतक आगमन धरि थम्हक हेतु तैयार रहथि आ भरतक राज्याभिषेक अपन सोझेमे करा तखन वन जाय चाहैत रहथि। मुदा जखन रामक ई प्रस्ताव कैकेयीकेँ नीक नहि लगलनि तँ राम तुरंत निर्णय कयलनि जे हुनक इच्छानुसार तत्क्षणहि ओ वन-गमन करथि। माता कौशल्यासँ आशीर्वाद लेबाक समय मात्र ओ कैकेयीसँ मंगने छलथिन। एहि नीरव गतिशीलताक पाछू जे मनोभूमि छल, ओकरा वाल्मीकि अपन सांकेतिक भाषामे स्पष्ट कऽ दैत छथि।

राजा, राज्य आ राजपरिवार तीनू, जखन सभसँ पैघ अनर्थ भऽ जाइत अछि आ भरत अयोध्या घुरि अबैत छथि तँ रामक वनवासोसँ अधिक विस्फोटक संघर्ष, दोसर संकटक कारण बनैत अछि। वाल्मीकि एहि परिस्थितिकेँ सृजनशील कल्पनाक बलेँ सम्हारैत छथि। भरतकेँ अयोध्या पहुँचऽ धरि एहि बातक एकदम्मे पता नहि छलनि जे ओतऽ एहि बीचमे की की भेलैक। संदेशवाहक सभकेँ एहि संबंधमे किछु कहबाक अनुमति नहि रहैक। भरतकेँ मात्र एतवे समाद पठाओल गेल रहनि जे ओ तत्काल अयोध्याक लेल प्रस्थान करथि आ एकटा शुभ समय हुनक प्रतीक्षा

कऽ रहल छनि। मुदा, भरतक अंतश्चेतनामे एहि बातक आभास भऽ रहल छलनि जे कत्तहु किछु अवांछनीय घटना घटल अछि। कैकेयी अंततः हुनका अयोध्या पहुँचलापर एक-एकटा दुर्भर समाचार बेराबेरी सुनबैत छथिन तँ भरतक अनुमान सही भऽ जाइत छनि।

पिताक आकस्मिक निधन एवं राम, सीता ओ लक्ष्मणक वनवासक बात सुनि भरत मानसिक आ शारीरिक रूपेँ हताश भऽ भूमिपर खसि पड़ैत छथि। ओमहर कैकेयी हुनकासँ ई अपेक्षा कऽ रहल रहथि जे ई अपूर्व अवसर पाबि हुनकर बेटा हुनक आनंदमे सहभागी बनथिन। माता आ पुत्रक बीच चिंतन-स्तरपर जे अंतर अछि, तकरा वाल्मीकि एते सुस्पष्ट आ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत कैरत छथि जाहिसँ भावात्मक संतुलन, सत्य आ धर्मक बीच समन्वयकेँ सेहो सुनिश्चित कयल जा सकय। अपन स्वार्थसिद्धिक हेतु कैकेयी सत्यक अंधानुसरण कैरत छथि आ दशरथ अपन आखिरी साँस धरि धर्मक प्रबल समर्थन कयलनि, जकरा आगू बढ़यबाक दृढ़ संकल्प हुनक सुयोग्य पुत्र भरत आब कयलनि अछि। कैकेयीक अपेक्षाक एकदम विपरीत, भरत हुनकर कूटयोजनाक एकदम खंड कऽ हुनका संग अपन सभ संबंध ओहिना त्यागि दैत छथि जेना ओ स्वार्थक वशीभूत अपन पति, परिवार, समाज, राज्य आ मानव जातिसँ अपन संबंध तोड़ि लेलनि अछि। क्रोधक आवेशमे (जेना कि भरत सन व्यक्तिक हेतु ओहि दशामे स्वाभाविक अछि, स्वभावसँ चाहे ओ जते संतुलित होथि) भरत अपन मायकेँ कोनो गप्प करऽसँ मना कऽ दैत छथिन आ अपनो हुनकासँ कोनो गप्प नहि कैरत छथि (न तेऽहं अभिभाष्योस्मि)। माय बेटाक बीच संवाद-सूत्र कटि जाइत अछि। स्पष्ट शब्दमे सभक सोझेमे एहि बातक घोषणा भरत कऽ दैत छथि जे ओ अपन माइक कुटिल योजनाकेँ कार्यान्वित नहि होअऽ देताह, एकर विपरीत ओ रामकेँ अयोध्या घुराकऽ लौताह आ हुनका सिंहासनपर बैसौताह। ओ इहो कहैत छथि जे जँ आवश्यक भेल तँ ओ रामक वदला अपने वनवास स्वीकार करताह आ रामसँ राज-काज चलयबाक अनुरोध करताह। राजमहलमे अथवा महलसँ बाहरो कियो सोचनहुँ नहि होयत जे भरत अपन माइक विरुद्ध एते तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करताह। रामकेँ मुदा बुझल छनि जे एहन बात भऽ सकैत छैक। दशरथकेँ सेहो संभवतः एहि प्रकारक संभावनाक आशंका छलनि। इएह कारण छल जे दशरथ रामकेँ एक दिनक लेल रोकऽ चाहैत रहथिन आ ताही कारणे राम सेहो अविलंब अयोध्या छोड़ऽ चाहैत रहथि। मुदा जहाँ धरि दोसर लोकक प्रश्न छैक, ताहिमेसँ अत्यंत आत्मीय लोक सभ सेहो भरतकेँ शंकाक दृष्टिसँ देखैत छलनि आ हुनकर आशयक संबंधमे सोझे प्रश्न सेहो करऽ लागल रहनि।

भरतक लेल एहि सभ विचित्र प्रश्नक उत्तर देब आ अनेक प्रकारक शंकाक समाधान करब एकटा कष्टकर अनुभव आ दारुण परीक्षण छल, जखन कि वास्तविकता ई छल जे ओ रामसँ भेट कऽ हुनका अयोध्या घुराकऽ आनक लेल राजी करय चित्रकूट जा रहल छलाह।

आश्चर्यक बात ई अछि जे संशय-शरक वर्षा निर्मल चित्त भरतपर सभसँ पहिने राजमाता कौशल्या दिसिसँ होइत छनि। हुनक आक्रमण एकदम सोझ आ निष्ठुर छनि। भरत मुदा एहि परिस्थितिक सामना अत्यंत विनम्रता, आदर आ सम्मानक संग कयलनि, कारण एकटा माइक हृदयक दर्द ओ नीक जकाँ बुझि सकल रहथि। कौशल्या सेहो अपन एहि गलतीकेँ तुरंत स्वीकारलनि आ भरतकेँ कंठ लगा आ वात्सल्यक अश्रुकणसँ हुनका अभिसिक्त कयलनि। रामकेँ घुरा आनक अभियानमे भरतकेँ एहि प्रकारक स्पष्टीकरण वशिष्ठ, भरद्वाज आ गुहकेँ सेहो देमऽ पड़लनि। भरतक पाछू विशाल सेना देखि हुनक भाइ लक्ष्मण सेहो शंकालु भऽ जाइत छथि। मुदा राम हुनका एके क्षणमे शांत कऽ दैत छथिन मात्र एतबे कहिकऽ जे जँ तोँ चाहऽ तँ भरतकेँ कहि तोरे राज्य दिआ दियहु।

चित्रकूटक शिखर सम्मेलन, जतऽ राम आ भरत अपन पिताक सदाशयताक ओटमे कैकेयीक देल आदेशक औचित्यपर विचार-विनिमय करऽ लगैत छथि, एकटा महत्तम काव्यखंड थिक, जकर तुलना विश्व साहित्यक कोनो उत्कृष्ट महाकाव्यक समतुल्य प्रसंग संग कैल जा सकैत अछि। अप्रतिम शालीनताक संग महाकवि वाल्मीकि द्वारा प्रस्तुत ई प्रसंग हुनक काव्यमर्यादा आओर कलात्मक आदर्शकेँ महोन्नत शिखरपर प्रतिष्ठित करैत अछि। सांस्कृतिक संवादक कुशल संयोजकक रूपमे वाल्मीकि एहि प्रसंगमे निर्वचनीय मौनकेँ अनिर्वचनीय वाग्मिताक रूप दऽ विश्व साहित्यमे वाक्संस्कृतिक एकटा आदर्श प्रस्तुत करैत छथि। पहिल दिन साँझमे जखन राम आ भरत सुसभ्य समाजक बीच बैसैत छथि तँ प्रत्येक व्यक्ति दुनू भाइक बीच होअऽबला संवाद सुनबाक हेतु उत्कंठाक संग प्रतीक्षा करैत अछि। भरत रामक सम्मुख प्रफुल्ल मुखमंडलक संग हुनकहि लग बैसैत छथि। मुदा हुनक ठोर बंद छनि। मौन अपन नीरवताकेँ तोड़क प्रयास तँ करैत अछि, मुदा सफल नहि भऽ पबैत अछि। एहिना सौंसे राति सभकेँ सोचैत-सोचैत बीति जाइत छनि (शोचतामेव रजनी दुःखेन व्यत्यवर्तत)।

अगिला दिन सबेरे संवाद आंरभ होइत अछि। ओ दिन भरतक छल (भारतीय दिवस) आ भरतक भाषा (भारतीय भाषा) रामकेँ बुझऽमे आबि जाइत छनि। दुनू

भाइक बीच जे वाद-विवाद होइत छनि, ओकर सभसँ पैघ खूबी ई छैक जे ओ सभटा अपन स्वत्वक समर्थन हेतु नहि, अपितु ओकर विपरीत सत्य आ धर्मक प्रति निष्ठाक भावनासँ अपन-अपन कर्तव्य निमाहक लेल छैक। दुनू भाइ एक दोसराक बातक समर्थन करैत छथि, मुदा अंतमे दुनूक बीचक मतभेद जहिनाक तहिना रहिते अछि। सहमति मात्र एही बातपर होइत अछि जे जे होअय, सत्य आ धर्मक प्रति जे निष्ठा दुनूकेँ छनि से पूर होयबाक चाही। अंततः रामक स्वर्णपादुका, जकरा भरत अपन भाइ रामक प्रतिनिधिक रूपमे स्वीकार कऽ हुनक वनवाससँ घुरि अयबा धरि राज-काज चलाबक हेतु सहमत होइत छथि, एहि मानस-मंथनक सर्वमान्य समाधान प्रस्तुत करैत अछि। ई संघर्ष दू टा स्वार्थ-रहित भाव-भूमिकाक बीचक अछि आ दुनू गोटे अपन अपन मान्यतापर अंत धरि डटल रहैत छथि आ तकर बादे ई समाधान बहरायल जे जाधरि राम चौदह वर्षक वनवासक अवधि बिता अयोध्या नहि घुरैत छथि ता इएह व्यवस्था बनल रहत।

वाल्मीकिक काव्य-सुषमा हुनक कृति 'रामायण'क पंचम स्वर 'सुंदरकाण्ड'मे अपन उत्कृष्टतम स्थितिमे पहुँचि जाइत अछि। ई काव्यखण्ड साहित्यिक, सांस्कृतिक आ आध्यात्मिक तीनू दृष्टिकोणसँ वाल्मीकिक कारयित्री प्रतिभाक प्रांजलसँ प्रांजल अभिव्यंजनासँ अलंकृत उत्तम कला-खण्ड मानल जाइत अछि। क्रूर राक्षस सभसँ आवासित आ परिरक्षित दुर्गम्य या दुर्ज्ञेय भूखंडमे धरतीमाताक बेटी जानकीक हनुमान द्वारा सफलतापूर्वक संपन्न अन्वेषण वास्तवमे सौंदर्यमे सत्यक आ सत्यमे सौंदर्यक गहन अन्वेषण थिक। सीता जाहि सौंदर्यक प्रतिमूर्त्ति छथि, ओ ने मात्र शारीरिक थिक, अपितु आत्माक सौंदर्य ओहिमे ध्वन्यात्मक प्रतीक रूपमे समाविष्ट अछि। एहि सौंदर्य वैभवकेँ बुझक हेतु वाल्मीकि सौंदर्यराशि तथा सुन्दर सारिकाक बीचक विभेदक अंतरो प्रस्तुत करैत छथि। सीताक खोज करऽकाल हनुमानकेँ अनिवार्यतः रावणक अंतःपुरक चित्र-विचित्र सुन्दरी सभक अश्लील अंग-भंगिमाकेँ देखऽ पड़ैत छनि, किएक तँ हुनका ओही बाटसँ जाय पड़ैत छनि। सीताक एकांत सौंदर्यक आध्यात्मिक आभाकेँ सभसँ फराक देखयबाक हेतु वाल्मीकि शयनकक्षक स्वप्न सौंदर्यक विस्तारसँ वर्णन करैत छथि। अपन अन्वेषण कार्यमे आद्योपांत हनुमान जाहि अद्‌भुत संयम आ संतुलनकेँ बनौने रहैत छथि, तकरा अत्यंत सूक्ष्मतासँ महाकवि आलोकित कयलनि अछि।

सम्पूर्ण अंतःपुरक सर्वोत्तम सुन्दरी मंदोदरीकेँ देखि गौरी समान स्वर्णिम आभासँ सुशोभित हुनक आकृतिसँ प्रभावित हनुमान हुनके सीता बुझि क्षण भरिक

लेल प्रसन्नतासँ कूदि उठैत छथि। मुदा कनिए कालमे अपन विवेकक विकारपर पछताकऽ अपन गलतीक भान होइत छनि। ओ अपनाकेँ बुझबैत छथि जे रामक पतिप्राणा साध्वी सीता एना आरामसँ अंतःपुरमे नहि रहि सकैत छथि। तकर बाद तुरंत ओ अपन अन्वेषणक क्रमकेँ आगू बढ़ौलनि—वास्तविक लक्ष्यक सिद्धि हेतु। ओ अपन मनमे जानकीक एकटा मनोहर रूपक कल्पना कऽ लैत छथि—उन्नत नासिका, उज्ज्वल मंदहास, निर्मल दंत-पंक्ति, अक्षर शरीर, उत्फुल्ल नयन आ प्रसन्न मुखमंडल। एही लावण्य रेखाक खोजमे ओ आगू वढ़ैत छथि आ ओहि दर्शनीयक दर्शन करऽमे कृतकृत्य सेहो भऽ जाइत छथि।

परम सुन्दरी सीता जतऽ बैसलि सांत्वनाक स्वर वा आशाक किरणक सातुर प्रतीक्षामे छथि, ओहि ठाम धरि हनुमान कोना पहुँचि सकलाह, एकर वर्णन वाल्मीकि बड़ कुशलतासँ कयलनि अछि। एक-एक डेग आगू वढ़बैत, एक-एक वन-उपवन, लता-कुंज, निकुंज टपैत बीच-बीचमे झुरमुटक पाछू नुकाइत-नुकाइत एम्हर-ओम्हर तकैत आस्ते-आस्ते एकटा जलाशय लग पहुँचैत छथि, जाहिमे उपाक पहिल किरण प्रतिबिंबित अछि। हुनका लगैत छनि जे मैथिली जतऽ कत्तहु होथि, प्रभातक समय एहन रमणीय स्थानपर अवश्य अओतीह। अंतमे अशोकवाटिकामे गाछक बीचमे सीताक आभा देखना गेलनि। सीताक संदर्शन मात्रसँ हुनमान पुलकित भऽ गेलाह आ हुनक मन तत्काल राम लग पहुँचि जाइत छनि। आनंद आ आह्लादकेँ जगौनिहारि सीताक मंगलमय मूर्त्तिकेँ शब्दमे चित्रित करक हेतु रसशिल्पी वाल्मीकि जे-जे उपमा सभ प्रयोग करैत छथि, ओकर समता कोनो काव्यखंड आ कि प्राचीन साहित्यहुमे दुर्लभ अछि। किछु पाँती नमूनाक हेतु—

सीतां पद्मपलाशाक्षीं मन्मथस्य रतिं यथा।
इच्छां सर्वस्य जगतः पूर्णचंद्रप्रभामिव।।
भूमौ सुतनुमासीनां नियतामिव तापसीम्।
निःश्वास बहुलां भीरुं भुजगेन्द्रवधूमिव।।
शोकजालेन महता विततेन न राजतीम्।
संसक्तां धूमजालेन शिखामिव विभावसोः।।
तां स्मृतीमिव संदिग्धां ऋद्धिं निपतितामिव।
विहतामिव च श्रद्धां आशां प्रतिहतामिव।।
सोपसर्गां यथा सिद्धिं बुद्धिं सकलुषमिव।
अभूतेनापवादेन कीर्तिं निपतितामिव।।

आम्नायानामयोगेन विद्यां प्रशिथिलामिव।।
दुःखेन बुबुधे सीतां हनूमाननलंकृताम्।
संस्कारेण यथाहीनां वाचमर्थांतरंगताम्।।

(हनुमान सीताकेँ देखिकऽ अनुमानसँ हुनका ओही रूपमे बुझलनि, कारण हुनकर आँखि कमल आ पलास जकाँ विराजमान छल, ओ देखऽमे मन्मथक पत्नी रतिक समान छलीह, पूर्ण चन्द्रक प्रभा जकाँ ओ सौंसे संसारकेँ नीक लगनिहारि छथि, संयमसँ तपस्याक आचरण कयनिहारि सुंदर तपस्विनी जकाँ भूमिपर बैसलि छथि, नागराज पत्नी अर्थात् नागिन जकाँ भीरुताक कारणे बारंबार दीर्घश्वास छोड़ैत छथि, कोनो महान् शोकसँ व्याकुल होयबाक कारणे यथेष्ट शोभा नहि पाबि रहल छथि, धुआँसँ झपैल आगिक शिखाक समान छथि। संशयसँ आच्छन्न स्मृति, खसल ऋद्धि, खण्डित श्रद्धा, आहत आशा, बाधासँ अवरुद्ध सिद्धि, प्रदूषित बुद्धि, मिथ्या कलंकसँ भ्रष्ट भेल कीर्त्ति आ विभिन्न शाखाक समन्वयक अभावमे शिथिल पड़ल विद्याक समान सीताकेँ दयनीय दशामे देखिकऽ हनुमान विचारऽ लगलाह जे संस्कार सँ शून्य वाणी जाहि प्रकारे अपेक्षित अर्थकेँ छोड़ि अर्थांतर भऽ जाइछ! हनुमान अत्यंत मोश्किलसँ हुनका ठीक-ठीक चिन्हि गेलथिन।)

जखनेसँ हनुमान सीताकेँ देखिकऽ हुनका रामक योग्य पत्नीक रूपमे चिन्हि जाइत छथि, तखनेसँ हनुमानक मनमे प्रस्फुटित चिंतन-धाराकेँ वाल्मीकिक ऊर्जस्वित वाणी सक्षम अभिव्यंजना प्रदान करैत अछि। वाक्-संस्कृतिक प्रथित प्रवक्ता वाल्मीकि अपन कृति रामायणमे जतऽ कत्तहु अवसर भेटलनि अछि, एहि संस्कृतिक प्रसंगोचित व्याख्या करैत छथि। हुनकर लगभग सभ पात्र, सुपनेखा सन कम संस्कार सम्पन्न पात्र समेत, अभिव्यक्तिक कलामे कुशल अछि। प्रत्येक पात्र गप्प-सप्प करक ढंगेसँ चिन्हल जा सकैत अछि। किछु पात्रक विशिष्ट गुणकेँ रेखांकित करक हेतु वाल्मीकि हुनका लोकनिक सार्थक पदनाम वा उपनाम राखि लैत छथि—जेना सत्य पराक्रम (राम) लक्ष्मिवर्द्धन (लक्ष्मण), भ्रातृवत्सल (भरत), सत्यसंघ (दशरथ), मंत्र—कोविद (सुमंत्र), नित्यशंकित अथवा विपुल ग्रीव (सुग्रीव) तथा लोक रावण (रावण)।

वाल्मीकिकेँ किछु शब्द आ वाक्यांश विशेष प्रिय छनि आ हुनक करस्पर्श सँ एहि शब्द सभक अभिव्यंजनाक नव आयाम बनि जाइत अछि। उदाहरणार्थ 'प्रतिष्ठा' शब्दक प्रयोग रामायणक प्रेरणा-श्लोक आ प्रथम कविक प्रथम छंदक रूपमे विख्यात 'मा विषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः'बला श्लोकमे भेटैत अछि। एही शब्दक प्रयोग (क्रियाक रूपमे) बादमे सीता, राम आ लक्ष्मणकेँ गंगा

तटपर छोड़िकऽ वृद्ध दम्पति कौसल्या आ दशरथ लग घुरि अयलापर रामक तापस जीवनक व्याख्या करैत सुमंत्र कहैत छथिन। सुमंत्र कहैत छथि—'इदं हि चरितं लोके प्रतिष्ठास्यति शाश्वतम्' (ई चरित संसारमे सभ दिनक लेल लोक-प्रतिष्ठा प्राप्त करत)। एहि दुनू प्रसंगमे प्रयुक्त 'प्रतिष्ठा' शब्दक प्रयोगकेँ मिलाकऽ देखलासँ एकर प्रतिष्ठाक पता चलैत छैक। वाल्मीकिक शब्द-शिल्पक ई मात्र एकटा नमूना थिक।

वाल्मीकिक भाषा सरल आ सहज होइतो ओहिमे एकटा विशिष्ट गतिशीलता छैक, जे शब्द आ अर्थकेँ समेकित रूपेँ संग लऽ चलैत अछि। एहिसँ अभिव्यक्तिक काव्यात्मकता आ ताहिसँ निष्पन्न होअबला अनुभूतिक आपात रमणीयता सामान्य सँ सामान्य पाठकक हृदयकेँ आकृष्ट कऽ लैत अछि। एकटा उदाहरण पर्याप्त अछि। जखन हनुमान अपन संगी लोकनिकेँ सीताक संदर्शनक सुखद समाचार सुनबैत छथि तखने सभ वानर वीर मधुवनपर आक्रमण कऽ अपन आनंदोत्सव मनबऽ लगैत छथि। किष्किंधाक ई सभसँ मनोरम उपवन थिक। एहि उत्सवक वर्णनक किछु पाँती एना अछि—

ततश्चानुमताः सर्वे प्रहृष्टा काननौकसः।
मुदिताश्च ततस्ते च प्रनृत्यंति ततस्ततः।।
गायन्ति केचित् प्रहसन्ति केचित्।
नृत्यन्ति केचित् प्रणमन्ति केचित्।।
पतन्ति केचित् प्रचरन्ति केचित्।
प्लवन्ति केवित् प्रलपन्ति केचित्।।
परस्परं केचितदुपाश्रयन्ति।
परस्परं केचिद्तिबुवन्ति।।
द्रुमाद् द्रुमं केचिदभिद्रवन्ति।
क्षितौ नगाग्रान्निपतन्ति केचित्।।

(जहिना मधुवनमे स्वेच्छासँ मन बहलयबाक अनुमति भेटैत छैक, तहिना सभ वानर प्रकृत्या कानन-प्रेमी होयबाक कारणे अपन आंतरिक प्रसन्नता प्रकट करैत अपन-अपन स्थानपर ठाढ़ भऽकऽ नाचऽ, कुदऽ, उठऽ, खसऽ लगैत अछि। कियो गाबऽ लगैत अछि तँ कियो भभाकऽ हँसऽ लगैत अछि। कियो नाचऽ लगैत अछि तँ कियो हँसी-ठट्ठामे अपन संगीकेँ नमस्कार करऽ लगैत अछि। कियो गाछपर सँ खसि पड़ैत अछि तँ कियो नीचेमे स्वैर-विहार करऽ लगैत अछि। कियो ऊपरे-ऊपर हवामे उड़ऽ लगैत अछि तँ कियो उन्मत्त जकाँ निरर्थक प्रलाप करऽ

लगैत अछि। कियो दोसराकेँ संग लऽकऽ एकटा गाछपरसँ दोसर गाछपर कुदऽ लगैत अछि तँ कियो पहाड़परसँ जमीनपर खसि पड़ैत अछि)।

मानव-स्वभावक अतिरिक्त प्राकृतिक सौंदर्य, भौगोलिक भव्यता आ ऋतुचक्रक निरंतर गतिशीलताक वर्णन करऽमे वाल्मीकि अपन रससिद्धि आ सिद्धहस्तताक परिचय दैत छथि। गंगा नदीक वर्णन दूटा प्रसंगमे अबैत छैक—बालकांडमे जखन विश्वामित्र राम आ लक्ष्मणकेँ गंगा-अवतरणक कथा सुनबैत छथिन, आ फेर जखन सीता, राम आ लक्ष्मण वनवासक समय गंगा नदीकेँ पार करैत छथि। चित्रकूट पर्वतक आत्मोन्नत वातावरणक वर्णन सजीवताक संग प्रस्तुत कयल गेल अछि। अनसूया सीताकेँ विदा करऽकाल साँझक बदलैत पर्यावरण तथा सूर्यास्त आ निशारंभक सारगर्भित वर्णन करैत छथि। दंडक वनक दारुण भीषणताक प्रति सीताकेँ सतर्को करैत छथि। पंपा-सरोवर आ ओकर तटपर स्थिति मातंगवनक जे वर्णन शबरीक प्रसंगमे कयल गेल अछि, ताहिमे प्राकृतिक सौंदर्यक अतिरिक्त आर्ष महिला आ आध्यात्मिक गरिमाक पुट सेहो भेटैत अछि। वाल्मीकि जाहि ऋतु सभक वर्णन कयलनि अछि, ताहिमे वर्षा आ शरद्क वर्णन अत्यंत हृदयग्राही अछि, किएक तँ एहि वर्णन सभमे रामक मनोभूमिका सेहो प्रतिबिंबित छनि। राम आ लक्ष्मण दुनू गोटे प्रायः खगोलक किछु दृश्यक सांकेतिक उल्लेख करैत छथि। एहि संकेत सभक सही विश्लेषण कयल जाय तँ ज्योतिमंडलक गति-विधि सभपर वाल्मीकिक विचारधाराक पता लगौल जा सकैत अछि। ई अत्यंत रोचक अध्ययन होयत। उदाहरणार्थ, राम आ हुनक तीनू भाइक विवाह उत्तरफल्गुनी नक्षत्रमे संपन्न होइत अछि। राजर्षि जनकक अनुसारेँ जे अपने एहि मुहूर्तक निर्णय करैत छथि, ई नक्षत्र विवाहक हेतु अत्यंत शुभप्रद होइत अछि। तहिना रामक रण-यात्रा 'हस्त' नक्षत्रक दिन आरंभ होइत अछि आ ई नक्षत्र विजय-हेतु संधायक मानल जाइत अछि।

लंका दिसि प्रस्थान करैत काल बाटमे लक्ष्मण आकाश दिसि देखैत छथि आ एकदम सोझेमे विशाखा नक्षत्रक निरुपद्रव आ निर्मल कांति देखि कहैत छथि—ई नक्षत्र इक्ष्वाकुवंश हेतु परम कल्याणकारी अछि। रामायणमे एहन-एहन कतेक प्रसंग अछि, जकर अपन महत्त्व छैक। लगैछ जे परवर्ती रामकाव्य सभमे एहि संदर्भमे वाल्मीकिक नक्षत्र दर्शनपर विशेष ध्यान नहि देल गेल छैक।

सुंदरकांडमे चन्द्रमा अपने एकटा पात्र बनिकऽ अबैत अछि। जखन हनुमान लंकामे प्रवेश करैत छथि तँ पुबरिया द्वारिसँ पूर्णचंद्र अपन परिपूर्ण आभाक संग प्रवेश करैत अछि। एहन-सन बुझि पड़ैत अछि जे अपरिचित स्थानपर हनुमानकेँ

पहुँचलापर हुनक मार्गदर्शन करा सहायताक उद्देश्यसँ चन्द्रमाकेँ पठाओल गेल हो। एहि सहायताकेँ वाल्मीकि साचिव्यक संज्ञा दऽ एहि दैवी आयोग दिसि हल्लुक सन संकेत करैत छथि। चन्द्रोदयक वर्णन जाहि प्रकारेँ वाल्मीकि प्रस्तुत करैत छथि से ओ एकटा खगोलीय घटना नहि भऽकऽ ओहिसँ अधिक भावगर्भित बुझि पड़ैत छैक। ओ कहैत छथि जे पूर्णिमाक परिपूर्ण शोभासँ प्रकट कलाधरक कांतिसँ रातुक अन्हार तँ हँटि जाइत अछि, मुदा संगहि नरभक्षी राक्षस सभक कुत्सित चेष्टाक मलिनता सेहो धोआ जाइत अछि। एकर संगहि संग क्षणभंगुर सांसारिक विषय-वासनामे संलग्न कामिनी-कामी सभक मनमे सेहो दिव्यलोकक दिव्य तेजस्विता प्रविष्ट भऽकऽ ओकरा लोकनिक अंतरंगकेँ पवित्र बनबैत अछि। एहन-सन बुझि पड़ैत छैक जे प्रेमक प्रतिमूर्त्ति रामक पवित्र हृदयसँ एकटा सुखद समीर लंकामे प्रवेश कऽ गेल अछि, जाहिसँ ई भूमि पावन बनि सकय।

महाकाव्यक महती विचारधारासँ मंडित एहि प्रकारक प्रसंग रामायणमे सभ ठाम भेटैछ—करीब-करीब सभ कांडमे। एहि सभ प्रसंगमे वाल्मीकिक वाणी हुनक महाकाव्य-दर्शनक समर्थ संवाहिका बनिकऽ प्रत्यक्ष होइत अछि। शब्द-सृष्टि आ आर्ष-दृष्टिक बीच अनायास घटित ई सुंदर सामंजस्य वाल्मीकिक सभसँ पैघ विशेषता थिक, जे हुनका महती अनुभूति आ मंजुल अभिव्यंजनासँ युक्त काव्यर्पि बना दैत अछि।

7

संदेश

कोनो महाकविक हेतु माध्यम आ संदेश समान रूपेँ महत्त्वपूर्ण होइत अछि आ वाल्मीकि दुनूक प्रति पूरा न्याय कयलनि अछि। कलाक कोनो अभिव्यंजना अपनाकेँ तखने अधिक शक्तिशाली ढंगसँ अभिव्यक्त कऽ पबैत अछि जखन कलाकार एहि प्रक्रियासँ असंसक्त रहैत अछि। एही प्रकारेँ वास्तविक वस्तु तत्त्वक संप्रेषण व्यापक स्तरपर तखनहि विस्तार प्राप्त करैत अछि जखन ओ चिंतन प्रधान नहि भऽ कऽ 'चित्प्रसूत' हो। वाल्मीकिक संग बिल्कुल इएह भेल। ओ कहियो सोचनहुँ ने होयताह जे कोनो निष्ठुर व्याधक निर्मम प्रहारसँ आहत क्रौंच-मिथुनक वियोगसँ पीड़ित हुनक सदय हृदय प्रेम आ करुणा सन मौलिक मानवमूल्यक अभिवृद्धि कयनिहार कालजयी काव्यकृतिक रूप धारण कऽ लेत। मुदा हुनका अपनो आश्चर्य भेल होयतनि जे ई कृति विश्वसाहित्यक प्रशस्त काव्य सभमे गौरवपूर्ण प्रस्थान-बिन्दु बनल आ ओकर विश्वव्यापी संदेश सार्वकालिक ओ सर्वजनीन बनि गेल।

मानवताक निर्माण आ संहारक परिहार रामायणक विषयवस्तुसँ बहरायवला दू टा प्रमुख तत्त्व छैक। एहि दुनू आधारभूत मानव-मूल्यकेँ अपन काव्यमे प्रतिपादित करक लेल वाल्मीकिकेँ तमसा नदीक प्रसन्न आ रमणीय जलधारा तथा क्रौंच मिथुनक परम दारुणिक वियोगसँ प्रेरणा भेटल छलनि। वाल्मीकि द्वारा प्रणीत एहि महाकाव्यक मूलमे इएह दुनू घटना आधार बनिकऽ ठाढ़ होइत अछि।

महाकाव्यक कलात्मक अभिव्यंजनामे सर्वप्रथम होयबाक कारणे वाल्मीकि कखनो उपदेशक अथवा शिक्षकक रूपमे अपन बात नहि कहैत छथि, अपितु अपन पात्र सभकेँ अपन प्रवक्ता बना दैत छथि। ओएह सभ अपन आचरण, शब्द आ विचारक माध्यमे अपन आ अपन कविक बात कहि दैत अछि। हुनको लोकनिकेँ आचरणक माध्यमे नीक लगैत छनि। कखनो-कखनो, एतऽ-ओतऽ किछु सामान्य तथ्य आ सैद्धांतिक सत्यक निरूपण पाओल जाइत अछि, मुदा ओ सभ घटनाक्रमसँ अपने बहराइत अछि। किछु आदर्श पात्र सभ छथि जेना राम, भरत,

लक्ष्मण, सीता, सुमित्रा, सुमंत्र, गुह, जटायु, शबरी, हनुमान आदि। ई सभ विभिन्न मानवीय गुणक आदर्श प्रस्तुत करैत छथि। हुनका लोकनिक आचरण देखि पाठक स्वयं सोचऽ लगैत अछि "हँ" आदर्श पुत्र एहने होयबाक चाही, पुत्रवत्सल पिता एहने होइत छथि, भाइक हेतु प्रेम, पत्नीक पतिभक्ति, स्त्रीक सेवा-भावना जे कहियो ककरो शिकायत नहि करैत अछि आ सदिखन दोसराक सहायता करऽमे तत्पर रहैत अछि। बुद्धिमान आ उत्साही परामर्शदाता, संकटमे संग देनिहार मित्र, सेवक जे अपन सुविधाक अपेक्षा स्वामीक सुरक्षापर अधिक ध्यान दैत अछि, संत-महात्मा जे परम पदकेँ छोड़िकऽ आर कोनो सुखक कामना नहि करैत छथि आ एकटा कर्मशील समर्थ व्यक्ति जे अपन कर्त्तव्यक पालन समर्पित भावनासँ आ निष्ठापूर्वक करैत अछि, एहि सभ आदर्शक प्रतिदर्श रामायणमे भेटैत अछि।

रामायण मुख्य रूपसँ एकटा पारिवारिक महाकाव्य थिक। एहि काव्यक मूल स्वर परिवार थिक, जे सामाजिक समरसता, मानव गौरव आ भ्रातृत्वक विराट भावनाक न्योँ थिक। एहिमे तीन प्रकारक भ्रातृ-युगल देखल जाइत छथि—राम आ भरत, बालि आ सुग्रीव तथा रावण आ विभीषण। तहिना तीन प्रकारक जीवन संगी छथि—राम आ सीता, बालि आ तारा तथा रावण आ मन्दोदरी। सीता-राम हृदय-संगमक आदर्श प्रतिरूप छथि। बालि आ तारामे समानता कम रहितो समरसता बराबरि छैक। रावण आ मन्दोदरीक आदर्शमे बहुत अंतर रहलोपर एक-दोसराक प्रति अनुराग, सद्भाव आ सदाशयमे कोनो कमी नहि छैक। सीता तारा आ मन्दोदरी तीनूमेसँ सीता सर्वाधिक पूजनीय छथि। ओना लौकिक दृष्टिसँ हुनके सभसँ बेशी पीड़ा सहन करऽ पड़लनि। तारा सभसँ अधिक सुखी रहलीह आ मन्दोदरीक स्वाभिमान सर्वोपरि छनि। हुनका लोकनिक स्वभाव, व्यवहार आ आदर्श संसारक समस्त स्त्री-पुरुषक लेल मार्गदर्शक सिद्ध भऽ सकैत अछि। ई विडंबनाक बात थिक जे सौंसे संसार सीता आ रामकेँ आदर्श दम्पति मानिकऽ हुनकर पूजा करैत अछि, मुदा हुनका सन दांपत्य जीवन ककरो स्वीकार्य नहि होयतैक। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे हुनकर दाम्पत्य जीवनमे मानवक सहनशीलताक कते उदात्त उन्नयन भऽ सकल अछि। पीड़ा सहऽसँ यदि लोककल्याण संभव छैक तँ सहनशीलता तपस्या बनि जाइत छैक। वाल्मीकि अपन कृति रामायणक माध्यमे मानव-जातिकेँ इएह संदेश देलनि अछि।

रामायण एहि सत्यकेँ सेहो प्रतिपादित करैत अछि जे मानसिक संतुलन बनौने रखबासँ पारिवारिक, सामाजिक आ राष्ट्रीय जन-जीवनकेँ घोर-विपत्तिसँ बचाओल जा सकैत अछि। कैकेयी अयोध्या आ राजपरिवारमे जाहि अनर्थक भीषण

ज्वाला भड़का देलनि, राम आ भरत तकरा अपन संयत संतुलनक बलेँ बचा देलनि। विभीषण अपन दूरदर्शितासँ लंकाकेँ पुनर्वासित करा देलनि। हनुमान अपन राजनीतिक विवेक आ गतिशील दृष्टिसँ किष्किंधामे न्याय आ व्यवस्थाकेँ पुनः स्थापित करा देलनि। जनक, दशरथ, भरत आ राम सन महान् शासक लोकनिक कार्यविधिसँ संसार भरिक प्रशासककेँ जनशक्ति-संचालन तथा मानवप्रबंधनक क्षेत्रमे मार्गदर्शन भेटि सकैत छैक। रावण आ बालि सन अकुशल शासकसँ आम जनताकेँ एहि बातक शिक्षा भेटि सकैत छैक जे अधलाह ढंगे बनाओल योजना आ उद्धत राजनीतिक प्रभाव कते हानिकारक भऽ सकैत अछि। एहि प्रकारेँ शांति आ समृद्धिक कर्त्ता-धर्त्ता लोकनिक हेतु रामायण मानव संसाधन विकासक मार्गदर्शिका बनि सकैत अछि।

रामायणक एकटा आर महत्त्वपूर्ण पक्ष छैक जे ओकरा प्रपंचक परिधिसँ ऊपर उठाकऽ एकटा उच्चतर मनोभूमिकापर प्रतिष्ठित करैत छैक। ई छैक आध्यात्मिक दृष्टिभंगिमा। लोकक ई विश्वास छैक जे वैदिक दृष्टि आ काव्यसृष्टिक क्षमता सँ संपन्न वाल्मीकिक मनीषा रामायणक माध्यमे वेदार्थक सार आ वैदिक शक्तिक वैभव मानव जाति धरि पहुँचौलनि अछि। सुन्दरकाण्ड सौंसे एहने महत्त्वपूर्ण अभिव्यंजनाक भण्डार थिक। रामकेँ अयोध्या घुराकऽ आनक हेतु जखन महान् ऋषि, सेनानी, माता सभ, भाइ-बंधु आ निष्ठावान नागरिक चित्रकूटमे एकत्रित होइत छथि तँ राम ओहि प्रबुद्ध वर्गकेँ सम्बोधित करैत शाश्वत मूल्यपर अपन अमूल्य विचार व्यक्त करैत छथि। ई उद्बोधन संक्षिप्त होइतो एहन प्रकारक विशिष्ट वाणीक एकटा उज्ज्वल नमूना प्रस्तुत करैत अछि। जे लोकनि एहि प्रकारक परिमार्जित वाग्-विभूतिक गँहीर धरि जाय चाहैत छथि, हुनका लोकनिक हेतु रामायण गहन अध्ययनक अक्षय भंडार थिक, कारण एहन-एहन प्रसंग एहि काव्यमे सर्वत्र पाओल जाइत अछि। वस्तुतः महर्षि वाल्मीकिक ई महाकाव्य असंख्य साहित्यसेवी लोकनिकेँ कते शतीसँ प्रेरणा प्रदान कऽ रहल अछि आ औखन ई वाक्संस्कृतिक आदर्श प्रतिमान अछि।

जनसाधारणक हेतु सेहो वाल्मीकि वाक्संस्कृतिक कते उदाहरण प्रस्तुत कऽ जीवनक दैनंदिन समस्याकेँ हल करऽमे एकर भूमिका बुझबैत छथि। वाल्मीकि अधिक काल वाक्यज्ञ, वाक्यविशारद, वाक्यकोविद, वाक्सारथी, वाक्विदांवर आदि शब्दक प्रयोग करैत छथि। दैनंदिन जीवनमे वाक्-संस्कारक भूमिकाकेँ स्पष्ट करब एकर उद्देश्य छैक। जँ लोक अपन विचार सही ढंगे व्यक्त करबाक हेतु समर्थ आ शालीन भाषाक प्रयोग करबाक कलामे निपुण हो तँ घरक, सामाजिक, राष्ट्रीय

आ भूमंडलीय समस्याक समाधान कयल जा सकैत अछि। परम पावनी सीता प्रसंगवश रावणसँ पुछैत छथि, की तोरा ओतऽ तोरा सही रस्ता देखौनिहार कियो सज्जन नहि छौक? आ जँ छौक तँ तोँ ओकर सभक बातपर ध्यान नहि दऽ रहल छैँ। ई एकटा शाश्वत प्रश्न थिक, जाहिपर सभ उत्तरदायी व्यक्तिकेँ विचार करक चाही आ ई मानिकऽ जे प्रश्न हुनकेसँ पुछल जा रहल छनि, एकर उत्तर सेहो हुनके ताकक छनि। एहि प्रकारेँ वाल्मीकि रामायणमे वाक्संस्कृतिक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान देल गेल छैक।

ओना देखल जाय तँ रामायणमे दू प्रकारक प्रमुख संस्कृतिकेँ प्रस्तुत कयल गेल अछि। एकटा छैक संग्रह आ उपभोगक संस्कृति आ दोसर छैक संयम आ निग्रहक संस्कृति। पहिल प्रकारक संस्कृति रावण अपनौलक आ दोसर प्रकारक संस्कृतिक उन्नायक रहथि दशरथ। तँहि एकरा दशमुख संस्कृति आ दशरथ-संस्कृतिक संज्ञा देल जा सकैत अछि। दशमुख अपन दसो मुँह पसारि सभ किछु अपनहि हेतु पाबऽ चाहैत अछि, जखन की दशरथ अपन दसो इंद्रियकेँ संयत राखि सही दिशामे चलैत छथि। एमहर-ओमहर बौएबाक कोनो गुंजाइश नहि छैक। परस्पर विरोधी एहि संस्कृतिक संघर्षेसँ सभ समस्या उत्पन्न होइत अछि आ विश्व शांतिकेँ संकट भऽ जाइत छैक। लंका, किष्किंधा आ अयोध्यामे एही समस्याक तीनटा आयाम देखऽमे अबैत अछि आ तीनू दशामे राम, भरत, सुग्रीव, आ विभीषण सन संस्कारी व्यक्ति सभ संतुलन बनौने रखैत छथि आ जनजीवनकेँ संकटसँ बचबैत छथि। ई सांस्कृतिक संकट मानव-जातिक सुरक्षा आ संपन्नताक लेल मात्र समस्ये नहि, अपितु चेतौनी बनि जाइत अछि। रामायण एकर समाधान प्रस्तुत करैत अछि।

रामायणमे आओरो अनेक संस्कृतिक समावेश छैक—वेद संस्कृतिसँ गीध संस्कृति धरिक। मुदा आश्चर्यक बात ई थिक जे वाल्मीकिक स्पर्श पाबि गीध (जटायु एवं संपाति) सेहो निःस्वार्थ सेवा-भावना आ त्याग-बुद्धिक उच्चतम स्तर धरि पहुँचि जाइत अछि। मानव-संस्कृतिक अतिरिक्त महर्षि वाल्मीकि प्रकृति-संस्कृतिक संवर्धन कयलनि अछि। आकाश, वायु, अग्नि, जल आ पृथ्वी—ई पाँचो तत्त्व मूर्त रूप धऽ रामायणमे प्रत्यक्ष होइत अछि।

इक्ष्वाकुवंशक राजा सूर्यवंशक छथि आ सूर्य युद्धभूमिमे रामक सोझाँ प्रकट भऽ रामकेँ विजयी बनबैत छथि। सुग्रीवकेँ सूर्यक पुत्र आ बालिकेँ इंद्रक पुत्रक रूपमे देखाओल गेल अछि। हनुमानक जन्म वायु देवताक संतानक रूपमे होइत अछि। अग्नि देवता सीताक अग्निपरीक्षाक अवसरपर राम तथा आओरो अन्य कते

देवताक सोझाँ प्रकट भऽ सीताक पवित्रताकेँ प्रमाणित करैत छथि। समुद्र मनुष्यक रूप-धारण कऽ रामक सोझाँ प्रकट होइत छथि आ अपन विवशताक हेतु हुनकासँ क्षमा मँगैत छथि, संगहि अपने ओ पार करबाक उपाय बुझबैत छथि। सीता तँ धरती माताक बेटी छथि, धरतीसँ जन्म लैत छथि आ अंतमे धरतीमे लीन भऽ जाइत छथि। एहि प्रकारेँ वाल्मीकि एहि पाँचो तत्त्वकेँ अपन कृतिक पात्र बना दैत छथि—दृश्य आ अदृश्य दुनू प्रकारेँ अपन काव्यात्मक कल्पनासँ प्रकृतिक ई मानवीकरण करऽमे कविक आशय ई छनि जे पुरुष आ प्रकृति पारस्परिक प्रतीकात्मक संपर्कक महत्त्वकेँ हुनक पाठक बुझि सकय।

मानव जातिक हेतु रामायणक संदेश बहुमुखी छैक। कोनो दृष्टिसँ देखी, ई प्रशस्त कृति संसारकेँ बहुत-किछु दऽ सकैत अछि, बहुत-किछु कहि सकैत अछि। नर-नारी, पशु-पक्षी आ समस्त जीवराशिकेँ एहि अमोघ रचनासँ जते अपेक्षा भऽ सकैत छैक, ताहूसँ अधिक कहबाक हेतु पर्याप्त भंडार एहिमे छैक।

ग्रंथ-सूची

1. *श्रीमद्वाल्मीकि रामायण* : (मूल पाठ) गीता प्रेस, संवत् 2020
2. *स्टडीज इन वाल्मीकीज़ रामायण* : जी.एस. अल्तेकर, भंडारकर ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट, पूना 1987
3. *रामकथा* : फादर कामिल बुल्के, हिन्दी परिषद् प्रकाशन, प्रयाग, 1962
4. *द रामायण पालिटी* : पी.सी. धर्मा, भारतीय विद्या भवन, बंबइ, 1989 (दोसर संस्करण)
5. *लेक्चर्स ऑन द रामायण* : राइट ऑनरबुल पी.एस. श्रीनिवास शास्त्री, एस. विश्वनाथन प्राइवेट लि. मद्रास (पहिल संस्करण 1949, परिशोधित सं. पुनर्मुद्रण 1977)
6. *रामभक्ति शाखा* : रामनिरंजन पाण्डेय, नव हिन्द पब्लिकेशन्स, हैदराबाद, 1960
7. *वाल्मीकिचरित्रम्* : रघुनाथ नायकुडु (1600-1631) संपादक : बिरुदु रामराजु, आंध्रप्रदेश साहित्य अकादमी, हैदरावाद।
8. *महर्षि वाल्मीकि* : चलसानि सुब्बा राव, मछलीपटनम्, 1988
9. *थाट्स ऑन रामायण* : आई. पांडुरंग राव, अक्षर भारती, कलकत्ता, 1992
10. *श्री रामायण तरंगिणी* : पी. हनुमज्जानकिराम शर्मा, नेल्लूट, 1987
11. *श्री रामायणदर्शनम्* : ओएह 1993
12. *रामकथा नवनीत* : आई. पांडुरंग राव, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1991
13. *विमेन इन वाल्मीकि* : आई. पांडुरंग राव, आंध्र महिला सभा, हैदराबाद 1978
14. *रामायण परमार्थम्* : आई. पांडुरंग राव, युव भारती, सिकंदरावाद, 1980, पुनर्मुद्रण : तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, 1985
15. *अनुदिन रामायणम्* : आई. पांडुरंग राव, तेलुगु विश्वविद्यालय, हैदराबाद, 1981
16. *षोडशी* : जी. शेषेन्द्र शर्मा, ज्ञानबाग पैलेस, हैदराबाद

Indian Institute of Advance
117577
16/12/04

आदिकविक रूपमे विश्व-विख्यात वाल्मीकि भारतीय साहित्यक ध्रुव नक्षत्र छथि। महान् काव्यर्पिक एकमात्र उपलब्ध कृति रामायण हुनका तँ चिर यशस्वी बनयबे कयलक, अपितु आर्षदृष्टि आ काव्य-सृष्टिक संश्लिष्ट समन्वयपर आधारित भारतीय वाङ्मयमे सृजनशील कृतित्वक एकटा स्थायी परम्पराकेँ उद्घाटित कयलक अछि।

ई परिचय-पुस्तिका एहि ऋषितुल्य कविक संदेशकेँ अनुस्वरित करिते अछि, जकरा ओ अपन पात्रसभ आ हुनका लोकनिक विचार उक्ति आ क्रियाक माध्यमसँ रमणीय शैलीमे संप्रेषित कयलनि अछि आ जे युग-युगधरि सारस्वत जगतक हेतु प्रेरणा आ मार्ग-दर्शनक अक्षय स्रोत सिद्ध होइत जा रहल अछि। एहि पोथीक सात अध्याय महामानव आ महाकविक रूपमे महर्षि वाल्मीकिकेँ अवगाहन करक हेतु एकटा गहन अंतर्दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि। अमर महाकाव्य 'रामायण'क प्रणेताक महान् मेधाकेँ बुझऽमे सहायक ई सुरम्य भूमिका मानवीय जिजीविषासँ संबंधित महाकविक भव्य दर्शन तथा एहि कालजयी कृतिक दार्शनिक आधारकेँ आरेखित करैत अछि। ई रेखा ता धरि अक्षुण्ण रहत, जाधरि प्रकृति आ पुरुषक आवश्यकता बनल रहतैक।

डॉ. इलपावुलूरि पाण्डुरंगराव तेलुगु, हिन्दी आ अंग्रेजीमे पचाससँ अधिक कृतिक यशस्वी प्रणेता आ ओजस्वी वक्ता छथि। तुलनात्मक भारतीय साहित्य ओ भारतीय दर्शन, विशेष रूपेँ भारतीय भाषा सभमे रामकथा साहित्यक ओ विशेष अध्ययन कयलनि अछि। विद्वान् लेखक देश-विदेशमे रामायणपर कतेको व्याख्यान देलनि अछि।

मैथिली अनुवादक *श्री अशोक* संगहि मैथिलीक अध्येता छथि, ज छनि। हिनका कथा, निबन्ध, समी छनि। रचनासभ कतेको पत्र-पत्रि अछि।

Library IIAS, Shimla
MT 891.202 092 V 245 R
00117577

ISBN 81-260-1889-5

मूल्य : पच्चीस टाका